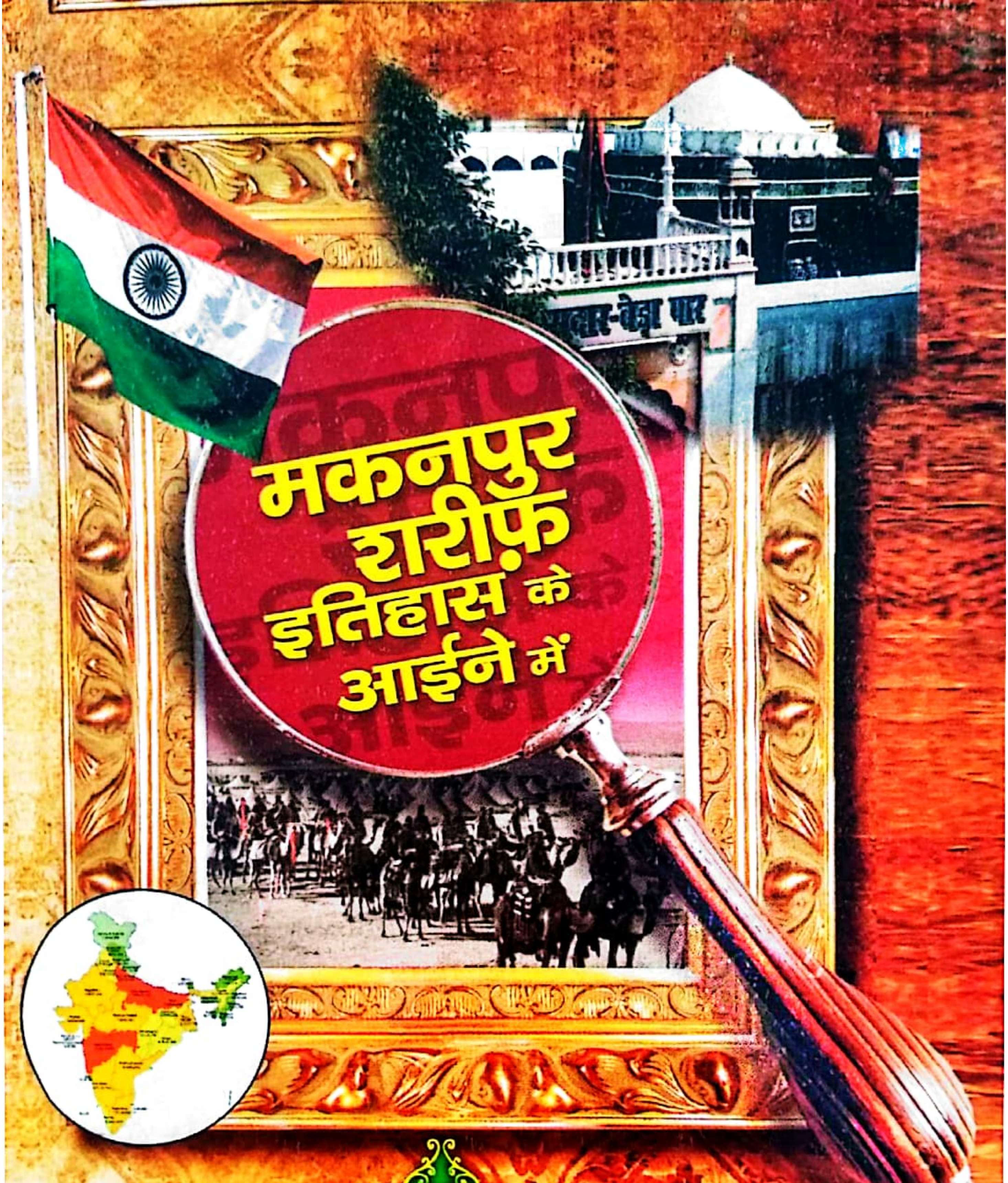

मकनपुर शरीफ़ इतिहास के आईने में

लेखक

सैय्यद साहिर हुसैन जाफ़री अल मदारी

मकनपुर शरीफ कानपुर नगर

उत्तर प्रदेश भारत

मोबाईल - 9198666807

دم مدار بیڑا پار

MADAARI MEDIA

The Silsila e Aaliya Madaariya Social Platform

سلسلۂ مداریہ کے بزرگوں کی سیرت و سوانح

سلسلۂ عالیہ مداریہ سے متعلق کتابیں

سلسلۂ مداریہ کے علماء کے مضامین تحریرات

سلسلۂ مداریہ کے شعراء اکرام کے کلام

حاصل کرنے کے لئے اس ویب سائیٹ پر جائیے

www.MadaariMedia.com

@MadaariMedia

@MadaariMedia

@MadaariMedia

@MadaariMedia

Authority : Ghulam Farid Haidari Madaari

दम मदार

बेड़ा पार

بسم الله الرحمن الرحيم

मकनपुर शरीफ़ इतिहास के आईने में

मकनपुर शरीफ़ की तारीखी हैसियत व हज़रत
सैय्यद बदी उद्दीन जिन्दा शाह मदार (रज़ि०)
की संक्षेप में सवाने हयात व मदारी मलंग
मदारी उलमा, शहज़ादगान मकनपुर शरीफ़
मदारिया सिलसिले के मुरीदीन द्वारा पेश की गयी
कुर्बानियों वग़ैरा का एक बेहतरीन मजमुआ

लेखक
सैय्यद साहिर हुसैन जाफ़री अलमदारी
मकनपुर शरीफ़, कानपुर नगर
उत्तर प्रदेश (भारत)

یہ کتاب Www.madaarimedia.Com سے ڈاؤن لوڈ کی گئی ہے

जुमला हुकूक़ ब हक़्क़े नाशिर महफ़ूज़

किताब का नाम	–	मकनपुर शरीफ़ इतिहास के आईने मे
लेख़क	–	सैय्यद साहिर हुसैन जाफ़री अल मदारी मकनपुर शरीफ़, कानपुर नगर उ0–प्र0 (भारत) पिन कोड – 209202
पुरूफ़ रीडिंग	–	मौलाना सैय्यद नूरूल अरफ़ात जाफ़री मदारी
सहयोगी	–	सैय्यद ज़फ़रूल इस्लाम जाफ़री अल मदारी सैय्यद मज़ाहिर हुसैन जाफ़री अल मदारी सैय्यद ग़ाज़ी शोयब जाफ़री अल मदारी सैय्यद नज़ायर हुसैन जाफ़री अल मदारी
प्रिन्टिंग	–	अल मदार ऑफसेट कानपुर
कीमत	–	100/–
तादाद	–	2000
प्रथम संस्करण	–	2016

शायाकर्दा

सैय्यद कामयाब हुसैन जाफ़री
सैय्यद आशकार हुसैन जाफ़री

किताब मिलने का पता

मदार बुक सेलर

मकनपुर शरीफ़

Scanned with CamScanner

फ़ेहरिस्त मज़ामीन

मज़ामीन	सफ़ा नम्बर
इन्तिसाब	5
मेरी राय	6
दिल की बात	8
मनक़बत	10
मनकबत	11
प्राचीन नज़री नक्शा दरगाह शरीफ़	12
मकनपुर शरीफ़ एक नज़र में	13
मकनपुर शरीफ़ की दस्तावेज़ी तारीख़	17
हज़रत सै० बदीउद्दीन ज़िन्दा शाह मदार (रज़ि०) का संक्षेप में जीवन परिचय	23
फ़रमान बाद शाह नूर उद्दीन जहाँगीर	26
फरमान	28
फ़रमान शहन शाह जलाल उद्दीन मो० अक़बर	29
भारत की पुरातात्विक सर्वे रिपोर्ट	31
कविता	36
मदारी मलंग और जंगे आज़ादी	38
तकियादार मलंग मजनू शाह मदारी	41
मलंग किसको कहते हैं	45
मदारिया सिलसिले से बैत जंगे अज़ादी के पठान मुजाहिदीन लश्कर	47
मकनपुर शरीफ़ और जंगे अज़ादी	49
सै० ख़ान आलम मिंया	51
सन् 1857 के बाद का मकनपुर शरीफ़	53
आज के मकनपुर की सर्वे रिपोर्ट	55
जहाँ सदियों से हिन्दु मुस्लिम एकता का परचम लहराता है	58
मेला मकनपुर शरीफ़ का इतिहास	60

Scanned with CamScanner

मेला अधिकारी व कर्मचारी वर्ग	67
नज़री नक्शा मेला मकनपुर	69
पुलिस प्रबन्ध	70
मदारे आज़म के मेले लगते है पुरी दुनिया में	70
उर्स हज़रत शाह मदार, हैदराबाद	74
मदार घाट का मेला	76
गुरू नानक का कथन	77
ह० सै० ख़्वाजा सा० से सै० मदारे पाक की मुलाकात	78
शंह शाहो व बाद शाहो की आमदे मकनपुर शरीफ़	78
शहज़ादा दारा शिकोह की हाज़री	80
पैदाईश से हिन्दुस्तान आमद तक	80
''मदार'' किसको कहते हैं ?	84
जब ॲन्धे को रौशनी मिल गई	85
ईसन नदी	86
सिलसिले मदरिया की प्रमुख हस्तियाँ	87
ह० सै० ख़्वाजा अबु मो० अरगून (रह०)	87
ह० सै० ख़्वाजा अबु तुराब फ़न्सूर (रह०)	87
ह० सै० ख़्वाज़ा अबुल हसन तैफूर (रह०)	88
ह० सै० जमाल उद्दीन जानेमन जन्नती (रह०)	88
ह० क़ाज़ी मुतहर कल्ला शेर (रह०)	89
ह० क़ाज़ी महमूद कन्तूरी (रह०)	89
हज़रत मीठे मदार (रह०) ह० दाउद पीर (रह०)	90
हज़रत यासीन शाह (रह०) व ग़ैरहुम	90-95
ह० सै० शाह मदार के सन्दर्भ में प्रचलित मुहावरे और लोक्तियाँ	96
मलंगान हज़रात में पड़े जाने वाले नारे व क़तात	99
देश-विदेश में मदार पाक के चिल्लागाह व दरगाहों की संक्षेप में सूची	100
जिन किताबों/तहरीरों/सर्वे रिपोर्ट से मदद ली गयी	104
मकनपुर शरीफ़ का तारीख़ी मोहर्रम	105
अन्तिम बात	111

Scanned with CamScanner

बिस्मिल्लाहिर्रहमान निर्रहिम

इन्तिसाब (समर्पित)

अपने वालिदे मोहतर्म अल्हाज सैय्यद ताहिर हुसैन जाफ़री अल–मदारी व वालिदा मोहतर्मा सैय्यदा तफ़सीर फ़ात्मा व शरीफुन्निशाँ जाफ़री अल–मदारी के नाम, जिनकी जूतियाँ सीधी करने का मुझे मौक़ा हासिल हुआ।

Scanned with CamScanner

मेरी राय

पेशे नज़र किताब ने दौरे हाज़िर मे पुरानी तारीख़ की ख़ूब याद ताज़ा करवाई है मेरे महदूद इल्म के मुताबिक मकनपुर शरीफ़ की तारीख़ पर शायद ये पहली किताब है और सरकार सैय्यदना मदारूल आलमीन (रज़ि0) के सवाने हयात पर इस फ़न में पहली तारीख़ी किताब है जो रईसुल तहरीर सैय्यद साहिर हुसैन जाफ़री वल्द सैय्यद ताहिर हुसैन जाफ़री (ख़ुल्द आशयानी) जानशीन बारगाह मदारूल आलमीन की बेहतरीन काविश है। मौसूफ़ ने जिस तर्ज़ तहरीर को पेश किया है वो यकीनन उन की रौशन ख़्याली और मकनपुर शरीफ़ से जंगे आज़ादी मे जिन बुजुर्गो ने कुर्बानियां पेश की उन की कुर्बानियों की तड़प ने कलम उठाने पर मजबूर कर दिया के अपने अस्लाफ़ की जाँबाज़ी को कलमबंद किया जाये ताकि आने वाली नसले अपने बुजुर्गो की शहादत व कुर्बानियों को समझ सके। ये किताब "मकनपुर शरीफ़ इतिहास के आईने में" आपके सामने हे जनाब मौसूफ़ ने बड़ी मेहनत से दूर दराज़ के कुतुब ख़ानों, लाईबरेरी, और सरकारी दफ़तरों से दस्तावेज़ जो सैकड़ो बरस पुराने थे, मौसूफ़ ने उनका मुताअला किया और उनमें से अहम अहम नोट्स को किताब में तहरीर किया कुछ शाहि फ़रमान जो मुग़ल बादशाहों व दीगर राजा महाराजाओं ने हुजुर सैय्यद मदारूल आलमीन की ख़िदमत में पेश किये थें उन फ़रमानों की नकल किताब के अंदर दर्ज की और जंगे आज़ादी में बाबा मजनूं शाह मलंग की कुर्बानियों को बड़ी तफसीलात से पेश किया, और मलंगों का भी बड़ा तफ़सीली ज़िक्र किया है मुख़तसर ये जनाब मौसूफ़ ने सबके

Scanned with CamScanner

ज़िक्र के साथ साथ अपने प्यारे आक़ा सैय्यदना ईमाम हुसैन (रज़ि0) की याद में शहादते इमाम हुसैन (रज़ि0) व मोहर्रम का भी जिक्र कर दिया अल्लाह तबारक व ताआला मौसूफ़ को लियाकतों से नवाज़े और इनके हौसलो को बुलंद करे बहर .हाल मौसूफ़ की ये काविश काबिले तारीफ़ है और इल्म व फ़न से मोहब्बत का पता देती है अल्लाह ताआला जनाब मौसूफ़ की इस काविश का बेहतरीन अर्ज़ बैनुल मुस्लेमीन कुबुलियत अता फ़रमायें।

दुआगोंः–

हज़रत मौलाना **सैय्यदना नुरूल अख़्यिार मियाँ** जाफ़री मदारी व हज़रत **सैय्यद असरूल इस्लाम** (असर मियाँ) जाफ़री मदारी

सज्जादगान व मोहतमिम दरबार मदारूल आलमीन मकनपुर शरीफ़।

Scanned with CamScanner

दिल की बात

मोहतर्म,

यह जो तारीख़ी किताब आपके पेशेनज़र है, इसको हज़रत सैय्यद बदीउद्दीन ज़िन्दाशाह मदार रज़ि अल्लाह ताआला अन्हों की मुझ ख़ाकसार पर ज़र्रानवाज़ी कहिए वरना मैं कहां और मेरी इल्मी विसात कहाँ कि मैं कोई किताब लिख सकूँ।

इस किताब को लिखने का ख़्याल दिल मे आया सोंचता था इस ऐतिहासिक धरती मकनपुर शरीफ़ की कुछ मुख्तसर तारीख़ पर मबनी कोई ऐसी किताब होना चाहिऐ जिसमे इस कसबे की तारीख़ी हैसियत निकल कर आये।
जंगे आज़ादी मे यहाँ के उलमा, सैय्यदो, मलंगो और मदारिया सिलसिले के मुरीदीन ने जो वतन परस्त मुजाहिद होने का कारनामा पेश किया है जिसको भारतीय इतिहास लिखने वालों ने न जाने क्यों नज़र अन्दाज़ कर दिया। यही सोच कर अपने बु.जुर्गों से इस बाबत मशवरा किया कुछ पुरानी तारीख़ों की कीताबों से हवालों को तलाश कर हवालो पर मबनी "मकनपुर शरीफ़ इतिहास के आईनें में" यह किताब लिखनें की जसारत की है।

मैं शुक्र गुज़ार हूँ अपने रहनुमा पीर–ए–तरीक़त अल्लामा व मौलाना अल्हाज सैय्यद नूरूल अखियार साहब जाफ़री अल–मदारी का जिन्हों ने इस किताब को लिखने मे मेरी रहनुमाई फ़रमाई और हौसला दिया जो एक मुश्किल काम था उसको आसान करने में मदद फ़रमाई। किताब लिखना बहुत एहम काम है हो सकता है कोई ग़लती हो गयी हो तो आप इसलाह फ़रमाऐं।

दुआओं का तालिब ख़ाक सार

सैय्यद साहिर हुसैन

जाफ़री अलमदारी

मो0–09198666807

Scanned with CamScanner

मनक़बत

कहा दममदार बाबा बेड़ा हुआ पार बाबा
सच्चे हैं मदार बाबा सच्चे है मदार बाबा
कहा दम मदार ----------

जम्मन जती जब हुई गये ज़िन्दा
कहन लगील यूँ बीबी नसीबा
बिटवा हमार दोनो करलो स्वीकार बाबा
सच्चे हैं मदार बाबा सच्चे है मदार बाबा
कहा दम मदार ----------

अरगूनी है फ़न्सूरी है और तैफूरी भी नूरी है
नूरी हो तुम और नूरी तुम्हारो घर वार बाबा
सच्चे हैं मदार बाबा सच्चे हैं मदार बाबा
कहा दम मदार ----------

चम–चम चमके तुम्हरो कलसवा
मह–मह महके तुम्हरो दलनवा
रिम झिम–रिम झिम वरसेदर पा अनवार बाबा
सच्चे हैं मदार बाबा–सच्चे हैं मदार बाबा
कहा दम मदार ----------

दुनिया में इज़्ज़त लाख है महज़र
आप के दर की ख़ाक है महज़र
आवत फरिश्ते हैं करने नमस्कार बाबा
सच्चे हैं मदार बाबा सच्चे हैं मदार बाबा
कहा दम मदार बाबा बेड़ा हुआ पार बाबा

– जनाब महज़र मकनपुरी

Scanned with CamScanner

मनक़बत

चमके चम–चम तोहरी नगरिया
कुतबे ज़मीनो ज़माँ

बाहर भीतर तोहरा रौज़ा सारे जग से न्यारा
फैला है चहु ओर झला झल बिना दिया उजियारा
चन्दा ताने है नूरी चदरिया कुतबे जमीनो जमॉ

गौस–ओ–कुत़ब अब्दाल की बगिया के तुम ही हो माली
तुम चितवो तो फूल हॅसे और झूमें डाली डाली
डोले ऐसे करम की बयरिया–कुतबे ज़मीनो ज़मॉ

अरगूनी हों फन्सूरी हों या हों वो तैफूरी
तोहरे घर का हलबी साजन बच्चा बच्चा नूरी
फैली जग मा है जिससे उजरिया–कुतबे ज़मीनो जमॉ

हाथ पसारे जग मॅगतो ने दूर कीहो मजबूरी
बीबी नसीबा की कर दीहो मनो कामना पूरी
कीजौ हम पे दया की नजरिया–कुतबे ज़मीनों ज़मॉ

अंधन आँखें बॉझन बेटा और कोढ़िन को काया
तोहरे दर पर आकर जिसने जो माँगा सो पाया
भर दो हमारे हो मन की गगरिया–कुतबे ज़मीनो ज़मॉ

– जनाब अदीब मकनपुरी

Scanned with CamScanner

प्राचीन नज़री नक्शा दरगाह शरीफ़ हज़रत सै. बदीउद्दीन ज़िन्दा शाह मदार (रज़ि.) मकनपुर शरीफ़

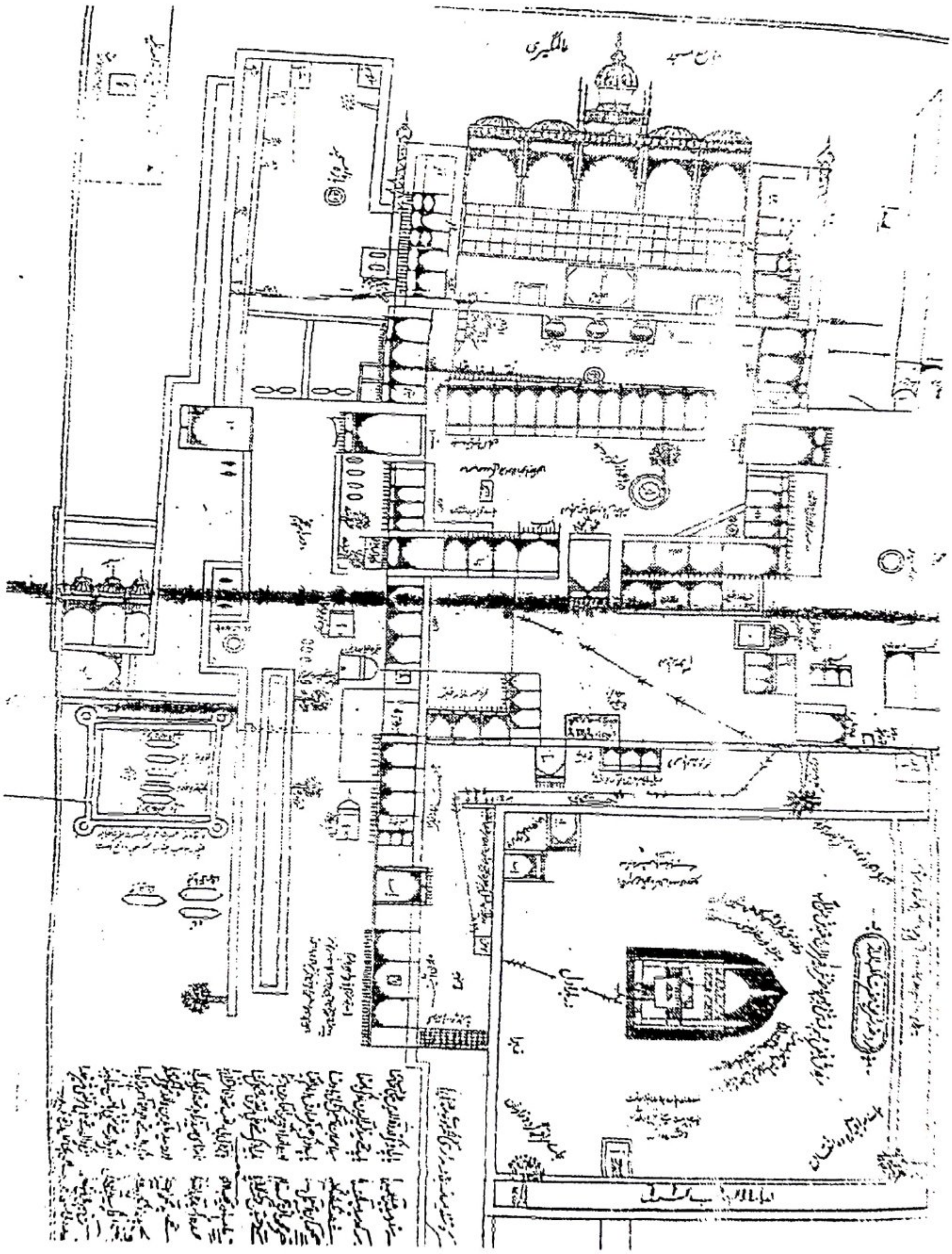

मज़ारशरीफ हजरत सैयद बदी उद्दीन
जिन्दा शाह मदार रजि० मकनपुर शरीफ

Scanned with CamScanner

दरगाह शरीफ हजरत सैयद बदी उद्दीन जिन्दा शाह मदार रजि०

Scanned with CamScanner

बिस्मिल्लाहिर्रहमान निर्रहीम

मकनपुर शरीफ़ एक नज़र में

किसी भी बअज़मत मुल्क़ की सही तारीख़ यही है कि उसकी छोटी–छोटी बस्तियों में यह खूबिंयाँ हों कि वह अपने मुल्क की अज़मतों की इस तरह हिफ़ाज़त करे कि दुनिया उनसे सबक़ ले। ऐसी ही तमाम .खूबिंयाँ उत्तर–प्रदेश के ज़िला कानपुर नगर की एक ऐतिहासिक बस्ती मकनपुर शरीफ़ में हैं। जहाँ पर हज़रत सैय्यद बदी उददीन ज़िन्दा शाह मदार रज़िअल्लाह ताला अन्हों की मज़ार शरीफ़ है और जिनके दरबारे आली में बिना किसी तफ़रीके मज़हब–ओ–मिल्लत जो व्यक्ति भी हाज़री देता है, वह अपने को बस एक मंगता के सिवा कुछ नही समझता वह जो चाहे किसी ज़ाति मज़हब–ओ–मिल्लत का हो एक ही साथ खड़ा दिखाई देता है। यहाँ से सिर्फ और सिर्फ अमन–ओ–इंसानियत का पैग़ाम सारी दुनिया को दिया जाता हैं।

कस्बा मकनपुर शरीफ़ कलान्तर में जो ख़ैराबाद के नाम से जाना जाता था। यह जी0 टी0 रोड पर कन्नौज से 20 कि0 मी0 पहले अरौल–मकनपुर रेलवे स्टेशन से 5 कि0 मी0 दक्षिण ईसन नदी के तट पर स्थित है। यह ऐतिहासिक कस्बा आज से लगभग 618 वर्ष पूर्व आबाद हुआ था। यह कस्बा क़ौमीं एकता का प्रतीक है। भग्नावशेष एवं प्राचीनं कब्रें आज भी इस कस्बे को प्राचीन समय की याद दिलाती हैं। दरगाह शरीफ़ की इमारत शर्किया दौर तथा मुग़लकाल में निर्मित हुई। दरगाह परिसर सात खण्डों में निर्मित हुआ है, इसका एक

Scanned with CamScanner

हिस्सा जिसे हरम शरीफ़ कहा जाता है उसे जौनपुर के बादशाह इब्राहीम शर्की ने सन् 1420 से 1424 ई0 में बनवाया। एक हिस्सा जिसे बारहदरी कहते हैं, उसे राजा भागवल ने तथा बाकी के पाँच खंण्ड मुगल बादशाहों ने बनवाये। आज हिन्दुस्तान में जितनी भी दरगाहें है, उसमे यह परिसर सबसे बड़ा व प्राचीन है।

दरगाह शरीफ़ मे प्रवेश हेतु सर्व प्रथम एक विशाल द्वार पड़ता है इस दरवाज़े से होकर अन्दर एक विशाल प्रॉगण है, जिसके दाहिने ओर के दरवाज़े में प्रवेश करने पर एक और प्रॉगण मिलता है, जिससे लगा हुआ हरमशरीफ़ (रौज़ा मुबारक) है। हरम शरीफ़ के दक्षिण में दालान व छोटे कमरें हैं तथा जहाँ पर टीन सेट पड़े हुए थे वहाँ पर नव निर्मित बरामदें हैं। जहॉ पर बसन्त पंचमीं के अवसर पर जलसा .कुल उर्स शरीफ़ के समय एवं वर्ष भर हर माह की 17वीं तारीख़ को तथा अन्य अवसरों पर जलसा पाक होता है। कहा जाता है कि सैय्यदना मदारूल आलमीन अपने जीवन काल में अपने शिष्यों के साथ इसी दालान में बैठ कर प्रवचन एवं गोष्ठी करते थे। इस भवन को जमियत ख़ाना कहते हैं, इसके पश्चिम में स्थित दरवाज़े को दारूल अमान कहते हैं। मुख्य द्वार के दक्षिण की ओर एक छोटी सी मस्जिद है और मुख्य द्वार के उत्तर में स्थित भवन को शहॅ जानी दालान कहते हैं क्यों कि इसका निर्माण बादशाह शाहजहॉ ने करवाया था। और इसके पश्चात फ़िर दुसरा भवन है जिसे " क़ाज़ी मुत्तहर दालान" कहा जाता है जों भॉवर शरीफ़ के निवासी काज़ी मुत्तहर के नाम पर इस भवन का नाम दिया गया है। जमियत ख़ाना के पूर्व में उत्तरी दरवाज़ा है जिस से एक अन्य दालान के लिए रास्ता है जो दतिया राज्य की महारानीं किदवन्ती की कामना पूर्ति पर इस

भवन का निर्माण यादगार के रूप में कराया था, यह दालान आईने वाला कहा जाता है। उत्तरी दरवाज़े के दक्षिण में एक प्राचीन पाकर का वृक्ष है जिसे पाकर दरबार कहते हैं, जिससे मिला हुआ .कुरान–ख़्वानी दालान है तथा उसके पास ही एक स्तम्भदीप है इसके अलावा प्रमुख भवनों में आलम गीरी मस्जिद भी उल्लेखनीय है, जिसका निर्माण औरंगज़ेब ने करवाया था। इस भवन की शैली अन्य भवनों से बिलकुल अलग है, तथा इसकी विशालता ही यह बताती है कि इसका निर्माण औरंगज़ेब जैसे शहनशाह ही करवा सकते हैं। यह भवन मुख्य द्वार से प्रवेश करने पर पश्चिम की ओर स्थित है। जिससे लगे हुए अनेक भवन जैसे – बारह दरी , दम्माल ख़ाना, नक्कार ख़ाना, साकर दरबार आदि। दम्माल ख़ाने के उत्तर की ओर बड़े द्वार के पास विशाल शाही कुआँ है। इसका निर्माण भी औरंगज़ेब ने करवाया था। दम्माल शरीफ़ मे इस समय दो बड़ी डेगें रखी हुई हैं। एक ताँबा की तथा दूसरी लोहे धातु की डेग है। उर्स के समय ताँबा की डेग में मीठी खीर पका कर दर्शनार्थियों में वितरित की जाती है। मकनपुर शरीफ़ मुग़ल कालीन बादशहों, राजाओं के आवागमन् का मुख्य केन्द्र रहा है।

1– बादशाह इब्राहिम शर्की – – – – — – – – – –1420 ई0
2– बादशाह जलाल उददीन मो0 अकबर – – – – 1565 ई0
3– शहनशाह सलीम – – – – – – – – – – – – –1570 ई0
4– बादशाह शहजहाँ – – – – – – – – – — – –1600 ई0
5– बादशाह आलमगीर (औरंगज़ेब) – – – – – – – 1664 ई0
6– राजा भगवल – – – – – – – – – – – – – – 1794 ई0

तथा इनके अलावा अनेको बादशाह व राजा यहाँ पर आते रहे हैं आज इस कस्बे मे वेश कीमती ऐतिहासिक वस्तुऐं जिसमें

Scanned with CamScanner

मुग़लिया दौर के परवाने, हुक्म नामें, खतूत तथा बादशाहों, राजाओं द्वारा भेंट किएगयें तोहफ़े जो अभी भी मौजूद हैं। वर्ष 1971 ई0 में मेला कमेटी मकनपुर शरीफ़ के प्रशासक कानपुर के तत्कालीन ज़िलाधीश जनाब एस0 एस0 सिद्दू ने मेला फ़न्ड से लेखक के पिता तत्कालीन मेला कमेटी के सदस्य, ग्राम प्रधान व मोहतमीम दरगाह अल्हाज सैय्यद ताहिर हुसैन जाफ़री अल–मदारी के ज़ेरे निगरानी दरगाह परिसर में एक "शोरूम" का निर्माण इस आश्य से कराया कि इन ऐतिहासिक धरहरो को बचाया जा सके। इसके अलावा मेला कमेटी द्वारा दो मुसाफ़िर ख़ाने, दरगाह में जलसे गाह के लिए बरामदा व मदार गेट वगैरा का भी मेला कमेटी द्वारा निर्माण कराया गया है।

मकनपुर शरीफ़ का गौराविन्त इतिहास अपने में एक आदर्श है यहाँ के सीधे–साधे मनुष्यों के विचार अन्य जगाहों के लिए अनुकरणीय आदर्श रहे हैं। यहाँ धर्म, जाति, मत, रंग, भाषा, सम्प्रदाय आदि के नाम पर खून की नदियाँ नहीं बहायी गई बल्कि एक ही आदम की सन्तानों की तरह समस्त विचारों के लोग फलते–फूलते रहे। विभिन्न विचारों के फूलों के पौधों को मदारे पाक की पवित्र भूमि पर समान खाद मिलती रही। सभी धर्मो के प्रति समान आदरभाव रहा है। जिससे सम्प्रदायीक सौहार्द व्यवाहर की वस्तु बनी है। इसके उदाहरण मदार पाक की बारगाह में आने पर गंगा–जमुनी तहज़ीब देख कर मिलती है।

ईसन नदी के तट पर मदार पाक के संरक्षण में बसा मकनपुर शरीफ़ इसका साक्षात प्रमाण है। यहॉ पर प्रति वर्ष एशिया के दो प्राचीन और भव्य मेले लगते हैं, जों कौमी एकता की मिसाल बने हुए हैं। एक मेला जो हिन्दी कलेन्डर केनुसार

Scanned with CamScanner

माघ माह मे लगता है जिसका मुख्य पर्व बसन्त पंचमीं है जो हिन्दु आस्थाका प्रतीक है। दूसरा बड़ा मेला जो उर्स शरीफ़ के रूप में अरबी कलेन्डर के अनुसार जमादिउल अव्वल के महीने में होता है जिसे सारी दुनियाँ मदार के चाँद के नाम से भी जानती है। जो मुस्लिम आस्था का प्रतीक है।

बसंत पंचमीं के दिन सभी धर्मो के लोग भेद भाव को भुला कर दरगाह शरीफ़ में चादर चढ़ाकर एवं यहीं की दुआओं से जन्में बच्चों के हज़ारो की संख्या में मुंण्डन करवा कर अपने को भाग्यशाली समझते हैं। यहाँ आकर साम्प्रदायिक भेदभाव के विचार ऊषा के आगमन के समय अंधकार जैसे विलोपित हो जाता है।

मकनपुर शरीफ़ की दस्तावेज़ी तारीख़

मकनपुर शरीफ़ की इस दस्तावेज़ी तारीख़ में अल्हाज मौलाना सैय्यद मोहम्मद गुलाम सिब्तैन साहब (रह0 अलैह) मेला मैग्ज़ीन वर्ष 1971 ई0 में तहरीर फ़रमाते हैं–

सूबा कन्नौज– मे मकनपुर प्राचीन काल में था। जो दिल्ली सरकार का प्रसिद्ध सूबा था जिसे इब्राहिम शर्की जौन पुरी ने सन् 1414 ई0 में मोहम्मद तुगलक के भतीजे इक़बाल ख़ाँ को परास्त करके अपने राज्य में मिला लिया था। इसके पूर्व ही सन् 1398 में हज़रत ज़िन्दा शाह मदार इस स्थान पर विराजमान हुए थे, जो उस समय आबाद नहीं था। आप के साथ आपके ख़लीफ़ा अधिक संख्या में मौजूद थे। हज़रत शाह मदार अपने लिए ऐसा ही स्थान पसन्द करते थे जो आबाद न हो इस लिए आज भी जहाँ–जहाँ आपके विराजमान होनें के

चिन्ह हैं, उन्हें चिल्ला कहा जाता है, वह आबादी से दूर हैं। यह और बात कि उनमें से कुछ चिल्ले आबादी बढ़ने के कारण अब आबादी में आ गये हैं, लेकिन अधिकॉश आपके विराजमान होने के स्थान आबादी से दूर हैं। हज़रत मदार साहब ने इस भूमि को जिस पर मकनपुर बस्ती आबाद है ढूँढ कर अपने रहने का अन्तिम स्थान बनाया था। इस स्थान पर आपने 20 वर्ष 6 माह और 4 दिन व्यतीत किये और आस पास के रहने वालों को प्रेम और एकता की शिक्षा दी। 838 हि0 ब मुताबिक सन् 1418 ई0 में आपका देहान्त इसी स्थान पर हुआ।

इब्राहिम शर्की कालपी में कादिर शाह जो महमूद तुगलग का नाज़िम था को परास्त कर मकनपुर आया तब हज़रत ज़िन्दा शाह मदार का देहान्त हो चुका था। आपके पहले ख़लीफ़ा ख़्वाजा अबु मोहम्मद अरगून मौजूद थे यहॉ पहुॅच कर उसने रौज़े शरीफ़ और उससे सम्बन्धित इमारतों के बनवाने का प्रबन्ध किया और अपने प्रबन्धक मोहम्मद निज़ाम को छोड़ कर जौनपुर लौट गया। इब्राहिम शर्की ने इन इमारतों के अतीरिक्त 500 बीघा ज़मीन दरगाह शरीफ़ के नाम वक्फ़ की जिसका वक्फ़ नामा जौनपुर से लेकर हज़रत ख़्वाजा मोहम्मद अरगून के पास भेज दिया। इस वक्फ़ नामे की पुष्टि इब्राहिम शर्की के देहान्त के बाद जब ख़िलजियों ने कन्नौज प्रान्त को अपने राज्य में मिला लिया तो हर बादशाह ऐसा ही करता रहा, यहॉ तक कि इब्राहिम लोदी की मोहर भी इस काग़ज़ पर मौजूद है।

बाबर और हुमायूँ को युद्ध के कारण इतना समय नहीं मिला कि वह दरगाह शरीफ़ आ सकते। परन्तु शंहनशाह जलाल उद्दीन मोहम्मद अक़बर अपने राज्य काल सन् 1565 ई0 में पधार कर शर्की की सरकार के इस फ़रमान की पुष्टि की

और अपनी श्रद्धा प्रकट करने के लिए इसमें 55 बीघा ज़मीन बढ़ाई और आस पास के नाज़िमो व चौधरियों और क़ाज़ियों को यह ताक़ीद लिखी की दरगाह के सज्जादा नशींनों का ख़ास तौर से ध्यान रक्खें और उनका आदर सम्मान करें।

असली फ़रमान और उनकी नक़लें आज भी पीर ज़ादगाने मकनपुर के पास हैं और उसकी एक–एक नक़ल किताब "तज़किरतुल मुत्तकीन" पृष्ठ नं0–194, 197, 198 पर है।

सन् 1600 ई0 में बादशाह शंहजहाँ ने बारगाह शाह मदार साहब में हाज़री दी और सन् 1612 में दौलत खॉ को और सन् 1624 में बहादुर खॉ को शहजहाँ ने चादरें और अपना प्रार्थना पत्र देकर मकनपुर भेजा। इन व्यक्तियों ने शहजहाँ के आदेशाअनुसार यहाँ आकर हाज़री दी और अपने–अपने काल में इमारतें बनवाईं जिनका उल्लेख आगे किया जायेगा।

औरंगज़ेब आलमगीर ने कुतबुल आलम हज़रत शरीफ़ शाह और यूसुफ़ शाह जो मदारिया सिल सिले के बु.जुर्ग थे के इशारे पर गोल कुन्डा ही में इस दरगाह शरीफ़ में हाज़री देने का इरादा कर लिया था। दक्षिण का युद्ध जीत लेने के बाद सन् 1664 ई0 में अपनी श्रद्धा अरपित करने हेतु मकनपुर आया यहाँ हाज़री देने के बाद उसके ह्रदय में इतनी नर्मी पैदा हो गई थी जैसे वह यहाँ आकर बिलकुल बदल गया हो। उसकी नज़रों ने इस दरबार में जो कुछ देखा उसको अपने शब्दों में यूँ कहा है——

ब्या कि औजे कमालात रा ज़हूर ई जास्त।
ब्या कि मरजये हर कैसरो कुसूर ई जास्त ।।
जनाब अकदसे शहनशाहे मदारे जहाँ।
बपाये दीदओ ब्याओं बीं के नूर ईजास्त।।

अनुवादः— ऐ परवर दिगार यह जगह बहुत बुलन्द है।

ऐ .ख़ुदा यह जगह बादशाहों के गुनाहों की पनाह गाह है।

ऐ बादशाहों के बादशाह मदारे जहाँ, मैं पूरे एहतराम के साथ कहता हूँ, यहाँ चारो ओर नूर ही नूर नज़र आता है।।

आलमगीर ने रौज़े शरीफ़ के चारो ओर दरों में संग मरमर की जालियाँ बनवाईं। मस्जिद और दम्माल ख़ाना बनवा कर वापस गया।

इस राज्य काल में जो औलादें हरशह ख़्वाजगॉन मे से जो व्यक्ति आदर, योग्य मौजूद थे उन बु.जुर्गो में हज़रत बाबा लार्ड दरबारी, शाह अबुल फ़तेह बाँगी, शाह चाँद तथा शाह प्यारे (रह0) और उनके अतरिक्त बहुत से बु.जुर्गो को कई गॉव जीवन व्यतीत करने हेतु भेंट किये। जिनकें फ़रामीन उन हज़रात की औलादों के पास आज भी मौजूद हैं।

शाह आलम, फर्रुख़ सियर, मोहम्मद शाह और बहादुर शाह ज़फ़र के फ़रामीन भी जो उन्होंने अपने—अपने राज्य काल में सज्जादाह नशीनाने दरगाहे आलिया को वकीले दुआ बनाने के लिए बतौर लिखे थे मोहर व हस्ताक्षर सहित आज भी मौजूद हैं। इसकें अतरिक्त राजाओं के फ़रमान भी मिलते हैं जिनमें ख़ादिमाने आस्ताने आलिया को वकीले दुआ बनाना तथा उसके बदले में अपने यहाँ से नज़्रोनियाज़ तथा वज़ायफ़ नियुक्त करने साबित हैं। महाराजा अलवर, महाराजा ग्वालियर, महाराजा दतिया, महाराजा ललितपुर, राजा मझोल तथा बहुत से राजाओं की तहरीरें मौजूद हैं। जिनमें कई ने दरबारे मदारूल आलमीन में हाज़िर होकर लिखी हैं और कुछ राजाओं ने वहीं से अपने अर्जो मारूज़ के उपलक्ष में वकीले दुआ बनाया।

Scanned with CamScanner

अंग्रेज़ी राज्य काल में गदर से पहले कम्पनी राज्य काल में तथा गदर के पश्चात खादिमानें दरगाहे आलिया मदारिया को किसी प्रकार की उन्नति न मिल सकी बल्कि भूत पूर्व बादशाहों व राजाओं के नज़्र किए हुए गॉव व आराज़ियत में से मकनपुर की थोड़ी सी आराज़ी के अतरिक्त सब कुछ ज़ब्त हो गये। मकनपुर की बहुत सी पट्टियाँ और बाग़ात भी ज़ब्त करके अंग्रेज़ो ने उन लोगों को इनाम में दे दीं जिन्होंने ख़ादिमानें दरगाह आलिया के विरूद्ध गदर में मुखबरी की थी। बहुत सी जायदादें नीलाम पर भी चढ़ादी गईं।

समस्त आराज़ियात के अतरिक्त जो नीलाम की गई उसमें मकनपुर शरीफ का बाज़ार भी है जो ज़ब्ती ज़मींदारी के पश्चात ग्राम पंचायत मकनपुर के अधिकार में है और वह आराज़ी भी जो हवेली ख़ाने आलम से मौसूम है तथा जिस पर कन्या पाठशाला और जानवरों का अस्पताल है।

ख़ादिमानें दरगाह शरीफ़ को प्रारम्भ ही से अंग्रेज़ और अंग्रेज़ी राज्य से दुश्मनी थी चुनान्चे गदर के अवसर पर भी यह लोग सरफ़रोशेन वतन (जिनहें बाग़ी कहा गया) ही के साथ रहे।

गदर में मुखबिरों के हाथों वह चिट्टियाँ भी लग गईं जो बाजी राव पेश्वा ने ख़ाने आलम को लिखीं थी। इन्ही़ चिट्टीयों के आधार पर अंग्रेज़ो ने बहुत से बेकुसूर व्यक्तियों को फॉसी के तख़्ते पर चढ़ा दिया और कुछ लोगों को गोलियों का निशाना बना दिया, बहुत से लोगों को क़ैदी बना कर आजन्म क़ैद का आदेश दे दिया, बहुत से लोगों को काले पानी की सज़ा दी तथा बहुत से घराने अपने तौर पर ज़िला बदर होकर सदैव के लिए खो गयें।

पिछले अंग्रेज़ी राज्य काल के सौ वर्ष में सरकार की

मकनपुर शरीफ़ की ओर से लापरवाही का कारण केवल यही बात रही, कि अंग्रेज़ सदैव इस बस्ती को बाग़ियों की बस्ती समझते रहे। यह और बात है कि कोई अधिकारी अपनी तौर पर किसी समय कुछ कर गुज़रा हो जैसे कलेक्टर मोडी और जे0 एम0 किले डिस्ट्रीकट मजिस्ट्रेट कानपुर जब हाज़िरे आस्ताना हुए तो उन्हों ने अपनी श्रद्धा के अनुसार हरमें अव्वल के दक्षिण के दरवाज़े के सामने साया बान बनवाया तथा कुछ मेले की उन्नति में दिलचस्पी ली।

जब कि प्रारम्भ ही से इस बस्ती वालो से हिन्दु–मुस्लिम बादशाहों व राजाओं का मुख्य सम्बन्ध रहा है। इसके दो कारण हैं। पहला मुख्य कारण यह है कि सरकार ज़िन्दा शाह मदार और उनके जानशीनों से हर एक को परस्पर अक़ीदत रही और हर प्रकार से उनकी दुआओं और आशीर्वाद से सदैव लाभ उठाते रहे, यहाँ तक कि हर एक अपनी कठीनाईयों के समय इन बु.जुर्गों को वकीले दुआ बनाता रहा और अपनी कामनाओं के दामन को भरता रहा।

दूसरा कारण इस पवित्र स्थान के उत्तम होने का यह है कि हज़रत ज़िन्दा शाह मदार के पवित्र जीवन से शिक्षा लेने वाले उनके उत्तराधिकारी सदैव सारी दुनियाँ में एकता, प्रेम, रवादारी, मुख्यताः हिन्दु मुस्लिम एकता का प्रचार करते रहे। स्वंम् सरकारे मदार की जीवनी इस बात की गवाह है कि उनका मिशन सारी दुनियाँ के आदमिंयों में प्रेम और एकता पैदा करना रहा है। इसी कारण भारत वर्ष में रहने बसने वाली समस्त जातियाँ चाहे वह किसी धर्म से सम्बन्ध रखती हों मदार साहब की दरगाह से आत्मिक श्रद्धा रखती है। इस दरगाह शरीफ़ में लोग साल भर आते जाते हैं और मेला बसन्त और उर्स में उनके एकत्रित होने का दृष्य देखने योग्य होता है।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि इस दरबार में मानव

जो एकता की नज़र से आता है, उसी एकता की भारत वर्ष के सभी राजाओं, महाराजाओं तथा बादशाहों को ललक रही। इसी कारण प्रत्येक बादशाह को इस दरबार की ओर विशेष ध्यान देना पड़ा।

मकनपुर सदैव प्रत्येक धर्म का केंन्द्र रहा है, और आज भी है। प्रारम्भ से ही आत्म शिक्षा होती रही है तथा इसी का प्रचार होता रहा।

हर एक राजा के हृदय में सदैव यह इच्छा रही कि धार्मिक भेद भाव का नाश होकर आपस में भाई चारा, प्यार और एकता की भावना पैदा हो, इसी कारण मकनपुर के पीरज़ादगान को हर काल में सरकार ने उनके जीवन व्यतीत करने के लिए हर प्रकार की सुविधाऐं प्रदान कीं। मकनपुर और उसके क्षेत्र का पूरा प्रबन्ध इनही पीरज़ादगान के हाथो में रक्खा, हर प्रकार की तमाम ज़मीने प्रारम्भ से ही इन्हीं के कब्ज़े में रहीं, जिन ज़मीनो के तक़सीम नामें जो समय–समय पर लिखे जाते रहे आज भी मकनपुर में मौजूद हैं। कस्बे का सारा प्रबन्ध मुकदमें और फ़ैसला करने का अधिकार सरकार की ओर से इन्हें हर काल में मिलता रहा। इस विषय में भी बहुत से लेख–पत्र और दस्तावेज़ मकनपुर के पीरज़ादों के पास मौजूद हैं।

हज़रत सैय्यद बदीउद्दीन ज़िन्दा शाहमदार (रज़ि०) का संक्षेप में जीवन परिचय

नाम– हज़रत सैय्यद बदीउददीन अहमद
पिता का नाम– हज़रत सैय्यद क़ितवत उददीन अली हलबी
माता का नाम– सैय्यद बीबी हाज़रा उर्फ़ फ़ातमा सानी
उप नाम– मदारे आज़म, मदारूल आलमीन, मदार पाक, कुतबुल मदार,

कुतबुल अक़्ताब, ज़िन्दा शाह मदार, मदार बाबा, मदार साहब, शाह मदार आदि।

पैदाईश— 242 हि0 बमुताबिक 822 ई0 शहर हलब, कस्बा चुनार, मुल्कशाम (सीरिया) दिन सोमवार, ख़ास ईद के दिन सुबहा।

वफ़ात— 838 हि0 बमुताबिक 1418 ई0 मकनपुर शरीफ़

हिन्दुस्तान में प्रथम आगमन्— 283 हि0 बमुताबिक 863 ई0 समुद्री साहिल मालावार, शहर खम्बाद (गुजरात)

मकनपुर शरीफ़ में आमद— 818 हि0 बमुताबिक सन् 1398 ई0

उम्र— 596 वर्ष

वंश— माता की ओर से हसनी
पिता की ओर से हुसैनी

(ख़ानदाने रिसालत मुआब सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम)

सरकार मदारूल आलमीन ने अपनी 596 वे साला जीवन को एक दिन मान कर जीवन भर का रोज़ा रख लिया था, और जीवन भर कुछ ना खाया और ना पिया, और एक वस्त्र पहना जो कभी पुराना हुआ न मैला तथा आप ने विवाह भी नही किया था। आप की नस्ल जो मकनपुर शरीफ़ मे आज भी मौजूद है, वह आप के छोटे भाई हज़रत सैय्यद महमूद उददीन (रजि0) की ग्यारवीं पुस्त से हज़रत अब्दुल्ला उनके तीन पुत्र

1— हज़रत सैय्यद ख़्वाजा अबु मोहम्मद अर.गून (रजि0)
2— हज़रत सैय्यद ख़्वाजा अबु तुराब मोहम्मद फ़न्सूर (रजि0)
3— हज़रत सैय्यद ख़्वाजा अबुल हसन तै.फूर (रजि0)

इन तीनो हज़रात की वफ़ात मकनपुर शरीफ़ मे हुई और इन्ही से मदारिया सिल सिला जारी—ओ—सारी है। और

Scanned with CamScanner

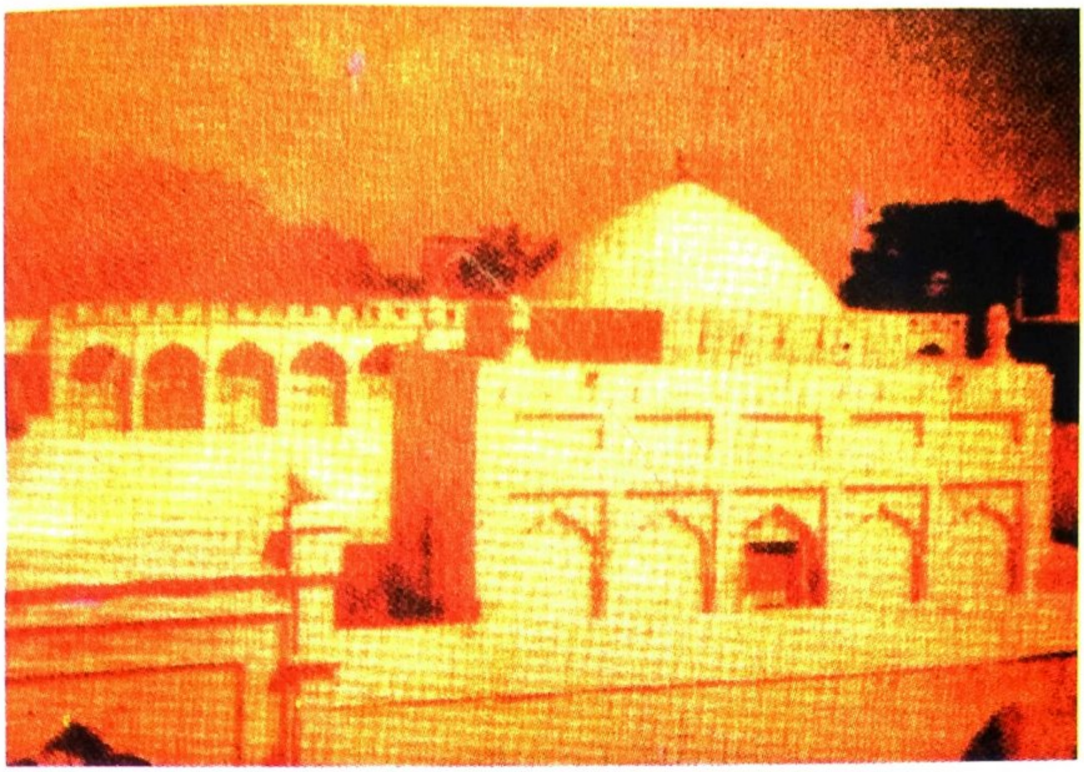

पत्थर लगने से पहले सरकार मदार पाक
का मकबरा इब्राहीम शरकी का बनवाया हुआ
इससे अलग अंदाज का था।

शोरूम खानक़ाह आलिया की नायाब चीज़ें मकनपुर शरीफ़

Scanned with CamScanner

मुसल्लाह शरीफ जिस पर मदार पाक ने नमाजे अदा की,
मुरछल, पंखा, शाहजंहानी चादर, आलमगीरी चादर,
शरकिया कलस जिसको उतारकर सोने का कलस मकन
सरबाज ने चढाया, शोरूम मकनपुर शरीफ

शोरूम खानकाह आलिया, मकनपुर शरीफ

Scanned with CamScanner

इनसे जो नस्ल चली उसको सारी दुनिया सैय्यद, जाफ़री, आले रसूल के नाम से जानती व पहचानती है।

सरकार मदार पाक ने सारी दुनिया का भ्रमण अमन–ओ–इंसानियत का पैग़ाम देने कें लिए किया आपके शिष्य हिन्दुस्तान के अलावा अन्य देशो मे भी मौजूद हैं। जो मेंलें व उर्स शरीफ़ के मौके पर तथा वर्ष में बरा–बर आया करते हैं। आप दुनिया के जिन भी देशो में गये वहाँ पर आप के पहुँचने के निशान आज भी मौजूद हैं। कही चिल्ले की शक्ल में कहीं पर आप के नाम से बनी इमारत आदि के नाम से।

आप के नाम से अनेकों शहरो, कस्बों, गॉव आदि के नाम मन्सूब हैं जैसे– मदार नगर, मदार गढ, मदारपुर, मदार पुरा, मदारा राय गुमान आदि।

आप के नाम से अनेको व्यक्तियों कें नाम मन्सूब हैं जैसे– मदारी लाल, मदार बक्स, मदार मोहम्मद, अलीमदार गुलाममदार, कामिलमदार, मुफ्तीमदार आदि।

आप के नाम से अनेक स्थानों के नाम मन्सूब हैं जैसे – मदार टीकरी, मदार पहाड़ी, मदार गेट, मदार मस्जिद, मदार दरवाज़ा, मदार स्टेशन, मदार बाउली, आदि न जाने कितने भवन, पहाड़, वगैरा हिन्दुस्तान में तथा अन्य देशों में मौजूद हैं।

नोटः– ज़्यादा तफ़सील से उक्त लेख को समझने के लिए मदारे आज़म, तारिख़े मदार,

सफ़ीनतुल औलिया व दूसरी सिल सिले की किताबों को पढ़ कर समझें।

★★★

फरमान

बादशाह नूर उद्दीन जहाँगीर (फारसी में)

الله اکبر

اعلی خلد الله ملکه ابدا — حکم مریم زمانی ولی نعمت بیگم

کنیز بادشاه نور الدین جهانگیر
نعمت
ولی بیگم والده

حکام و جاگیرداران حال و استقبال چودهریان و قانونگویان و کروریان
پرگنه بلهور سرکار قنوج بدانند که چون مشیخت مآب
شیخ فتح الله متولی کرسفته منوره متبرکه قطب الاقطاب حضرت سلطان بدیع الدین قطب المدار
قدس سره دعاگوی این دولت ... موازی ... و پنج بیگه زمین بموجب اسناد
حکام از پرگنه مذکور در وجه مدد معاش ... مقرر است ... حضرت ... نماید
که چون به مضمون فرمان عالیشان ... قدیم التعلق
دانسته ... که بعضی از عمال
متعرض گردیده بدعاگوی دوام دولت ابد الاتصال بندگان حضرت اشتغال
... سال درین باب فرمان ... طمع در وقع
نمی نمایند و چون موما الیه از قدیم دعاگوی این درگاه است ... البواب رعایت
احوال او لازم دانسته پیوسته کوشند ... ظهور گردد و
درین باب قدغن تمام ... نموده ... سنه
تحریرا فی التاریخ ۲ ماه الٰهی بهشتت الٰهی سنه ۱۲ موافق
۱۵ ربیع الاول سنه ۱۰۲۶

برسالت اعتقاد الممالک العظمی اشفاق الزلافت الکبری رکن السلطنة القاهره مبارز الدین اعظم خان
در جوس کے سیادت پناہ نقابت دستگاہ نقی خان و بو عنت واقعہ ... لکھنے راقم راحی کو بعرض [illegible] است خان
بتاریخ نوزدہم ... درج

کمال الدین [illegible]
عبدہ

[illegible] ... عبدہ

فی التاریخ
... ماہ ... الٰہی سنہ ...

فی التاریخ
... ماہ ... الٰہی سنہ ...

[illegible]
... ماہ ابان الٰہی سنہ ...

شرح یادداشت واقع روز ... بتاریخ ... ماہ ... الٰہی سنہ ... برسالہ ممالک ... اعظم خان
و بمعرفت مقرب الحضرت الخاقانی دولت خان در جوکی سیادت ... نعمت خان ...
واقعہ نویسی ... که شیخ عبدالرحیم و شیخ ...
جماعه خادمان روضه ... بدستور سابق ... قیام داشته باشند
مودول ... [illegible] ... شرح حاشیه ... واقعه نویس
واقعه است

फरमान

اکبر شاه
ثانی
فرمان عالی

از قرار تاریخ ۲۹ شهر جمادی الثانی سنه ... شرح آنکه چون بموجب سند اسلام شاه
و سائر حکام موروثی پالنپور [illegible]
بصیغه مقبوضه در وجه مدد معاش [illegible] الانوار حضرت قطب [illegible]
الکبا حضرت شاه [illegible] مقرر بوده [illegible] الشان بوده نموده که تمام
خودکاشته ایشان است و نیز اراضی مذکور [illegible] قدیم و دیگر چیزی ندارند بنابر
آن حکم [illegible] اراضی مذکور بنا بر [illegible] ایشان از ابتدای [illegible] که بدستور
سابق در وجه مدد معاش ایشان [illegible] باشد که حاصلات آن را
سال بسال صرف معاش خود نموده [illegible] دولت ابد الاتصال اشتغال نمایند
[illegible] جاگیرداران و عاملان [illegible] پرگنه مذکور
بموجب مقرر دانسته اراضی مذکور [illegible] و در آنجا دخل ننمایند
و [illegible] نگردند و لعلت مال مال [illegible] و خوارجات چون پیشکش
و [illegible] و [illegible] و شمار [illegible] و صدر [illegible]

फरमान

از قرار تاریخ ۲۹ شهر جمادی الثانی سنه ۹۷۶ هجری آنکه چون بموجب سند اسلام شاه
و سائر حکام [illegible]
بصیغه مقبوضه [illegible] و معاش [illegible] الانوار حضرت قطب [illegible]
الکبا حضرت شاه [illegible] مقرر بوده [illegible] بتصرف ایشان بوده نموده که تمام
خود کاشته ایشان است و بغیر اراضی مذکور [illegible] قدیم و دیگر چیزی ندارند بنابر
آن حکم فرمودیم اراضی مذکور بنابر [illegible] ایشان از ابتدای ربیع [illegible] بدستور
سابق در وجه مدد معاش ایشان حسب [illegible] مقرر باشد که حاصلات آن را
سال بسال صرف معاش خود نموده [illegible] دولت ابد الاتصال اشتغال نمایند
[illegible] باید که جاگیرداران و عاملان [illegible] پرگنه مذکور
بموجب مقرر دانسته اراضی مذکور [illegible] ایشان [illegible] در آنجا دخل ننمایند
و [illegible] مال و [illegible] چون پیشکش
و [illegible] ضابطانه و [illegible] و صدری و

फरमान

शहनशाह जलाल उद्दीन मोहम्मद अकबर (फारसी में)

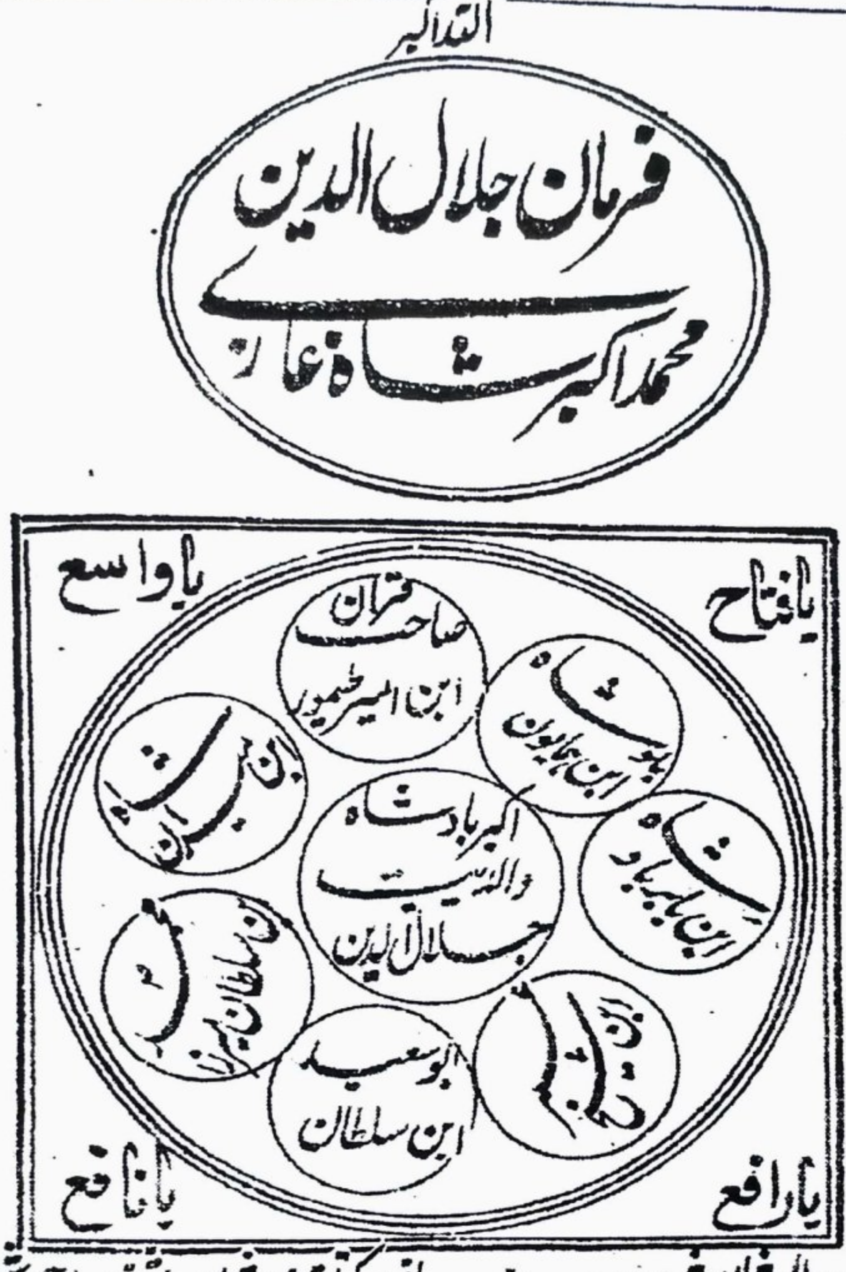

در نیوقت فرمان عالیشان شرف صدور وعز ورود یافت که تقوای شعاردین شیخ عبدالرحیم وشیخ دولار
دجاده قادمان روضه منوره شاهمدار بدستور سابق با مرمجاوری وجاروب کشی و تولیت انجا قیام واقدام
نمایند معهود والیشار الیه بدرگاه خلایق پناه حاضر آمده در امر مجاوری آنجا مداخلت نه نمایند وبر ایشان
بازگذارند می باید که حسب الحکم جهانمطاع لازم الاتباع عمل نموده از فرموده در نگذارند ودرین باب
قدغن لازم شمرند تحریر فی التاریخ ماه مهر آلهی سنه ۴۲ هـ

وتاتوان گوسے وپیکار وشکار و تیغ خرج چرا بانه وتکرار زراعت خود کاشته
ایشان و کل تکالیف دیوانی مزاحمت نرسانند ومن کل الامورات معاف
ومسلم داشته تغیر و تبدیل بدان راه ندهند و در استقرار و استمرار آن کوشیده
هر سال در این باب فرمان و پروانچه مجدد طلب ندارند ودر عهده دانسته تخلف
نورزند تحریر فی التاریخ [illegible] سنه الیه

لاڈ پدادران و فرزندان [illegible] نفر المعه للعه	چپاند و جماعه [illegible] نفر المقرر للعه	[illegible] و جماعه نفر المقره [illegible]
عبد الصمد و جماعه [illegible] نفر المفرد للعه	چپاند و جماعه [illegible] نفر المقره [illegible]	احمد و جماعه [illegible] نفر المفره للعه
عبد [illegible] و جماعه [illegible] المفرد [illegible]	الله داد و جماعه [illegible] نفر المفرد [illegible]	امجد و جماعه [illegible] نفر المفرد [illegible]
نظام و جماعه [illegible] المفرد [illegible]	عبد الملک و جماعه [illegible] نفر المفره [illegible]	برخوردار و جماعه [illegible] نفر المفره [illegible]
حبیب و جماعه نفر المفره [illegible]	محب الله و جماعه [illegible] نفر المفرد [illegible]	

भारत की पुरातात्विक सर्वे रिपोर्ट टूर का एवं वैज्ञानिक लुक प्लान सन् 1881–82 ई0 द्वारा एसे कान्डर एलोतिया

(अंग्रेज़ी से हिन्दी अनुवाद)

अपनी सर्वे रिपोर्ट में एसे कान्डर एलोतिया लिखते हैं कि शाह मदार के पवित्र मक़बरे को मकनपुर का गॉव बनाया गया जो पूरे भारत मे प्रसिद्ध है। यह मक़बरा ईसन नदी के तट पर स्थित है। तथा कानपुर के पश्चिम तथा पश्चिमोत्तर 40 मील की दूरी पर है। कन्नौज से 10 मील दक्षिण पश्चिम की ओर है तथा अरौल रेलवे स्टेशन से 2.1/2 (ढाई) मील की दूरी पर है।

तथा अरौल और मकनपुर के बीच में एक हिन्दु गॉव हरपुरा है।

अबदुल क़ादिर बदायूनी कथन करते हैं कि वह मकनपुर तीर्थ यात्रा पर गये थे जो कन्नौज का एक हिस्सा था। जहॉ पर पवित्र शेख़ बदी उददीन ज़िन्दा शाह मदार का पवित्र मकबरा है। यह सन्त यहाँ हल्ब से आये हैं। वह मकनपुर में वर्ष 818 हिजरी बमुताबिक़ 1398– –ई0 इब्राहिम शाह शर्की जौनपुर के शासन काल में गये थे। वह विदेशों मे भी अपनी ख्याती के लिए प्रसिद्ध थे। उनके बारे में कहा जाता है कि वह बिलकुल भोजन नहीं लेते थे वह अपने कपड़े कभी नहीं बदलते थे फिर भी उनके कपड़े साफ रहते थे।

Scanned with CamScanner

उनकी प्रसिद्धि इस लिए भी बड़ी थी कि वह बिना साँस लिए लम्बे समय तक जीवित रह सकते हैं, वास्तव मे यह कहा जाता है कि एक अवसर पर 12 वर्ष तक निरन्तर बिना साँस लिए वह जीवित रहे। उनका प्रसिद्ध नाम (दम–मदार) या (ब्रीथ मदार) था। पालकी ढोने वाले लोग उत्तर–पश्चिम प्रांतो में जंगली रास्तों से गुज़रते समय अपनी सहायता के लिए दम–मदार का नाम लेते थे।

यह भी प्रतीत होता है कि मदार पाक कुछ समय के लिए दूसरे स्थानो पर भी रहे हों मुझे एक चिल्लागाह पंजाब के चॅपा पहाड़ी के उत्तर में ऊंचाई पर दिखाई पड़ा था। और दूसरा स्थान झॉसी के उत्तर में कंडेर मे दिखाई पड़ा मेरा विचार है कि मंसूरी और नैनीताल के पहाड़ियों के बीच में तीसरा चिल्ला गाह है।

यहाँ पर सात विभिन्न दरबार हैं जिसे सात दरबार कहा जाता है, जिनका अलग–अलग नाम है।

1– रोज़ा मुबारक

2– हरंम दरबार

3– साकर दरबार

4– पाकर ख़ाना

5– दम्माल ख़ाना

6– नक्कार ख़ाना

7– मस्जिद आलमगीरी

1– रोज़ा मुबारक– रोज़ा मुबारक दरबार स्थान है जो नब्बे मीटर में है जिसमे मकबरा स्थित है।

2– हरम दरबार– हरम दरबार एक बहारी हिस्सा है जिसमे महिलाओं का प्रवेश वर्जित है। जैसे कि ऊपर कहा गया है।

Scanned with CamScanner

शोरूम मेला कमेटी मकनपुर शरीफ द्वारा बनवाया गया

मस्जिद आलमगीरी जिसे शहनशाह
औरंगजेब (आलमगीर) ने बनवाया था।

Scanned with CamScanner

शॅहजानी दालान इसे बादशाह शाहजहां ने बनवाया था

नक्कार खाना जिसे शहंशाह आलमगीर (औरंगजेब) ने बनवाया था।

Scanned with CamScanner

दारूल अमान
जिसे मोहम्मद
निजाम सौदागर
ने बनवाया था।

लंगर की डेग

Scanned with CamScanner

आईने वाला दालान दतिया की रानी द्वारा बनवाया गया

कुरान ख्वानी वाला दालान जिसे पुत्तुलाल
खत्री ने बनवाया था।

Scanned with CamScanner

काजी मुतहर दालान

काजी मुतहर दालान की मस्जिद

3– साकर दरबार– साकर दरबार या जँजीर दरबार इसका नाम इस लिए है कि दरवाजे पर चैन / ज़ंज़ीर लगी है।

4– पाकर दरबार– पाकर दरबार का मतलब है कि प्राचीन पाकर का पेड़ यहॅा पर स्थित है।

5– नक्कार ख़ाना– नक्कार ख़ाना वह स्थान है जहा नगाडे बड़े–बड़े ढोल, डेग एवं बड़े–बड़े खाना पकाने के बर्तन होते थे।

6– दम्माल ख़ाना– दम्माल ख़ाना वह स्थान हैं जहाँ मदारिया सिलसिले के मलंग शगल करते हैं।

7– मस्जिद आलमगीर– मस्जिद आलमगीर के विवरण की आवश्यकता नहीं है।

नक़्क़ार ख़ाने मे विशाल नक़्क़ारों के अलावा अकबरी धातु के ढोल तथा तीन लोहे एव ताँबा के भोजन पकाने वाले पात्र जो रक्खे हैं जिसमें शाह मदार के उर्स शरीफ़ के मौके पर भोजन पकाया जाता था।

मज़ार पर एक मेला लगता है जो 16 दिन चलता है। विशाल तॉबे के पात्र की ऊँचाई 6 फुट 7 इंच और इस पात्र का मुॅह 1 फुट 10 इंच ऊँचाई में हैं जिसमे 80 मन चावल पकाया जाता है। विशाल लोहे का पात्र 8 फुट 2 इंच का है इसकी ऊॅचाई 6 फुट है और इसमें 102 मन चावल पकाया जाता है। तीसरा पात्र टूटा हुआ है केवल ऊपरी आधा हिस्सा शेष है इसकी लम्बाई चौड़ाई 6 फुट 2 इंच है इसमे 20 मन चावल पकाया जाता है। यह विशाल पात्र तीर्थ यात्रियों के धन से भरा जाता था जो शाह मदार के वार्षिक उर्स में आते थे। यह भी विश्वास किया जाता है कि इसके संरक्षक जो 200 मन चावल का नज़राना प्राप्त करते थे, उक्त 200 मन चावल से मीठी खीर

Scanned with CamScanner

पका कर उर्स में शामिल होने वाले लोगो में वितरित कर देते थें। जिसको लेने के लिए पागल फ़कीर लोग डेग के धुऐं की ओर दौड़ते थे तथा खीर की मॉग करते थे इस संघर्ष मे कुछ भोजनालय में गिर जाते थे और दर्शक उन्हें देख .खुश हो जाते थे। दो बड़े–बड़े पात्र जिसकी लम्बाई 5) .फुट है यह इस पात्र के मुख पर रखे जाते थे।

इस मकबरे का निर्माण इब्राहिम शाह शर्की जौनपुर के द्वारा हुआ जिसकी मृत्यु 844 हि0 में हुई। मकबरे पर कुछ भी अंकित नही है, इसमे दो मार्ग हैं जो बाद की तारीख़ों के हैं जिसमें से एक दरवाज़े पर वर्ष 868 हि0 अंकित है। जिस पर इस प्रकार का लिखा क़तबा लगा है।

(शे.खुल मशायक मोहक्किके शरा–ओ–दीन सैय्यद बदी उददीन .कुतबुल मदार .कुदसअल्लाह सिरहुल अज़ीज़ बफ़ाई ऐने इमारत रंगीन बतारीख़ बिस्तुम माह जमादिउल अव्वल अज हिजरत हस्त सुद्ध हफ्तान–ओ–बाद करम अल्लाह–हो–ताआला)

अनुवाद–''शेख़ो का शेख़ कानून का विश्वासनीय दृष्टता सैय्यद बदी उददीन कुतबुल मदार

यह रंगीन 20 तारीख़ को 868 हि0 में जमादिउल अव्वल द्वारा हुआ''।

दूसरा दरवाज़ा सौदागर दरवाज़ा कहा जाता है उसके ऊपर निम्न अंकित है।

''माहे जमादिउल आख़िर सनअता तिसआ व तिस ईना वतमा समानिया व रोज़ चाहरसभ्मा मोहम्मद निज़ाम मदारी सौदागर''

अनुवाद– ''जमादिउल द्वितीय के महीने में वर्ष 899 में मोहम्मद निज़ाम मदारी सौदागर'।

Scanned with CamScanner

सम्राट औरंगज़ेब जो मदार पाक के मकबरे को देखने सन् 1664 ई0 में आया था। उसने मस्जिद बनवाई जो आज भी स्थित है। जब वह मक़बरे को देखने आया तो वह कोहनी व घुटने के बल रेंगते हुए मज़ार तक आया और उनको कपड़े से ढके हुए था। मज़ार पर पहुँचने पर उसने एक कविता पढी जिसके बारे में कहा जाता है कि आलमगीर ने स्वंम् उसको बनाई थी।'

'बया के औजे कमालात रा ज़हूर ई जास्त
बया के मरजय हर कैसरो कुसूर ई जास्त
जनाबे अक़दसे शहन शाहे मदारे जहाँ
बपाये दीदओ बया ओं बीं के नूर ई जास्त''

अनुवाद–

ऐ परवर दिगार यह जगह बहुत बुलन्द है
ऐ .खुदा यह जगह बादशाहों के गुनाहों की पनाह गाह है
ऐ बादशाहों के बादशाह मदारे जहाँ
मै पूरे एहतराम के साथ कहता हूँ, यहाँ चारो तरफ़ नूर ही नूर नज़र आता है

घुटनों के बल चलने वाला सम्राट शाह मदार का सच्चा अनुयायी था इस अवसर पर सम्राट के साथ दो हिन्दु भी थे जो सम्राट के साथ अपना हित चाहते थे।

निम्न लिखित कविता जो "शिव पत पंडित " द्वारा लिखी गई थी, आज भी बहुत प्रशंसा की जाती है।

★★★

Scanned with CamScanner

-:कविता:-

नाहिन सलोन कर्राहिलसा
नाहिन जात बिहार न जात बुख़ारा
अजमेर–मुनेर को कौन जानें
जोत ऑखिन देत
मंगल मन देत
शिव पंडित
कवि राज पुकारे
जा पर रिझात है करतार
सो आवत दयार
मदार तेरे ।।

अनुवाद– जो सैलोन कर्रा या हिलसा जाते हैं
जो बिहार या बुखारा जाते हैं
जो अजमेर या मुनेर की परवाह करते है
जब एक बहुत बड़ा संत यहाँ हैं
एक तेज़ प्रकाश और एक पवित्र प्रसन्नता यहाँ है
शिवा पंडित कवि तभी कहते हैं
उनके लिए कृपा ही चुनते हैं
और इस मदार की कब्र पर आते हैं ।।

इस कविता में कुछ स्थानो का वर्णन है जिसमे प्रत्येक स्थान अपने मक़बरे के लिए प्रसिद्ध है मुस्लिम संत ऐसा कहते हैं।

सैलोन में हज़रत पीर मोहम्मद का मक़बरा है कर्रा में हज़रत शेख़ कर्राक का मक़बरा है। और हिलसा में हज़रत जमाल उद्दीन जाने मन जन्नती शाह मदारी का मक़बरा है। बिहार में हज़रत शाह मख़दूम का मक़बरा है अजमेर में हज़रत

Scanned with CamScanner

मोईन उद्दीन चिश्ती का मक़बरा है
मुनेर में हज़रत शरफ़ उद्दीन का मक़बरा है।
दूसरे कवि घासी राम अपनी कविता में कहते हैं–

1– बड़े–बड़े सरदार ठहरे राहत दरबार
चन्दन जरे केवर थी, देख–देख लालकेन
2– अन्धरन को ऑख देत, कोढ़िन को काया देत
पुत्र देत बॉझन को, निमाजत है खलकेन
3– चादरन झलझलात, कुम कुमा झम झमात
चन्द्र–सूरज हू लजात, देखतही झलके
4– बहिस्त से सारस, दरस, दरबार, कहिनकवि
घासी राम मन दिये न पलकें।।

अनुवाद– बहुत से शक्ति शाली लोग दरबार के बाहर प्रतिक्षा कर रहे हैं। और अन्दर की ओर देख रहें हैं और उसके अन्दर अल्लाह का वली मस्त बैठा हुआ है।
यहॉ अन्धें को ऑख मिलती है, कोढ़ी को सुन्दर त्वचा मिलती है।
और बॉझ महिला को पुत्र प्राप्त होता है।
और बुद्धिमान लोग बुद्धि को प्राप्त करते हैं।
इनके तेज से सूर्य और चन्द्रमा शर्माते हैं।
यह दरबार स्वर्ग के समान है। ऐसा घासी राम कवि कहते हैं।
क्यों कि उन्होंने यहाँ के दर्शन किये हैं।
सर ज़मीने मकनपुर शरीफ में क़ौमी एकता की एक अटूट डोर तो बन्धी ही है इसके अलावा इस प्राचीन कस्बे का जंगे आज़ादी मे भी अहम रोल रहा है। जिसके कुछ मुख्तसर हवाले पेशे नज़र हैं।

मदारी मलंग और जंगे आज़ादी

हवाला नई दुनिया सप्ताहिक अख़बार नई दिल्ली 16 अगस्त 1994

फिरंगी इक्तिदार के ख़िलाफ़ पहली बगावत का हीरो बाबा मजनू शाह मलंग

आम तौर पर 1857 को हिन्दुस्तान की पहली जंगें आज़ादी कहा जाता है। लेकिन यह धारणा बिलकुल ग़लत है। और तारीख़ी तौर पर इस दावे की कोई मज़बूत शहादत भी नहीं पेश की जा सकती है। तारीख़ गवाह है कि 1857 की जंगे आज़ादी से बहुत पहले सन् 1763 ई0 में ही अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ जंग के शोले भड़क उठे थे। और यह जंग ज़मीदारों, ताल्लुकदारों या रजबाड़ो ने नहीं लड़ी बल्कि फकीरों ओर सन्यासियों ने शुरू की, तमाम तारीख़ों से ये बात साबित होती है कि ज़ालिम हमलावरों के ख़िलाफ़ सबसे पहले बाबा मजनू शाह मलंग ने बगावत का झंण्डा बलन्द किया था। जो मुस्लिम फ़कीरों के क़ायद और रोहानी पेशवा थे आगे चल कर इस बगावत में उनका साथ बाबा भवानी पाठक ने दिया जो सन्यासियों के रहनुमा थे और उनकी यह बगावत दो–चार साल की नहीं थी बल्कि पूरे 37 साल तक 1763 से 1800 ई0 तक जारी रही।

Scanned with CamScanner

बगावत का झंडा बलन्द करने वाले मलंगो– फकीरो का ताल्लुक मदारिया सिलसिले से था और सन्यासियों का ताल्लुक सॉईबा पंथ से था। अगर चे पूरे देश में इनकी बक़ायदा और मज़बूत तन्ज़ीम नही थी। मगर यह फ़कीर और सन्यासी गॉव–गॉव जाकर लोगों को अंग्रेज़ो के ख़िलाफ़ उकसाते थे। आम हिन्दुस्तानियों, मज़दूरों और किसानों में आज़ादी का जज़बा उभारते थे और इन्हें अपने मज़हब, अपनी संस्कृति अपनी मिलकियत बचाने के लिए कुर्बानियॉ देने पर आमादा करते थे। और अंग्रेज़ो की हर ऐतबार से बड़ी–चढ़ी फ़ौजों से बेजिगरी के साथ मुकाबला करने में बेमिसाल सुजआत का मुज़ाहिरा करते थे। इन्होंने "मेकेन्जी" के ज़ेरे कमान अंग्रेज़ फ़ौज को एक के बाद एक कई शर्मनाक शिकस्त दीं और जग में इन्होंने 1769 में "कमॉडर केत" की फ़ौज को शरमनाक शिकस्त दी और उसका सिर भी क़लम किया।

ग़द्दारों का किरदार– मलंग मजनू शाह को ज़िन्दा या मुर्दा गिरफ्तार करने के लिए अंग्रेजों ने अपने जासूसों के जाल बिछा रक्खे थे। कई ग़द्दाराने वतन इस सिल सिले में अंग्रेजों की मदद करते थे मगर मजनू शाह मलंग अंग्रेज़ो के लिए छलावा बन गये थे। कई बार वह अंग्रेज़ो के बिछाऐ जाल में फॅस भी गयें मगर ग़ैब से इनकी मदद हुई और वह तमाम घिराओ को तोड़ कर निकल भागने में कामियाब हो गये। सन् 1771 ई0 में मलंग मजनू शाह ने मुकाबले में "लेफ्टीनेन्ट टेलर" की फ़ौज को छट्टी का दूध याद दिला दिया। इन्होंने पहले अपने मस्तान गढ़ के क़िले में मोर्चा बन्दी की और फिर वहॉ से वह बिहार पहुॅच गये, जहाँ किसानो और दस्तकारों का एक बहुत बड़ा लशकर इनके साथ हो गया। हथियारो की कमीं के बावजूद 14 नवम्बर सन् 1776 को इन्होंने फ़िरंगीयों

को ऐक और ज़ोरदार शिकस्त दी इस जंग में सैकड़ो फिरंगी फ़ौजी हलाक हुए मैदाने जंग में अंग्रंज़ी सिपाहियों की लाशों के ढ़ेर लग गये और "लेफ्टीनेंन्ट राबर्टसन" बुरी तरह से ज़ख़्मी हुआ। जैसा कि अंग्रेज़ों के नमक ख़्वारों ने फ़कीरों और सन्यासियों में फूट डालदी इनके बीच मज़हबी तास्सुब को हवा दे दी, मतभेद इतने भड़क उठे कि मलंग मजनू शाह की कोशिशे कमज़ोर पड़ने लगीं। इसके बावजूद मलंग मजनू शाह मदारी ने हिम्मत नहीं हारी और इनहोंने आपसी दूरियों को ख़त्म करने के लिए अपनी जद्दो-जहेद जारी रक्खी इस सिल सिले में इन्होंने पुरनिया से जमालपुर तक पूरे पश्चिम बंगाल का दौरा किया और मुजाहिदों की अक्सरेनव सफबन्दी के लिए कोई कसर उठा नही रक्खी मगर अब मलंग मजनू शाह को सिर्फ़ फ़िरंगियों से ही ख़तरा नहीं था। बल्कि खुद वतन वालों से भी ख़तरात पैदा हो गये थे।

इस कारण वक़्त का तकाज़ा यह था कि वह एक स्थान पर ज़्यादा देर तक नहीं ठहेरते थे बल्कि हमेशा सफ़र में रहते थे और अचानक किसी इलाक़े में पहुॅच कर अंग्रेज़ों पर टूट पड़ते थे। ऐसा ही वाक्या 19 दिसम्बर 1786 को हुआ जब मलंग मजनू शाह मदारी ज़िला बागौंर के एक गॉव मोगरा में अचानक पहुॅचे इन्होंने "लेफ्टीनेन्ट वरीनान" की फ़ौज पर जिस रफ्तारी से हमला किया इसने फ़िरंगियों के हाथों के तोतें उड़ा दिये। हालॉ की मोगरा की जंग में मजनू शाह ज़ख़्मी हो गये थे मगर दुश्मन के .ख़ून मे नाहाई हुई तलवार हाथ मे लिए हुए आगे ही बढ़ रहे थे और अपने घोड़े को दौड़ाते हुऐ दुश्मन की घेरा बन्दी से निकल कर एक सुरक्षित स्थान पर पहुॅचने में कामियाब हो गये मगर मलंग मजनू शाह मदारी के जिस्म पर जो ज़ख़्म लगे थे इनका इलाज न हो सका वह दुश्मनों के घेरे

Scanned with CamScanner

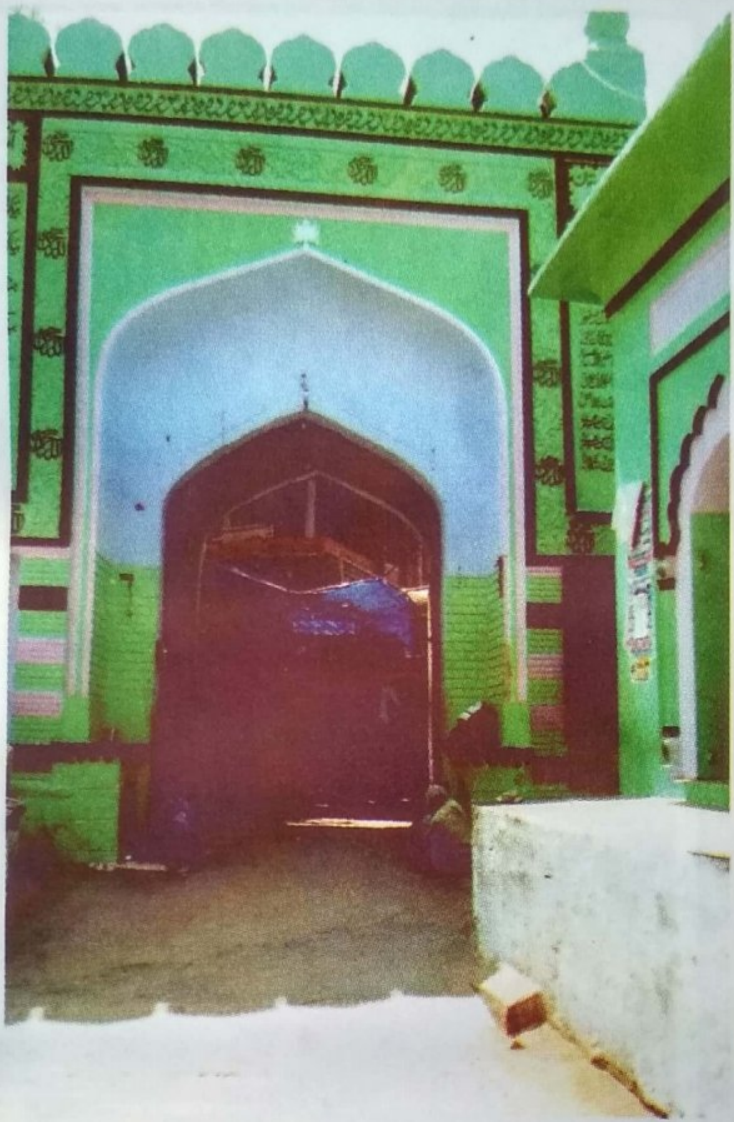

आलमगीरी
दक्षिणी
दरवाजा जिसे
शहनशाह
आलमगीर
औरंगजेब ने
बनवाया था

बारह दरी जिसे राजा भागवल ने बनवाया था।

Scanned with CamScanner

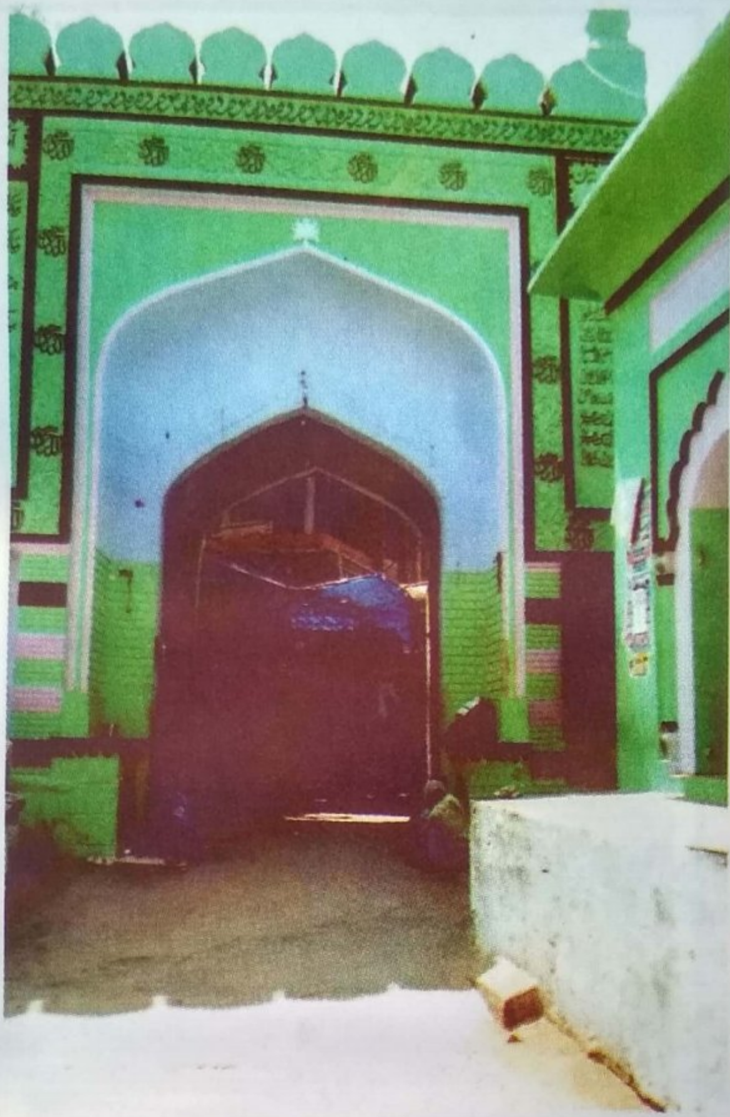

आलमगीरी दक्षिणी दरवाजा जिसे शहनशाह आलमगीर औरंगजेब ने बनवाया था

बारह दरी जिसे राजा भागवल ने बनवाया था।

Scanned with CamScanner

सदर दरवाज़ा जिसे मोहम्मद निज़ाम मदारी सौदागर ने बनवाया था।

जमियत खाना

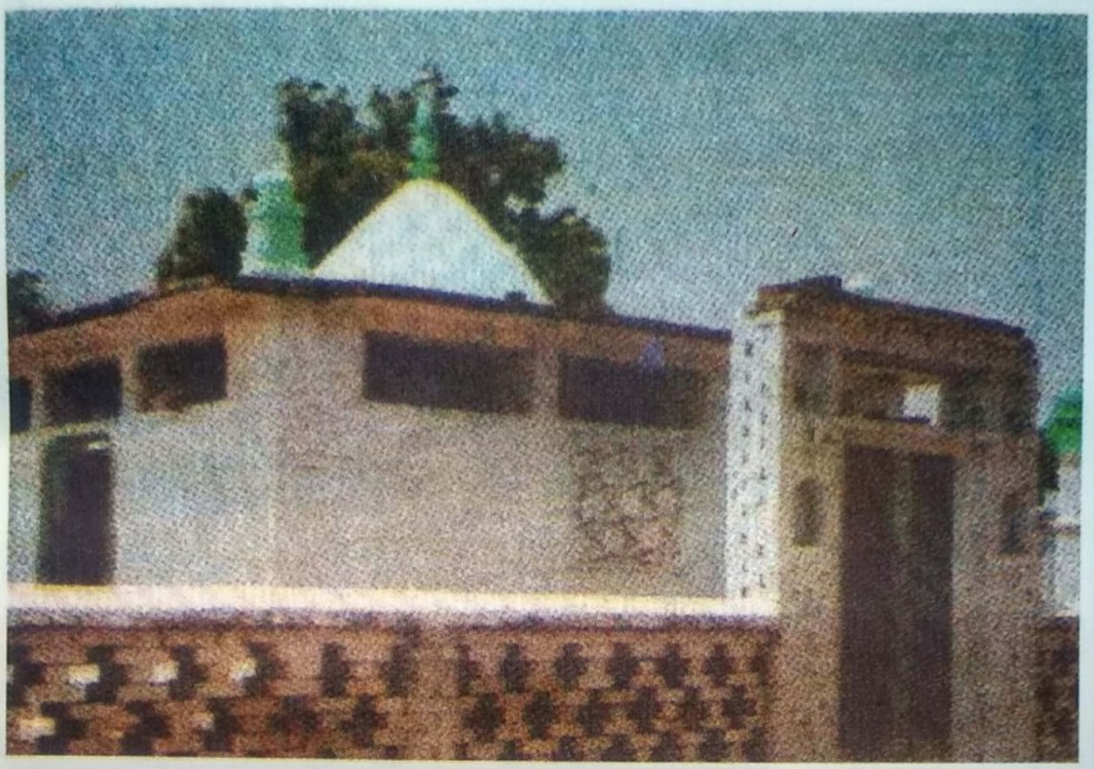

दरगाह शरीफ़ हज़रत मीर रूकनुद्दीन हसन-अरब
गोजेपुर, कानपुर

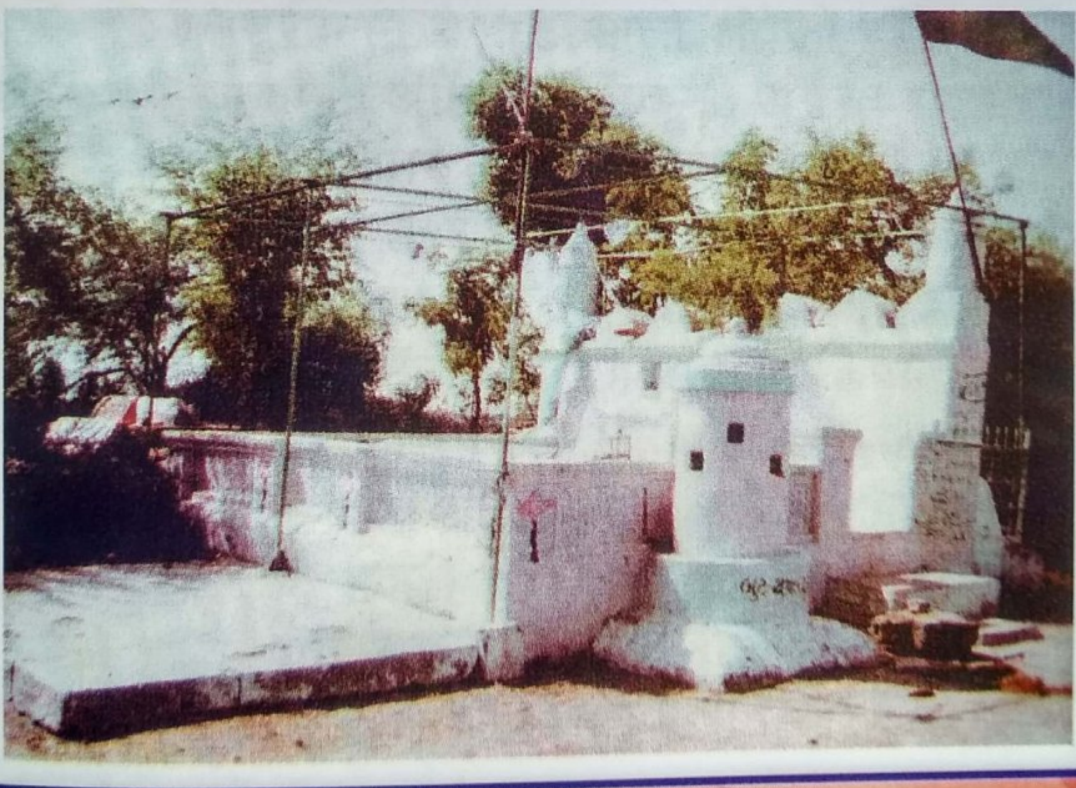

हज़रत सिपाह सालार मदारी समी -
जि. पाटन (गुजरात)

Scanned with CamScanner

से तो निकल आये थे लेकिन ज़ख्मों से ठीक न हो सके और वहाँ से उत्तर–प्रदेश के कानपुर ज़िले के कस्बा मकनपुर शरीफ़ चले गयें और जहाँ पर इन्होंने आखरी सॉस ली, जहॉ पर मलंग मजनू शाह की गढ़ी के नाम से मन्सूब स्थान पर उनकी मज़ार बनी हुई है।

तकियादार मलंग मजनू शाह मदारी

हवाला "ग़द्दारों की मुख़्तसर तारीख़" लेखक शाह फायक अहमद आज़मीं मदारी मुम्बई।

13 अगस्त 1998 में पेज संख्या 17 उर्दू बिल्टेज के मशहूर लेखक शमीम तारिक मुख्तसर तारीख़ मलंग मजनू शाह मदारी पर लिखी थी। "फ्रीडम मोमेन्ट एन्ड इन्डिया मुस्लिम वाई शान्ती माई राय" लेखक शेख़ मोहम्मद इकराम ने "रूद कौसर" में मुख़्तसर वाकियात मलंग मजनू शाह मदारी पर रौशनी डाली है।

चौधरी शमसुर्रहमान ने 165 साला अंग्रेज़ो की रिपोर्ट को ढाका की रिव्यू कमेटी अंग्रेज़ो की हुकूमत अगस्त 1922 में जमा कर दिया था, ज़्यादातर लेखकों ने इस जमा रिपोर्ट की नकल अपने वाक़ियात में तहरीर की है। हफ्त रोज़ा अख़बार करॉची, पाकिस्तान 1967 का हवाला "नवाये वक़्त इन्क़िलाब" में प्रोफ़ेसर सैय्यद मोहम्मद सलीम तजददुदी ने लिखा है कि मुकम्मल जंगे आज़ादी की तारीख़ मुर्रतब की है जैसा कि लेखक "अमीर कबीर" सैय्यद गुलाम हुसैन तबा तबाई "सराईम ताखरीन" के हवाले से लिखी गई है। तकियादार मदारी मलंग मजनू शाह मदारी कैसे बेसरो–सामान अंग्रेज़ों, ईसाई मशीनरीज़ के ख़िलाफ़ जेहाद का ऐलान कर दिया और फ़िरंगी फ़ौज से जंग करते रहे।

Scanned with CamScanner

अंग्रेज़ो ने लिखा है कि मलंग मजनू शाह मदारी ने जंग के ऐलान के साथ जंग भी शुरू कर दी और जंग के दौरान एक मज़बूत और मुस्तैहकम रहने की जगह को बनाया और 1776 ई0 में मोगरा में एक सुरक्षित मज़बूत क़िला बनवाया और इसका नाम "मस्तानगढ़" रक्खा जो एक मुद्द तक सैय्यद, मदारियों के जेहाद का मरकज़ बना रहा। बोंगरा के हवाले से लिखी गई किताबों में "बैगरदी ब्रिटनटा" सन् 1861 ई0 में लिखा गया था फिर बंगाली ज़बान की प्राचीन किताबों में मिलता है इन हवालों में सैय्यद मदारी के मरकज़ का ज़िक्र मिलता है। अंग्रेज़ों ने लिखा है मलंग व फुकरा मेवात से आकर जंग करते थे। अंग्रेज़ों ने मलंग मजनू शाह मदारी के हथियारों का ज़िक्र करते हुए लिखा है कि अजीबो–गरीब हथियार भेला हुआ करते थे, इसको रस्सी में घुमा कर जब फेंकते थे और इसमें से आग बरस्ती थी।

गोरिल्ला जंग को आम तौर पर सबे खून मारने को कहते हैं, मदारिया मलंगो ने गोरिल्ला जंग के तरीके को अख्तियार कर लिया था। दुनिया में सबसे तेंज़ गोरिल्ला जंग की इजात करने वाले यही मदारिया सिल सिले के मलंग मजनू शाह मदारी थे। मदारियों के लश्कर का अंग्रेज़ सरकार और इसकी ईसाई मशीनरीज़ से मुक़ाबला सन् 1763 ई0 में हुआ यानी के नवाब सिराजुददौला जंग प्लासी के शिकस्त के 6 साल बाद अंग्रेज़ो से जंग शुरू हो गई।

शैतान "लार्ड कलाईयो" इस वक्त अग्रेज़ों का पहला गवर्नर जनरल बन कर बंगाल में आया था। और ढाका में अंग्रेज़ "लस्टर" वहाँ का सरकारी इन्चार्ज था। सन्1763 ई0 मे मलंग मजनू शाह मदारी की क़यादत में सख़्त हमला किया गया और अंग्रेज़ी फ़ौज शिकस्त खाकर भाग खड़ी हुई और

सरकारी कोठी पर मलंग मजनू शाह मदारी की फ़ौज का कब्ज़ा हो गया। अंग्रेज़ इन्चार्ज "लस्टर" इस क़दर बदहवास हुआ कि वह कस्ती में सवार हो कर ढाका से फ़रार हो गया। "जनरल लार्ड कलाईयो" और तमाम अंग्रेज़ अधिकारियों ने अंग्रेज़ इन्चार्ज लस्टर की इस बुज़दिली पर सख़्त नाराज़ होकर "लस्टर" को बहुत फठकारा।

लेखक फारूक़ अरगली और शेख़ मोहम्मद इकराम ने अपनी–अपनी तारीख़ की किताबों में लिखा है कि अंग्रेज़ अपने दुश्मन को पहले हर तरह से बदनाम करते थे ताकि कोई इनका मद्दगार इमदाद के लिए न आये और दुश्मन को सिवाये बदनामीं के कुछ हाथ न लगे। "गवर्नर जनरल लार्ड कलाईयो" बहुत ही शातिर दिमॉग था जिसे अपने से अपनों को लड़ाने में महारत हासिल थी, लेकिल उसको सैय्यद, मदारियों से बहुत परेशानी थी, इस लिए कि ख़ानक़ाही लोग दीन इस्लाम का पाठ पढ़ाने वाले मोअल्लिम क़लम के वजाये हाथों में तलवार लिए अंग्रेजी सरकार के सामने दीवार बने खड़े थे।

तारीख़ ने इनके चँद नाम सुरक्षित किये हैं जो इस तरह हैं, मलंग मूसा शाह मदारी, मलंग पीर गुल शाह मदारी, मलंग सुभानी शाह मदारी, मलंग करीम ख़ॉ मदारी, वगैरा यह मलंग अपने वक़्त के कहीं न कही के तकियादार ख़ान क़ाह वाले थे, ये लोग मुजाहिदीने आज़ादी के सही मानों में तारीख़ के बहुत ही .खुसूसी व्यक्तित्व के मालिक थे सन् 1775 ई0 को दीनापुर का अंग्रेज इन्चार्ज जो कि सुपरवाईज़र था अपनी रिपोर्ट में ईस्ट इन्डिया कम्पनी को लिखता है कि तकियादार ख़ानक़ाही मलंग मजनू शाह मदारी 5000 का बड़ा लश्कर लेकर सूबे में दाख़िल हो चुका है।

Scanned with CamScanner

सन् 1769 ई0 में अंग्रेज़ी फौज जो तमाम फौजी सामान व हथियार से मज़बूत थी उनका मुक़ाबला लौरंग के पास हुआ जिसमें फिरंगी फ़ौज को मुँह की खानी पड़ी और "लेफ्टीनेन्ट केत" इस जंग में मारा गया। सन् 1771 ई0 में अंग्रेज़ अफसर सहित कप्तान "रेन्टल" पटना कम्पनीं को सूचना देते हुए लिखता है कि मलंग मजनू शाह मदारी 1000 सिपाहीयों के साथ यहाँ पर मौजूद है। यह सरकारी रिपोर्ट मिलते ही ईस्ट इन्डिया कम्पनी के गवर्नर जनरल लार्ड कलाईयो ने फौरन एक फ़ौजी दस्ता मुर्शिदाबाद से दो फ़ौजी दस्ते रंग पुर से इन ख़ान क़ाहियों, मदारियों के लश्कर के ख़िलाफ़ फ़ौजी दस्ते तेज़ी के साथ रवाना किये गये ताकि हमेशा के लिए सिर दर्द ख़त्म किया जा सके। इस जंग में "लेफ्टीनेन्ट फलधन" इन अंग्रेज़ी फ़ौज का कमॉण्डर था। तकियादार मुजाहिदीन का लश्कर गोविन्द गढ़ के पास सवामील के फ़ासले पर काजी पाड़ के क़रीब दो झीलों के दरमिंयान रूका हुआ था। लेफ्टीनेन्ट फलधन ने अचानक लश्कर पर हमला कर दिया चारो तरफ़ से अंग्रेज़ो के हमलों के जवाब में मुजाहिदो के लश्कर ने ख़ामोशी अख़्तियार करली मलंग मजनू शाह मदारी का लश्कर घोड़ो पर सवार होकर मस्तानगढ़ की जानिब निकल गये।

सन् 1786 ई0 में मोगरा की जंग में मलंग मजनू शाह मदारी और लेफ्टीनेन्ट वरीनान की फौजों के मध्य बहुत ही घमासान जंग हुई जिसमें अंग्रेज़ सेना को काफी जानी नुकसान उठाना पड़ा परन्तु इस जंग में बाबा मजनू शाह मलंग मदारी बुरी तरह से घायल हो गये। मलंग मजनू शाह मदारी दुश्मनों का घेरा तोड़ कर सुरक्षित स्थान पर तो पहुॅच गये परन्तु उनके ज़ख़्म ठीक न हो सके और मलंग मजनू शाह

Scanned with CamScanner

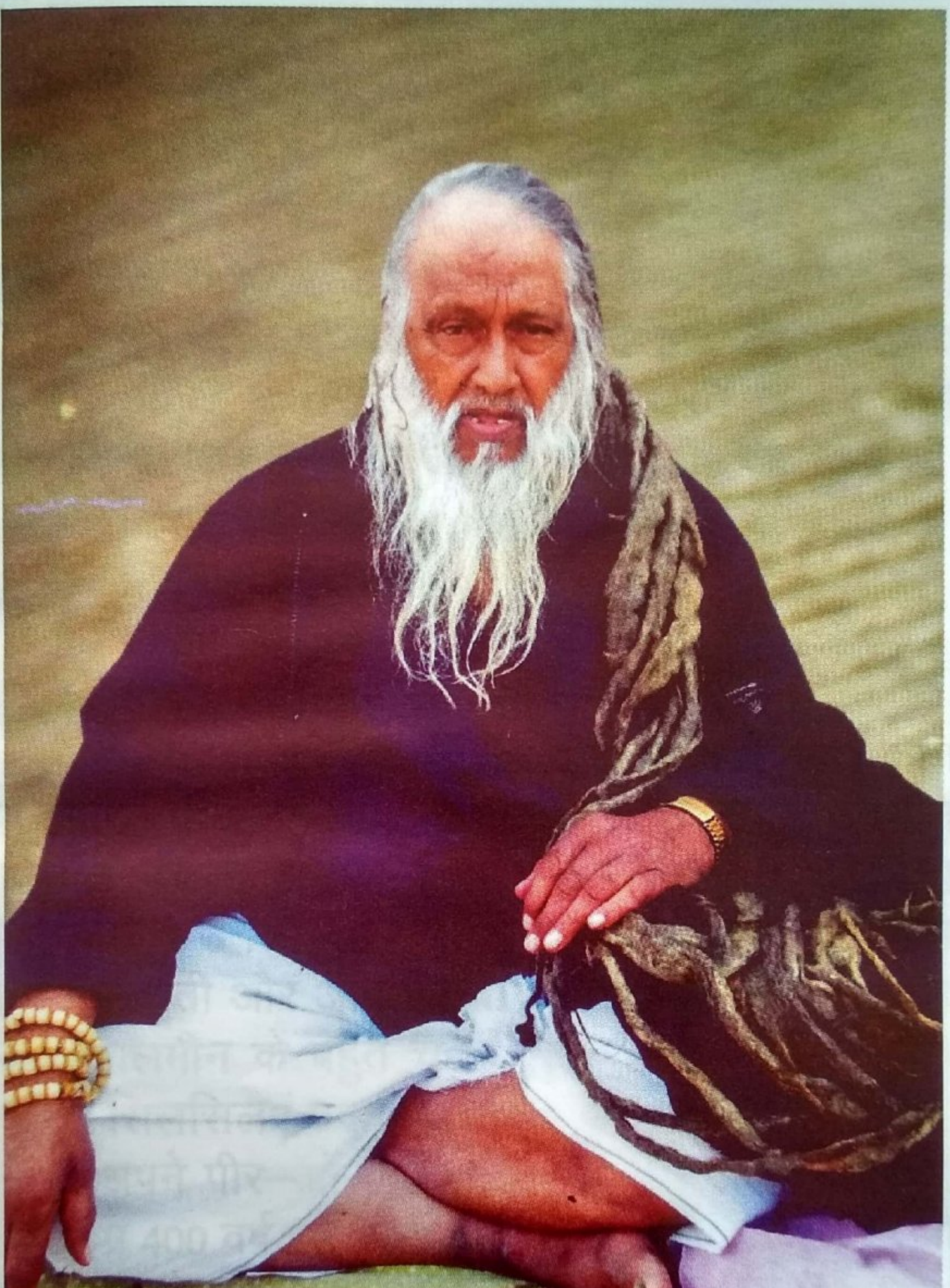

बाबा मासूम अली मलंग

Scanned with CamScanner

मदारी वहाँ से मकनपुर शरीफ़ चले गये तथा वहीं पर इस दुनिया फ़ानी को अलविदा कहा उनकी मज़ार मकनपुर शरीफ़ में बनी हुई है।

मलंग किसको कहते हैं?

शब्द "मलंग" यह सिलसिलए मदारिया का है, जिसको लोग आम तौर पर बोलते हैं। मलंग सिर्फ़ सिलसिलए मदारिया में ही होते हैं। मलंग हज़रात सूफ़ी–सन्त होते हैं, हर समय ख़ुदा की तपस्या में विलीन रहतें हैं। हज़रत सैय्यद बदी उद्दीन ज़िन्दा शाह मदार (रजि0) से चार गिरोह जारी हुए।

1– गिरोह ख़ादिमान

2– गिरोह दीवानगान

3– गिरोह आाशिकान

4– गिरोह तालिबान

मलंगान का ताल्लुक गिरोह दीवानगान व आशिकान से है। हज़रत ग़ौस–ए–पाक के भान्जे हज़रत जमाल उद्दीन का विसाल बचपन शरीफ़ में हो गया तो हज़रत सैय्यदना कुत्बुल मदार ने उनको यह कहते हुए कि उठो जमाल उद्दीन जाने मन जन्नती और आप ज़िन्दा हो गये और आप सरकार मदारूल आलमीन के बहुत चहीते मुरीद और ख़लीफ़ा हुए। आप ही से सिलसिलए मदारिया गिरोह दीवानगान जारी हुआ। आपने भी अपने पीर–ओ–मुर्शिद की तरह विवाह नही किया, आप की उम्र 400 वर्ष हुई। एवं गिरोह आशिकान हज़रत काज़ी मुतहर कल्ला शेर (रह0) से जारी हुआ।

एक बार सरकार मदारूल आलमीन ने अपना हाथ हज़रत जाने मन जन्नती (रह0) के सिर पर रख दिया जिसकी बिना पर आपने ज़िन्दगी भर बाल नहीं कटवाये वह इस लिए

कि बाल कटकर नीचे गिरेंगें, बालों की बेहुरमती होगी यह आदाबे मोहब्बत है।

यह मलंग हज़रात अपने पीर–ओ–मुर्शिद (गुरू) हज़रत जमाल उद्दीन जाने मन जन्नती (रह0) की तरह अपने बाल नही कटवाते हैं। यह मलंग लोग बहुत ही ब कमाल होतें हैं।

हिन्दुस्तान में हज़ारो मलंग गुज़रे हैं जिनमें बहुत प्रसिद्ध मलंग हज़रत मजनू शाह मदारी जिनकी मज़ार कस्बा मकनपुर शरीफ़ में है, मलंग हज़रत हाजी अब्दुलर्रहमान (मलंग बाबा) कल्याण, मुम्बई, मलंग हज़रत हाजी अली दरियाई, जिनका मज़ार मुम्बई मे समुंद्र के अन्दर एक टीले पर बना है, जिनको दुनियाँ हाजी अली के नाम से भी जानती है।

मलंग हज़रात अपने बाल बहुत लम्बे रखते हैं इस दौर में भी मलंग सातगज़, दस गज़ व बारह गज़ तक के बाल रखने वाले मौजूद हैं।

मलंग हज़रात आबादी से दूर जंगलों बियाबानों में रात दिन अल्लाह की इबादत में विलीन रहते हैं। अगर इन मलंग हज़रात को देखना है तो उर्स कुत्बुल मदार कें मौके पर मकनपुर में देख सकते हैं।

Scanned with CamScanner

मदारिया सिलसिले से बैत जंगे आज़ादी कें पठान मुजाहिदीन लश्कर

हवाला "गद्दारों की मुख़्तसर तारीख़" में लेखक मेवालाल गुप्ता मौर्या ने अपनी तहरीर में तारीख़ी किताब

हिन्दुस्तान के जंगें आज़ादी कें मुसलमान मुजाहिदीन –

के पेज संख्या 144 से 145 पर लिखा है कि सन् 1757 से लेकर सन् 1858 ई0 तक मदारिया सिल सिले वाले किसी न किसी शक्ल में अंग्रेज़ों से लड़ते रहे और फ़िरंगी सरकार भी मदारिया सिल सिले वालों का क़त्ले आम कर और फॉसियों पर लटकाते रहे, लेकिन अंग्रेज़ सरकार की .गुलामीं करना नही, यही वजह थी कि मदारिया सिल सिले वाले अंग्रेज़ फ़िरंगी सरकार की नींद हराम किये हुए थे। जिन उलमायेदीन का जिक्र जंगें आज़ादी में शामिल होने का मिलता है दरअसल वह मदारिया सिल सिले के आलिमेंदीन व उलमा का ज़िक्र है। क्यों कि सन् 1866 ई0 के बाद ही देवबन्द, बरेलवी और अहले हदीस मकतबे फ़िक्र के लोग पैदा हुए, और सन 1866 के पूर्व जो भी लेख मिलता है वह दीनी तबलीग़ का मदारिया सिल सिले वालों का जिक मिलता है। हिन्दुस्तान में सबसे बड़ा सिल सिला मदारिया था इसके बानी हज़रत सैय्यद बदी उद्दीन अहमद शाह मदार मकनपुरी है।

मशहूर लेखक मेवालाल मौर्या ने लिखा है कि दूसरी जंगे आज़ादी सन् 1857 में शुरू हुई थी। इन्कलाबियों ने इस के लिए 13 मई 1857 की तारीख़ मुकर्रर की मगर आज़ादी के

Scanned with CamScanner

दीवानों को सब्र कहाँ था, उन्होंने 10 मई 1857 को ही मेरठ में जंग शुरू कर दी।

10 मई 1857 की आज़ादी की लड़ाई शुरू होने की ख़बरे पूरे मुल्क में बड़ी तेज़ी से फैल रही थी। बरेली, पीलीभीत, शहजहाँपुर वगैरा में बहुत ज़्यादा लोगों में जोश पैदा हो गया और अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ जंगे आज़ादी में कूद पड़े, बरेली के अहमद खॉ पठान मदारी वल्द रहमत खॉ पठान मदारी इस वक्त सदरो के सदर के ओहदे पर थे जनरल वक्तख़ान पठान रोहिलिया मदारी के मशवरे पर अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ बगावत का झंडा बलन्द कर दिया । बहुत से अंग्रेज़ो का क़त्ल कर दिया गया और इसमे बरेली के कई वतन परस्त जांबाज़ो ने जामें शहादत नोश किया, कुछ के नाम उल्लेखित हैं जिन्होंने ख़रका गॉव मे 11 मई 1857 को अहमद खॉ मदारी, बहादुर खॉ पठान मदारी, की कमान में लड़ते हुए अंग्रेज़ो के छक्के छुड़ा दिये थे और बरेली, पीलीभीत, बदायूँ, शाहजहाँपुर वगैरा से अंग्रेज़ो को भगा दिया था। इंकलाबी मदारी बटालियन ने फ़रवरी 1858 तक अंग्रेज़ो के पैर दोबारा इलाक़े में जमने नही दिये।

इस छोटे से लेख में सिर्फ मौजा ख़र्का तहसील बरेली जो अब ज़िला बरेली के नाम से जाना जाता है मदारिया सिल सिले से बैत यह पठान अपने नाम के आगे मदारी लिखते और अपने आप को मदारिया सिल सिले से वाबस्ता रखते थे।

इनमें शहीद होने वाले जवान जो 5 मई 1858 को खर्का गॉव में अंग्रेज़ो के साथ लड़ते हुए शहीद हुए थे उनमें रोहिला पठान काले खॉ भट्टी मदारी, रोहिला पठान ऐजाज़ खॉ भट्टी मदारी, रोहिला पठान तल्लू खॉ भट्टी मदारी, रोहिला पठान इन्दर खॉ भट्टी मदारी थे। तथा 6 मई 1858 को इसी खर्का गॉव के रोहिला पठान अज़ीज़ खॉ भट्टी मदारी, रोहिला पठान

Scanned with CamScanner

करीम खॉ भट्टी मदारी, रोहिला पठान शाकिर खॉ भट्टी मदारी व रोहिला पठान अशरफ़ खॉ भट्टी मदारी शहीद हो गये ।

तथा रोहिला पठान मेहराब खॉ भट्टी मदारी सख़्त ज़ख़्मीं हो गये थे और कुछ दिनो के बाद ज़ख्म न ठीक होने की वजह से वफ़ात हो गयी, जिस मकाम पर सख़्त ज़ख़्मीं हुए थे और जिस सरज़मीन पर इनका .ख़ून गिरा था, इन्होंने अपने ख़ानदान वालों को नसिहत कर दी थी कि इंतिकाल के बाद उसी जगह पर कब्र बनाई जाये वसियत के मुताबिक इनकी कब्र उसी स्थन पर बनाई गयी ।

-:मकनपुर शरीफ़ और जंगे आज़ादी:-

मकनपुर शरीफ एक छोटा सा कस्बा है परन्तु यहाँ के बहादुर योद्धाओं ने स्वतन्त्रता संग्राम मे बहुत बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया था। यधयपि इस विषय में स्थानी व्यक्तियों के अलावा अन्य लोग बहुत कम जानते हैं तीन अंग्रेज़ भाई थे जो "मेक्स वेल ब्रदर्स के नाम से प्रसिद्ध थे। यह तीनो भाई नील की खेती करते थे, इनमे से एक भाई पीटर मैक्स वैल मकनपुर मे रहता था।

मदार पाक की दरगाह शरीफ़ के उत्तर में उसकी कोठी थी, जिसके खंण्डहर आज भी मौजूद हैं। यहाँ पर नील की खेती करता था।

देश मे क्रान्ती की सूचना पाते ही सन् 1857 में अंग्रेज़ो से दुश्मनी के प्रभाव मे सैय्यद रूहुल आज़म मिंया के नेतृत्व में उनके क्रान्तीकारी साथियों ने पीटर मैक्स वेल की हत्या कर दी थी। इससे नाराज़ होकर गोरी सरकार के सैनिको ने सैय्यद रूहुल आज़म मियां और उनके साथियों पर हमला बोल दिया, जिस पर काफ़ी भयानक जंग हुई, इस जंग मे "सैय्यद रूहुल

आज़म मियां" और "सैय्यद नत्था मिंया" को अंग्रेज़ फ़ौज ने गोली मार दी तथा इस जंग में इनके सैकड़ो साथियों कों भी गोलियों से भून दिया गया इन के एक साथी "सैय्यद शाह अबुल फतेह बॉगी मियां" जो गिरफ्तार हो गये थे उनको कैद कर काले पानी की सज़ा सुनाई गयी। सैय्यद रूहुल आज़म मियां की कब्र दरगाह शरीफ़ के उत्तरी फाटक के बहार सीधे हाथ की ओर और सैय्यद नत्था मिया की कब्र दक्षिणी फाटक के बाहर बनी हुई है।

सैय्यद रूहुल आज़म मिंया और नत्था मिंया की भूसम्पत्ति अंग्रेज़ सरकार ने ज़ब्त कर नीलाम कर दी। सैय्यद रूहूल आज़म मियां और नत्था मियां के वंशज आज भी मकनपुर शरीफ़ में निवास कर रहे हैं।

अंग्रेंज़ व्यापारी पीटर मेक्सवेल की हत्या की मुखबरी करने वाले और मिस्टर जे0 चैडलर को और पीटर मेक्सवेल के भाई जो मकनपुर में गुमाशता थे को बचाने के उपलक्ष में बिहारी लाल शुकला सुपुत्र झाऊ लाल निवासी डुॅण्डवा को इनाम में हसनपुर, धनवापुर (भोगनीपुर) में और बैकुंढपुर की जागीर मिली तथा मकनपुर के ही शेख़ झब्बू और तमीज़ उद्दीन को मकनपुर, अरौल व मालीकुई (बिल्हौर) में जागीर मिली।

सैय्यद ख़ान आलम मिंया

स्वतन्त्रता संग्राम के प्रमुख सैनानी ख़ान आलम मिंया थे जो सर्व प्रसिद्ध सैनानी नानाराव पेशवा (बिठूर) के मित्र थे और वकीले दुआ भी, नानाराव पेशवा अपने मित्र से मिलने मकनपुर शरीफ़ आया करते थे, अपने इन्हीं पुरोहित मित्र के द्वारा बारगाहे मदारूल आलमीन में दुआ माँगते थे।

स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख सैनानी सैय्यद ख़ान आलम मिंया के बीच पत्र व्यवाहर होता था जिसकी सूचना देशद्रोहियों द्वारा अंग्रेज़ अफ़सरों तक पहुॅचा दी गई जिस पर अंग्रेज़ फ़ौज मकनपुर के लिए तेज़ी के साथ तमाम फ़ौजी लाव लश्कर के साथ रवाना कर दी गयी। तथा मकनपुर शरीफ़ आकर अंग्रेज़ फ़ौज ने सैय्यद ख़ान आलम मिंया और उनके साथियों पर हमला बोल दिया, अचानक हुए अंग्रेज़ो के इस हमले से सैकड़ो लोग शहीद हो गये और 105 लोग गिरफ्तार किये गयें, गिरफ्तार किये गये क्रान्तिकारियों को जहाँ पर मेला तहसील बनी हुई है उस स्थान पर एक हथनी इमली के नाम से मन्सूब इमली का पेड़ था उसी पर एक साथ 105 मुजाहिदीने आज़ादी को फांसी पर लटका कर मौत के घाट उतार दिया गया ।

परन्तु सैय्यद ख़ान आलम मिंया ज़ख़्मीं हालत में अपने कई साथियों के साथ जंग में घेरा तोड़ कर निकलने में कामियाब हो गये और घोड़े पर सवार होकर अपने मित्र नानाराव पेशवा (बिठूर) के पास पहुॅच गये।

इतिहास साक्षी है स्वतन्त्रता संग्राम के असफ़ल होने पर नानाराव पेशवा जो भूमिगत हो गये थे उनका कुछ पता न चला और उनके मित्र सैय्यद ख़ान आलम मिंया अपना वतन

Scanned with CamScanner

छोड़कर हरियाणा के गुड़गॉव के इलाका अलवर चले गये और वहीं पर उनका मज़ार बना हुआ है।

सैय्यद ख़ान आलम मिंया जो ज़मींदार भी थे उनकी सारी भू–सम्पत्ति, कोठी व बाज़ार गंज आदि गोरी सरकार ने ज़ब्त कर नीलाम कर दी बाज़ार गंज आज भी है जो ग्राम समाज मकनपुर के अधिकार क्षेत्र में है। सैय्यद ख़ान आलम मिंया की हवेली जिसके कुछ हिस्से पर आबादी, कुछ भाग पर कन्या प्राईमरी पाठशाला, पशु चिकित्सालय व पंचायत भवन बना हुआ है। सैय्यद ख़ान आलम मिंया के वंशज आज भी मौजूद है यहॉ पर निवास कर रहे है, इनके ख़ानदान को हवेली ख़ानदान कहते है जो सबसे बड़ा ख़ानदान है। हालॉकि अंग्रेज़ सरकार का यह .जुल्म–ओ–सितम अकेले खान आलम मियां या मकनपुर शरीफ़ के सय्यदों पर ही नही हुआ बल्कि सन् 1857–1858 के इस स्वतंन्त्रता संग्राम में जनरल हयूहवीलर द्वारा नाना साहब का साथ देने वाले सभी लोगों की सम्पत्ति एवं जायदादें ज़ब्त कर ली गई जिनमें शिवराजपुर के राजा सती प्रसाद एवं बिन्नौर तथा नार के राजाओं का समस्त इलाका ज़ब्त कर लिया गया। इसके अतरिक्त जिन अन्य लोगों की ज़मीदारियॉ ज़ब्त हुई उनमें सैय्यद खान आलम मियां सहित 61 ज़मीदारों की मुसललम तथा 79 लोगों की आँशिक रूप से चल–अचल सम्पत्तियाँ ज़ब्त करली गई थी।

इस प्रकार अंग्रेजों को उन लोगों में जिन्हों नें उनके प्रति राजभक्ति दिखलाई थी पुरूस्कार बॉटने के लिए काफ़ी इलाक़ा मिल गया था तथा ग़दर के समय जिन लोगों ने अंग्रेजों की किसी प्रकार सहायता की थी उनको समय आने पर ज़मींदारी और नक़द रूपये के रूप में पुरूस्कार दिया गया। इन पुरूस्कार पाने वालों में सैय्यद ख़ान आलम मिंया और

नानाराव पेशवा के मध्य पत्र व्यवाहर की मुखबरी करने वाले मकनपुर के ही मुखबिरों आज़म व छेदा को इस सेवा के लिए रसूलाबाद, समायूँ व शंकरपुर में जागीर मिली ये सभी गॉव शिवराजपुर के राजा सतीप्रसाद के गॉव थे तथा इसी कार्य के लिए बरंण्डा के गया प्रसाद को नकद रूपये का इनाम दिया गया।

सन् 1857 के बाद का मकनपुर शरीफ़

जैसा कि आप पढ़ चुके हैं कि 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम में मकनपुर शरीफ़ में कई बार अंग्रेज़ो की जुल्मी सरकार ने यहॉ के शहज़ाद गान मदारूल आलमीन पर हमले कर के काफ़ी जानी–माली नुकसानात पहुॅचाये। सैकड़ो लोगो ने जामेशहादत पिया, और 105 लोगों को एक साथ फ़ॉसी पर लटका कर मौत के घाट उतार दिया गया, कुछ को काले पानी की सज़ा दी गयी। जिससे यहाँ के सीधे सच्चे लोग जो बिलकुल बेसरो सामान थे, न कोई लड़ने को हथियार थे, न कोई तन्ज़ीम या लीडर था, जो इनकी अगुवाई करता। जो इस कस्बे के ज़मीदार या ताल्लुकदार तथा जवान थे वह सन् 1857 ई0 की आज़ादी की जंग मे अधिकतर गोरी सरकार के .जुल्म का शिकार हो गये थे।

कस्बे में अंग्रेज़ो की ज़ालिम हुकूमत का भय पूरी तरह से व्यापत था, जिससे ख़ौफ़ज़दा होकर काफ़ी परिवार अपना सब कुछ छोड़ कर यहॉ से पलायन कर गये जिसमें कुछ लोग अपने परिवार के साथ हैदराबाद, भोपाल, लाहौर, पेशावर और करॉची आदि स्थानों पर आज भी निवास कर रहे हैं तथा न

Scanned with CamScanner

जाने कितने परिवार अज्ञात स्थानों पर चले गये एवं अधिकतर परिवार यहीं पर निवास करते रहे जिनके वंशज आज भी यहाँ रहते हैं।

लेकिन अंग्रेज़ो की ज़ालिम सरकार द्वारा भू–सम्पत्तियाँ अपने कब्ज़े में ले लेने के कारण तथा घरों को उनके सिपाहियों द्वारा लूट लेने की वजह से बाक़ी बचे लोगों की माली हालत बद से बदतर हो गई।

समय गुज़रता गया और एक समय आया सन् 1947 ई0 में जब भारत देश आज़ाद हुआ और यहाँ के लोगों को आस बन्धी कि हमारी कुर्बानियों का सिला हमारी सरकार देगी लेकिन यहाँ के लोगों के पास राजनैतिक या आर्थिक ताक़त न होने के कारण, इस बस्ती जो कानपुर ज़िले का सरहदी क्षेत्र है जिसकी प्रसिद्धि भारत के अलावा दूसरे देशों में भी है। इस स्थान पर हज़रत सैय्यद मदारूल आलमीन (रजि0) की दरगाह शरीफ़ भी है, जहाँ पर देश–विदेश से वर्ष भर एवं उर्स व मेला के अवसर पर दर्शनार्थी आया करते हैं, जिनकी संख्या उर्स व मेला के समय एक अनुमान के अनुसार लगभग 15 से 20 लाख लोग एक साथ इकट्ठा होते हैं। जब कि हिन्दी कलेन्डर के अनुसार माघ माह मे लगने वाले मेला बसन्त जो इस समय 18 दिन तक चलता है, इसकी एक कमेटी भी है जिसके प्रशासक कानपुर नगर के ज़िलाधिकारी होते हैं, परन्तु इतना सब कुछ होते हुए भी इस कस्बे की हालत में सुधार के प्रयास भारत सरकार या राज्य सरकार द्वारा "पर्याटन स्थल" के रूप में नहीं किया गया।

भारत का इतिहास लिखने वालों ने यहाँ के लोगों की कुर्बानियाँ वह चाहे 1763 ई0 से सन् 1800 ई0 तक इस ख़ानक़ाह के मलंग बाबा मजनू शाह मदारी हो जो 37 वर्ष तक

Scanned with CamScanner

बंगाल, बिहार, उड़ीसा की धरती पर एक बड़ी ताक़त के रूप में देश की आज़ादी के लिए लड़ते—लड़ते शहीद हो गये हों, चाहे पूरे हिन्दुस्तान में मदारिया सिल सिले के अनुयायी (मुरीदीन) देश के लिए कुर्बान हो गये हों, चाहे इस कस्बे के उल्मा व सैय्यद ज़ादो ने अंग्रेज़ो से जंग कर जामे शहादत पिया हो।

यह इतने बड़े—बड़े संग्राम जो दो—चार साल नहीं बल्कि सन् 1763 ई0 से मुल्क आज़ाद होने तक हुए हों, न जाने क्यों भारतीय इतिहास कारों को यह सब नज़र नही आया या जान कर नज़र अन्दाज़ किया।

मेंरा विचार है यदि भारतीय इतिहास कार मदारी उलमा, मदारी मलंगो, मदारीया सिल सिले के मुरीदीन, और शहज़ादगान मकनपुर शरीफ़ की देश के स्वतन्त्रता संग्राम में दी गयी कुर्बानियों पर ग़ौर करे तो भारतीय इतिहास में मकनपुर शरीफ़ का नाम स्वर्ण अक्षरों से लिखा जायेगा। जिसके बगैर भारतीय इतिहास मुकम्मल नहीं हो सकता।

आज के मकनपुर की सर्वे रिपोर्ट

ग्राम— मकनपुर, **परगना व तहसील**—बिल्हौर **ज़िला** कानपुर नगर।

ग्राम की सीमा— इस ग्राम के पुर्व में ग्राम इलियास पुर, पश्चिम में ग्राम पलिंया बु.ज़ुर्ग, उत्तर में ग्राम खाड़ा मऊ तथा दक्षिण में ग्राम रौंगांव स्थित है। यह ईसन नदी के किनारे पर स्थित है।

आवा—गमन— तहसील मुख्यालय बिल्हौर से 6 मील पश्चिम तथा अरौल रेलवे स्टेशन से 21/2 ढाई मील दक्षिण की और मकनपुर रोड होकर ग्राम को जाना पड़ता है।

जाति और धर्म– ग्राम में अधिकतर मुसलमानों की बस्ती है, जिसमें सर्वाधिक मदार पाक के वंशजों की आबादी है तथा हिन्दुओं में वैश्य, पाल, बृहामण, लोधी व अनुसूचित जाति आदि की भी बस्ती है।

मुस्लिम लोग इस्लाम धर्म के अनुयायी हैं तथा हिन्दु लोग सनातन धर्म को मानते हैं।

भाषा तथा शैली– इस बस्ती में बातचीत करने पर हिन्दु–मुस्लिम में भेद करना आसान नहीं हैं। क्यों की फ़ारसी मिश्रित यहाँ की जबान हर आम–ओ–ख़ास लोगों की बोली बन चुकी है।

यहाँ पर हिन्दी, उर्दू, फारसी, अरबी व अंग्रेज़ी भाषा लिखने व बोलने में इस्तेमाल की जाती है।

जनसंख्या– इस बस्ती की जनसंख्या वर्ष 2011 की जनगणना के आधार पर लगभग 10 हज़ार है।

ग्राम वासियों की आर्थिक दशा– ग्राम मकनपुर में रहने वाले अधिकतर लोगों की आर्थिक दशा अच्छी है, क्यों कि यहाँ पर हर व्यक्ति परिश्रमीं तथा मेहनती है, अधिकतर लोग व्यवसाये की ओर आकर्षित हैं तथा कुछ ही कास्तकार खेती पर निर्भर हैं। इस लिए यहाँ के लोगों की आर्थिक दशा अच्छी है तथा .खुशहाल हैं।

खेती का प्रकार– यहाँ के कृषक वर्ष में तीन फसलों का उत्पादन करते हैं।

(1) रवि (2) ख़रीफ़ (3) ज़ायद

रवि– रवि की फ़सल में गेहूं, तम्बाकू, चना, आलू आदि

ख़रीफ़– ख़रीफ़ की फ़सल में प्रमुखता से अरहर, मक्का, ज्वाँर, बाजरा, उर्द, मूंग आदि

ज़ायद– ज़ायद की फ़सल में तरबूज़, ख़रबूज़ा, ककड़ी आदि

फसलों का उत्पादन करते हैं।

मुख्तसर सी बात में चाहे यूँ कहलो कि मकनपुर शरीफ़ धार्मिक दृष्ट कोण से तो अपना स्थान अलग रखता ही है साथ ही विश्व भर में प्रसिद्ध यह तीर्थ स्थल जहाँ की मिली जुली संस्कृति अपने आप में क़ौमी एकता की बेमिसाल ख़ासियतें समेटे हैं।

यहाँ के लोग आज भी जिस भाई चारे के साथ एक दूसरे के धार्मिक त्योहारो में असमन्जस बनाये रखते हैं ऐसे में यह समझपाना खासी परेशानी का सबब है कि कौन किस फ़िरके को मानने वाला है। देश व प्रदेश मे कई बार भड़क चुके सम्प्रदायीक उन्माद के बाद भी मकनपुर शरीफ़ पूरी तरह अपने स्थान पर मह.फूज़ है। हर कोई व्यक्ति दीनी तालीम व पारिवारिक सभ्यता का क़ायल है।

मेहमान नवाज़ी करना तो कोई यहाँ के लोगों से सीखे फ़ारसी मिश्रित ज़बान से शालिनता पूर्वक अपने मेहमान का ख़ैर मक़दम करने में यहाँ के निवासी अपनी शान समझते हैं। यहाँ की मेहमान नवाज़ी का कोई जोड़ आज के मतलब परस्त युग में कहीं दिखाई नहीं देता।

जिस लिए "मदार पाक" की शोहरत देश व विदेश में है,, उस अमन–ओ–इंसानियत को फैलाने का दायित्व की पुर्ति यहाँ के निवासी आम जीवन में भी करते हैं।

मुल्क के राजनैतिक नेताओं और ढोंगी धर्मवलाम्बियों को यहाँ के निवासीयों से सबक लेना चाहिए, कि देश की एकता और अखंडता क़ायम करने के लिए, नफ़रत की खाई खोदने से बाज़ आयें।

हज़रत सैय्यद मदार पाक की दरगाह पर आने के बाद इतनी सीख आम आदमी को सार्वजनिक जीवन मे उतार कर

क़ौमी एकता क़ायम करने की दिशा में कार्य करना चाहिए कट्टर पंथियों द्वारा समाज में फैलाये गये नफ़रत के ज़हर को भूल कर जब मदार पाक की दरगाह में हाज़िरे दरबार होते हैं, तब न जाने कितने कट्टर पंथी यहाँ के मोहब्बत और इंसानियत के पैग़ाम को जानके सारा कट्टर पंथ भूल कर एक धारा में जुड़ जाते हैं।

जहाँ सदियों से हिन्दु मुस्लिम एकता का परचम लहराता है

लेखक–अनिल अग्निहोत्री मेला स्मारिका 1998 में अपने लेख में अपने भाव इस प्रकार प्रकट करते हैं–

मेंले महज़ एक मज़े का नाम नहीं, वरना हमारी सॉस्कृतिक विरासत के वाहक स्मृति चिन्ह और कल्पना शक्ति के विशाल भंण्डार हैं। जीवन की जटिलताओ़ं के मध्य ज़िन्दगी में मौज–मस्ती, आमोद प्रमोद के साथ मनोरंजन और सामाजिक वातावरण की सृष्टि के लिए मेलों का शुभारम्भ हुआ था। इन मेंलो की शानदार परम्परा में आदि काल से चला आ रहा उत्तर भारत का प्रसिद्ध मेला मकनपुर अपने आप में अद्धितीय है। हमारी गंगा जमुनी साझा संस्कृति विरासत के जीवन स्मारक के रूप में कानपुर नगर के मकनपुर कस्बे में लगने वाले प्राचीन मेले ने अतीत की अनेक घटनाओं को चश्मदीद देखा है, हज़रत रूहूल आज़म बन्धुओं सहित 1857 के गदर में यहाँ के सैकडो लोगो ने प्राणोत्सर्ग कर सूफ़ी सन्त हज़रत सैय्यद बदी उद्दीन ज़िन्दा शाह मदार की कर्म भूमि को और अधिक गौरवान्वित किया है। शहीदों की सरज़मीं पर

जनता का उमड़ता जन सैलाब हमारी क़ौमी एकता का परचम लहराता चला आ रहा है।

सूफ़ी परम्परा के पोषक सन्त हज़रत सैय्यद बदी उद्दीन ज़िन्दा शाह मदार के मेले का प्रमुख आकर्षण बसन्त पंचमी का पर्व होता है। इस दिन बाबा की मुकद्दस दरगाह पर हाज़री लगाने हेतु उनके लाखों भक्तों का सैलाब उमड़ पड़ता है। हिन्दु जन मानस अपनी श्रद्धा और मनौती के अनुरूप यहाँ बाबा के आस्ताने पर अपने बच्चो के मुंडन और अन्न प्रासन जैसे सनातन साँस्कारिक कृतय सम्पन्न कराते है। बाबा के मेंले में हाज़री देने भारत ही नहीं बल्कि बंगलादेश, पाकिस्तान, सीरिया, अरब, ईरान, अफ़गानिस्तान आदि से भी बड़ी सेख्या में बाबा के अनुयायी मकनपुर आकर उन्हें अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं। मलंगो का तो प्रति वर्ष मेले में वृहद सम्मेलन होता है। कानपुर नगर की सामाजिक जीवन की हलचल का नाम है मेला मकनपुर। सदभावना, संस्कृति, धर्म, उपयोगिता और मनोरंजन के पंच तत्व ने मिलकर इस अनूठे मेले की आत्मा है। हिन्दु मुस्लिम दोनों सम्प्रदायों के लोग इस मेले में खुल कर भाग लेकर अपना पन प्रदर्शित करते है। कानपुर नगर अनेकों बार साम्प्रदायिकता की आग में जला लेकिन मकनपुर में आबादी की दृष्टि से हिन्दुओं के अल्पसंख्यक होने के बावजूद यहाँ सर्वत्र प्रेम की ठण्डी बयार बहती रही। इस अनूठे मेले पर हिंसा और नफ़रत का कोई अप्रिय प्रभाव कभी भी दृष्टि गो चर नहीं हुआ हर धर्म के लोग आपसी मतभेद भुला कर पहले की तरह बेफ़िकी से मिलते जुलते और भागीदारी निभाते रहे। धर्म यहाँ मज़हब के बीच कभी दीवार नहीं खड़ी कर सका यही आज तक की इस मेले की सबसे बड़ी उपलब्धि है। यही कारण है कि हिन्दु मुस्लिम

सद्भाव के प्रतीक उत्तर भारत के इस मेले को सम्पूर्ण देश में अत्याधिक ख्याति मिली है।

मेला मकनपुर शरीफ़ का इतिहास

सन् 838 हिजरी बमुताबिक 1418 ई0 में हज़रत सैय्यद बदी उद्दीन ज़िन्दा शाह मदार रज़ि अल्लाह ताआला अन्हों के विसाल के बाद यानी 17 जमादिउल अव्वल 839 हिजरी (अरबी कलेन्डर के अनुसार) उस समय हिन्दी कलेन्डर के अनुसार माघ माह में बसन्त पंचमीं का समय था तथा अंग्रेज़ी कलेन्डर के अनुसार जनवरी 1419 ई0 से सरकार मदार पाक की याद में उर्स शरीफ़ मेला का जन्म हुआ।

आप के अनुयायी देश व विदेशों में बहुत बड़ी संख्या में थे जो अनेक धर्मो के मानने वाले थे और सरकार मदार पाक का विसाल का सुनकर इस अवसर पर मुस्लिमों के अलावा अन्य धर्मो के लोग भी बड़ी संख्या में आये और हर वर्ष इसी अवसर पर मज़ार शरीफ़ पर इक्ट्ठाह होने लगे।

यह उर्स शरीफ़। मेला अरबी कलेन्डर के अनुसार 6 जंमादिउल अव्वल से शुरू होकर 17 जमादिउल अव्वल को . कुल शरीफ़ की रस्म के बाद समाप्त होता है। और चाँद देख कर उर्स शरीफ़ की तारीख़ तय की जाती थी जिससे उर्स मेले में हर वर्ष 10 दिन का अन्तर आने लगा क्योंकि आप के मानने वालो में हिन्दु धर्म के लोग भी थे जो चाँद की तारीख को न याद रखपाने के कारण उनको हिन्दी कलेन्डर के अनुसार माघ माह की बसंन्त पंचमीं की तारीख़ याद रही और हिन्दु धर्म के लोग बसन्त पंचमीं के अवसर पर मज़ार शरीफ़ पर बड़ी संख्या

में आने लगे जिस कारण इस अवसर पर भी आगे चलकर मेला का रूप धारण कर लिया और बसन्त पंचमीं के अवसर पर भी दरगाह शरीफ़ में .कुल शरीफ़ की रस्म प्रारम्भ हो गयी।

इस प्रकार तारीख़ो में 10 दिन के अन्तर के कारण वर्ष में दो मेले लगने लगे। पहला मेला जिसे बड़ा मेला कहा जाता है और उर्स शरीफ़ के नाम से भी मशहूर है जो 6 जमादिउल अव्वल से शुरू होकर 17 जमादिउल अव्वल को रात्रि में .कुल शरीफ़ की रस्म के बाद समाप्त होता है, इस उर्स की तमाम रस्में गुलपोशी, और गुस्ल मज़ार शरीफ़ के साथ 6 जमादिउल अव्वल से ही शुरू हो जाती हैं तथा 17 जमादिउल अव्वल तक रात्रि में दरगाह परिसर में उलमा हज़रात (विद्धानों) द्वारा प्रवचन किया जाता है।

परन्तु इस उर्स शरीफ़ की मुख्य तारीख़ 15, 16, 17 जमादिउल अव्वल होती है तथा 17 जमादिउल अव्वल मुख्य पर्व होता है। जिसमें कुल शरीफ़ की रस्म अदा की जाती है।

इस अवसर पर हिन्दुस्तान के अलावा अन्य देशों से दर्शनार्थी एवं अनुयायी बड़ी संख्या में आते हैं जिसमें अधिकॉश मुस्लिम धर्म के लोग होते है। तथा यह मेला फ़कीरी मेले के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि उर्स शरीफ़ के मौके पर पूरे भारत भर मे फैले हुए दीवान गान मलंग हज़रात जो मदार पाक के नाम मनसूब पूरे भारत में तकियों, चिल्लेगाहों वगैरा पर रहकर इंसानियत एवं प्रेम का पैग़ाम देते हैं। सभी मलंगान हज़रात उर्स शरीफ़ के मौके पर हज़रत सैय्यद शाहमदार रज़ि अल्लाह ताआला अन्हों की बारगाह में हाज़री देने के लिए एकत्र होते हैं और उर्स शरीफ़ के मौके पर शग़ले दम्माल की रस्म अदा करते हैं।

Scanned with CamScanner

तथा दूसरा मेला जो कलान्तर में 16 दिन लगता था जिसका मुख्य पर्व बसन्त पंचमीं है जों हिन्दु आस्था का प्रतीक है और इस मेले में हिन्दु धर्म के मानने वाले अधिकांश रूप से समलित होते हैं। तथा बसन्त पंचमी की रात्रि में भी मज़ार शरीफ़ पर कुल शरीफ़ की रस्म अदा की जाती है। इस समय यह मेला 18 दिन तक चलता है तथा मुख्य पर्व बसन्त पंचमीं ही है।

इस बात की पुष्टि "भारत की पुरातित्व सर्वे रिपोर्ट टूर का एवं वैज्ञानिक लुक प्लान सन् 1881–1882 ई0" की अपनी सर्वे रिपोर्ट में अंग्रेज़ लेखक "एसे कान्डर एलो तिया" ने लिखा है कि मकनपुर में उर्स शरीफ़ के अलावा एक मेला भी लगता है जो 16 दिन तक चलता है यह दरगाह हिन्दु और मुसलमानों में समान रूप से प्रसिद्ध है। शाह मदार विदेशों में भी अपनी ख्याति के लिए प्रसिद्ध हैं।

उर्स शरीफ़ की वयवस्था हरसए ख्वाजगान यानीं शहज़ादगान मदारूल आलमीन में से बनाई गई दरगाह कमेटी जिसे मोहतमीम दरगाह कहा जाता है के द्वारा मज़ार शरीफ़ पर चढ़ावे की आय से की जाने लगी तथा उसकी आय का हिसाब रक्खा जाने लगा दरगाह शरीफ़ के तमाम ख़र्चो को पूर्ण करने के उपरान्त जो भी आय अवशेष रहती है वह हरसए ख्वाजगान में बॉट दी जाने लगी जो रस्म आज भी चली आ रही है। तथा दूसरा मेला जो बसन्त पंचमी के अवसर पर होता है इसकी भी व्यवस्था कलान्तर में मोहतमीम दरगाह ही करते थे परन्तु आगे चलकर इस मेले को यहाँ के ज़मीदारों ने अपने हाथ में ले लिया और इस मेले में पशु मेला भी लगवाने लगें क्योंकि मेला ज़मींदारों की भूमि पर लगता था इस लिए इसके प्रबन्ध में जो भी व्यय होता था ज़मींदार मेला आय से खर्च

Scanned with CamScanner

करते थे। धीरे–धीरे इस मेले ने बड़ा रूप धारण कर लिया। इस मेले में ऊँट, घोड़ा, भैंस, गाय, बैल, बछड़ा, गधा, खच्चर व बकरी आदि की बड़ी बाज़ारें लगने लगीं तथा दुकाने भी लगने लगीं जिसमें खेल–कूद का सामान, बिसात खाना, ताँबा–पीतल के बर्तन, लकड़ी का हाथ का बना तरह–तरह का सामान जैसे गाड़ी और गाड़ी का सामान, चौखट, दरवाज़े, संदूक, तिपाई तथा घरेलू चीज़े तथा अन्य जीवन से जुड़ी तमाम सामान की दुकाने लगने लगीं। जिस कारण बहारी लोगो के अलावा क्षेत्रीय लोगों की भी संख्या बहुत आने लगी। और मेले का विकराल रूप हो जाने के कारण जब व्यवस्था जमींदारों के बस के बाहर हो गई तब सन् 1874 ई0 में ज़मींदारो ने मेला के प्रबन्ध के सम्बन्ध में तत्कालीन संयुक्त प्रान्त आगरा व अवध के अधिकारियों से एक समझौता किया कि मेले का प्रबन्ध तत्कालीन राज्य सरकार करेगी तथा मेला से होने वाली आय का दस प्रतिशत हिस्सा संयुक्त प्रान्त को मेला प्रबन्ध समिति द्वारा दिया जायेगा। और सन् 1874 ई0 में इस से सम्बन्धित नियम बनायें गये तथा इसकी सूचना आगरा एवं अवध की संयुक्त सरकार को दे दी गई।

उन नियमों में सन् 1923 में उत्तर–प्रदेश सरकार में शासन आदेश संख्या–65 / जी0 ई0 एन0 एडमिन0 / दि0 – 18–5–1923 द्वारा संशोधित किया गया संशोधन के उपरान्त इस मेले का प्रबन्ध संयुक्त राज्य सरकार के पास रक्खा तथा मेला की प्रशासनिक व्यवस्था के रूप में दस प्रतिशत गोलक फण्ड का तत्कालीन राज्य सरकार द्वारा लिया जाना था। गोलक फण्ड की शेष धन राशि को एस0 डी0 ओ0 बिल्हौर और तहसीलदार बिल्हौर द्वारा गोलक दारों में बॉट देनी थी। यह बटवारा गोलक दारों के अंशो का निर्धारण खेवट में गोलक

दारों के अंश के विषय में प्रविष्टि के आधार पर किया जाना था।

इस मेले के लिए एक संचालन समिति संयुक्त राज्य सरकार द्वारा बनाई गई जिसमें कानपुर के तत्कालीन कलेक्टर साहब बहादुर मोहतमीम (प्रशासक) मेला मकनपुर, परगना बिल्हौर, कानपुर, एस0 डी0 ओ0 बिल्हौर, ज़िला–कानपुर प्रेसीडेन्ट मेला मकनपुर एवं तहसीलदार साहब तहसील बिल्हौर, कानपुर को सेक्रेट्ररी मेला मकनपुर तथा 6 मेम्बरों को शामिल किया गया।

यह मेला मुताल्लिके दरगाह शरीफ़ है इस लिए दो मेम्बर खादिमान दरगाह के नुमाईन्दगी के तौर पर चुन कर बनाये गये। दो मेम्बर गोलक दारान जो ज़मींदार भी थे को नुमाईन्दगी के तौर पर चुनकर बनाये गये तथा दों मेम्बर उस समय के मोअज़्ज़िज़ हज़रात मे से कलेक्टर साहब बहादुर द्वारा नामित किये गये।

परन्तु सन 1952 में जमींदारी विनाश अधिनियम के प्रभावी होने के बाद से मेला की आय से ज़मीदारो–गोलक दारान मे बॉटी जाने वाली धन–राशि बॉटना बन्द कर दी गई तथा मेला प्रबन्ध के खर्च से बची अवशेष धनराशि से मेला परिसर व दरगाह परिसर मे आवश्यकता नुसार निर्माण कार्य वगैरा में खर्च करने एवं मेला की तरक्क़ी के लिए आवश्यक कार्यों में खर्च करने का निर्णय मेला संचालन समिति द्वारा लिया गया। तब से अनेक कार्य मेला कमेटी द्वारा उक्त धन राशि से कराये गये जिसमें सर्व प्रथम 1963 मे ग्राम मकनपुर मे विधुत व्यवस्था हेतु (मैनपुरी लाईन) कन्नौज से मकनपुर तक लाने हेतु सरकारी स्टीमेट में ग्राम मकनपुर की आंशिक धन राशि मेला कमेटी द्वारा उक्त धन राशि से भुगतान की गई।

तद उपरान्त मेला में पानी व्यवस्था हेतु मेला तहसील स्थल पर एक ट्यूब वैल व पानी की टंकी की स्थापना, दरगाह परिसर में एक शोरूम, दो मुसाफिर ख़ाने, शोरूम के पास दर्शनार्थियों के ठहरने के लिए हाल का निर्माण, सदस्यों के लिए मेला अवधि मे बैठने व रहने के लिए 6 कमरों का निर्माण, गेस्टहाऊस का निर्माण मेला तहसील, मेला कोतवाली का निर्माण, बिल्हौर तहसील मे बैठक आदि के लिए मेला हॉल का निर्माण मेला तहसील में एक कमयून्टी हाल का निर्माण, मदार गेट आदि कार्य उक्त धन राशि से किये गये तथा अन्य निर्माण कार्य कराये जाने की योजना है।

मेला मकनपुर शरीफ़ जहॉ पर लगता है। वहाँ पर मेला समिति की अपनी कोई ज़मीन नहीं है। मेला काश्तकारों की भूमि पर लगता है जिन्हें जमींदारी विनाश अधिनियम लागू होने के उपरान्त भूमि धर कहा जाता है वह अपनी ज़मीनों पर ठहरने वाले जानवरों के मालिक से किराया वसूलते हैं मेले में जिन काश्त कारों की ज़मीन आती है उसका किराया वगैरा स्वम् प्राप्त करते हैं तथा यह अधिकार भूमि धरो का पूर्ण रूप से सुरक्षित है।

मेला संचालन समिति पशु बिक्री पर होने वाली पशु रजिस्ट्रेशन शुल्क, दलाल लाईसेंन्स शुल्क, दुकानों पर विधुत कनेक्शन शुल्क, बेरियर शुल्क इत्तियादि से आय कर मेले का प्रबन्ध करती है। राज्य सरकार या केन्द्र सरकार से इस मेले को कोई वित्तीय सहायता प्राप्त नहीं होती है।

ज़मींदारी विनाश अधिनियम के प्रभावी होने के बाद मेला संचालन समिति का गठन निम्न प्रकार होने लगा श्रीमान ज़िला अधिकारी कानपुर प्रशासक मेला मकनपुर, परगनाधिकारी बिल्हौर अध्यक्ष मेला मकनपुर, तहसीलदार

Scanned with CamScanner

साहब बिल्हौर सचिव खजॉन्ची मेला मकनपुर व 6 सदस्य गण।
जिनमें दो सदस्य पूर्व की भाँति ख़ादिमान दरगाह (निर्वाचित) दो सदस्य गोलक दारान के स्थान पर भूमि धर आराज़ी मेला दो सदस्य ग्राम पंचायत के निर्वाचित सदस्य (नामित) शामिल होंगे।

इस समय मेले में ऊँट, बैल, बकरी व गधे आदि की पशुबाज़ारें पूर्ण रूप से समाप्त हो गई हैं एवं क़ालीन वगैरा की दुकाने कम हो गई हैं। परन्तु घोड़ा बाज़ार में तेज़ी के साथ वृद्धि हुई है। अन्य पशु बाज़ारो में भी कमीं आयी है। लेकिन दर्शनार्थियों एवं अनुयायों की संख्या दिन प्रति दिन व मेला बसन्त के अवसर पर व उर्स शरीफ़ के अवसर पर लाखो की संख्या में बढ़ रही है और अनेकता में एकता का वह रूप जिसकी मिसाल इस प्रकार दी जा सकती है कि इस आपसी मेल की जड़ में वेदान्त–धर्म व सूफी धर्म की आधारभूति एकता ही कही जा सकती है जो दरबारे मदारूल आलमीन (रजि0) की बारगाह में दिखाई देती है।

इस मेले का प्रारम्भ मेला प्रशासक व कानपुर नगर के श्रीमान ज़िला अधिकारी साहब द्वारा मेला उदघाटन के अवसर पर मदारे पाक की मज़ार पर चादर चढ़ाने की प्राचीन परमपरा है जिसे श्रीमान ज़िला अधिकारी साहब ब.खूबी हर वर्ष निभाते हैं। दरगाह शरीफ़ मे मज़ार शरीफ़ पर चादर चढ़ाने के उपरान्त मेला कमेटी के सदस्यों द्वारा श्रीमान डी0 एम0 साहब व अन्य अधिकारियों को यहाँ की परम्परा के अनुसार पगड़ी बाँध कर स्वागत किया जाता है।

★★★

Scanned with CamScanner

मेला अधिकारी व कर्मचारी वर्ग

मेला प्रशासक— श्रीमान ज़िलाधीश महोदय मेला प्रशासक के रूप मे मेले में पधारतें हैं और मेले का निरिक्षण करते हैं तथा मेले के प्रबन्ध सम्बन्धी आदेश अपने अधीनस्थ अधिकारियों को प्रदान करते हैं। तथा मेला व दरगाह शरीफ़ की उन्नति के लिए निर्णय कर घोषणा करते हैं।

मेला अध्यक्ष— मेले में श्रीमान परगनाधिकारी बिल्हौर, मेला अध्यक्ष के रूप में मेला भर स्थाई रूप से रहते हैं। मेले में सभी कार्यों की देख रेख आप ही के निरिक्षण में होती हैं। आप मेले के आवश्यक एवं गम्भीर विषयों पर कमेटी की राय से आदेश देते हैं, आप ही के आदेशानुसार सभी काम होते हैं। मेले के सभी मुक़दमें आप ही करते हैं।

मेला सचिवः— मेले के प्रथम दिन से अन्तिम दिन तक तहसीलदार साहब बिल्हौर, मेला सचिव स्थाई रूप से मेले में रहते हैं। मेले के प्रबन्ध का सारा उत्तरदायित्व आप पर होता है। मेले में जितने कर्मचारी काम करते हैं सब आपके आधीन होते हैं। मेला सचिव मेला कमेटी की राय से मेले के सभी कार्य सम्पन्न करवाते हैं। तथा मेला सचिव की उपस्थिति में रोज़ा शरीफ़ से चढ़ावे की रकम निकाली जाती है।

मेला सुपरिटेन्डेन्ट— श्रीमान नायब तहसीलदार साहब बिल्हौर मेला सुपरिटेन्डेन्ट होते हैं जो श्रीमान मेला अध्यक्ष एवं श्रीमान मेला सचिव से जितने आदेश मिलते हैं, उनको कार्यन्वित करना तथा अधीनस्थ कर्मचारियों के कार्यों का निरिक्षण करना, पशु रजिस्ट्री तथा अन्य साधनो से प्राप्त होने वाली आय का हिसाब रखना मेला सुपरिन्टेन्डेन्ट का कर्तव्य हैं।

Scanned with CamScanner

मेला सदस्य गण— मेला कमेटी द्वारा तय कार्यक्रमों के कराना, मेला की तरक्कीं के लिए राय पेश करना, आय—व्यर की योजना बनवाना, आगन्तुकों का स्वागत करना आदि।

मेला खजानची— मेला कमेटी की ओर से मेला खजान्ची र्क नियुक्त होती है जो मेला में सभी मदों से प्राप्त आय एवं सर्भ प्रकार के व्यय का हिसाब रखता है। तथ पशु रजिस्ट्रेशन तथ अन्य साधनों से होने वाली आय को मेला कोष में जमॉ करन एवं सभी कार्य श्रीमान मेला अध्यक्ष एवं श्रीमान मेला सचिव के आदेशानुसार करना ही मेला खजान्ची का कर्तव्य है।

हायक खजान्ची— मेला खजान्ची का सहयोग करना और ाय—व्यय के लेखा में योगदान देना सहायक खजान्चीं का र्तव्य है।

मजकूरी— मेला में दौड़ धूप का कार्य करने हेतु ावश्यकता अनुसार चपरासी नियुक्त किये

जाते है इन चपरासियों को मजकूरी कहते हैं।

ोट— मेले में काम करने व्राले सभी कर्मचारियों को मेला चिव मेला कमेटी की राय से नियुक्त करते हैं।)

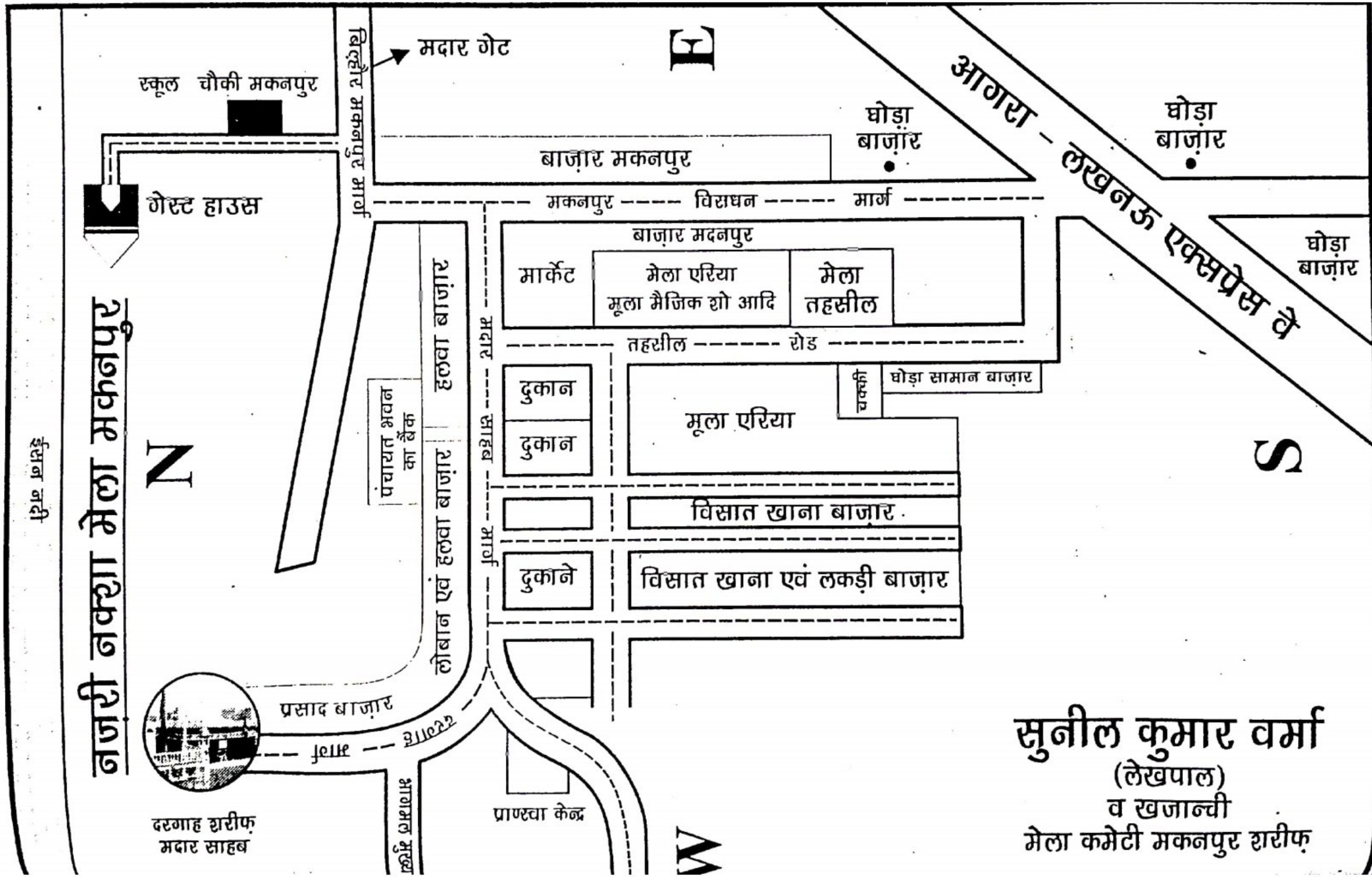

Scanned with CamScanner

पुलिस प्रबन्ध

मेले में व्यापारी और यात्री लाखो की सख्या में आते हैं उनकी सुरक्ष के लिए पुलिस का पूरा प्रबन्ध होता है। पुलिस अधिकारी मेले में पधारते हैं। कोतवाल बिल्हौर मेले के इंचार्ज होते हैं बसन्त पंचमी के दिन श्रीमान एस0 एस0 पी0 कानपुर नगर व एस0 पी0 आर0 ए0 साहब पधारते हैं और प्रबन्ध सम्बन्धी आवश्यक आदेश अपने अधिनस्थ अधिकारियों को देते हैं जगह–जगह पुलिस चौकिंयॉ स्थापिंत कर दी जाती हैं इसके अतरिक्त गश्ती पुलिस घूमती रहती है। पुलिस का प्रबन्ध प्रंशंसनीय रहता है। श्रीमान क्षेत्राधिकारी बिल्हौर मेले भर स्थायी रूप से रहते हैं। यात्रियों एवं व्यापारियों की सुरक्षा का पूरा प्रबन्ध किया जाता है।

मदारे आज़म के मेले लगते हैं पूरी दुनिया में

(हवाला दैनिक जागरण बरेली 28 सितम्बर सन 1998 ई0) लेखक–आर0 के0 सिंह (वरिष्ठ पत्रकार)

अपने इस तारीख़ी लेख में लिखते हैं कि हज़रत सैय्य बदी उद्दीन ज़िन्दा शाह मदार के उर्स (मेला) पूरी दुनिया होते हैं, मदार का महीना भी पूरी दुनिया में मशहूर है। इ महीने का चाँद निकलतें ही मदार पाक के उर्स के अवसरों लोगों की तादात बढ़ती गई तो उर्स ने बड़े मेले का रूप लिया, अनेक स्थानों पर वहाँ की परम्पराओं के मुताबिक मेले होतें है।

पुलिस प्रबन्ध

मेले में व्यापारी और यात्री लाखो की सख्या में आते हैं उनकी सुरक्ष के लिए पुलिस का पूरा प्रबन्ध होता है। पुलिस अधिकारी मेले में पधारते हैं। कोतवाल बिल्हौर मेले के इंचार्ज होते हैं। बसन्त पंचमी के दिन श्रीमान एस0 एस0 पी0 कानपुर नगर व एस0 पी0 आर0 ए0 साहब पधारते हैं और प्रबन्ध सम्बन्धी आवश्यक आदेश अपने अधिनस्थ अधिकारियों को देते हैं। जगह–जगह पुलिस चौकिंयॉ स्थापिंत कर दी जाती हैं इसके अतरिक्त गश्ती पुलिस घूमती रहती है। पुलिस का प्रबन्ध प्रंशंसनीय रहता है। श्रीमान क्षेत्राधिकारी बिल्हौर मेले भर स्थाई रूप से रहते हैं। यात्रियों एवं व्यापारियों की सुरक्षा का पूरा प्रबन्ध किया जाता है।

मदारे आज़म के मेले लगते हैं पूरी दुनिया में

(हवाला दैनिक जागरण बरेली 28 सितम्बर सन 1998 ई0) लेखक–आर0 के0 सिंह (वरिष्ठ पत्रकार)

अपने इस तारीख़ी लेख में लिखते हैं कि हज़रत सैय्यद बदी उद्दीन ज़िन्दा शाह मदार के उर्स (मेला) पूरी दुनिया में होते हैं, मदार का महीना भी पूरी दुनिया में मशहूर है। इस महीने का चाँद निकलतें ही मदार पाक के उर्स के अवसरों पर लोगों की तादात बढ़ती गई तो उर्स ने बड़े मेले का रूप ले लिया, अनेक स्थानों पर वहाँ की परम्पराओं के मुताबिक यह मेले होतें है।

पाकिस्तान के सिंध प्रान्त और राजस्थान के अनेक स्थानों पर यह मेले मदार के महीने की चार तारीख़ से प्रारम्भ हो जाते हैं। कहीं–कहीं इन मेलों का आयोजन रात्रि में किया जाता है वहाँ इन मेलों कों "मदार का चिराग" कहा जाता है जो पाकिस्तान व अफगानिस्तान के विभिन्न प्रान्तो में देखने को मिलता है। वहाँ पर लोग अपनी–अपनी मन्नतों के चिराग जला कर रखते है। तथा नियाज़ दिला कर दुआऐं करते हैं। इन मेलों के जो एतिहासिक तथ्य मिले हैं उनसे पता चलता है कि हज़रत ज़िन्दा शाह मदार के उर्स मे शामिल होनें के लिए दूर–दूर से लोगो ने मकनपुर में आना शुरू किया उस ज़माने में सवारियाँ नहीं थी ; इस लिए लोग काफ़ी दिन पहले काफ़िले के रूप में चल दिया करते थे। यह काफ़िले तमाम स्थानों से होते हुए मकनपुर पहुॅचते थे। जिन जगहों पर इन काफ़िलों का पड़ाओं हुआ करता था उन स्थानों पर आज मेला लगता है, यही वजह है कि यह मेले सिर्फ़ सड़क के किनारे ही लगते हैं। वैसे तो पूरे देश में मदार के मेले होते हैं मगर राजिस्थान के भरतपुर में इस मेले को छड़ियों का मेला कहा जाता है। यह मेला भरत पुर से चलकर दो भागो में बॅटकर मकनपुर पहुॅचता है, एक तो आगरा फ़िरोज़ाबाद, मैनपुरी इतियाद शहरों से होता हुआ और दूसरा जो अत्यधिक प्रसिद्ध है यह मेरठ, बदायूँ, बरेली व शहजहाँपुर होता हुआ मकनपुर शरीफ़ पहुॅचता है। सन् 1765 में लखनऊ अवध प्रांत की राजधानी बन चुका था और नवाब आसिफुद्दौला करोड़ो रूपये खर्च करके इसे दूसरी दिल्ली बनाना चाहते थे। और यह वह समय था जब 18 वीं सदी के इस दौर में अहमद शाह अब्दाली और नादिर शाह दुर्रानी के कई हमलों ने दिल्ली की ईंट से ईट बजा दी थी। यही वजह थी रोज़मर्रा की लूटपाट से परेशान होकर मशहूर

Scanned with CamScanner

शायर मीर हसन दिल्ली छोड़ कर भरत पुर पहुँचे और मदार की छड़ियों के मेले के साथ सन् 1765 में ही मकनपुर आ गये और मीर हसन ने अपनी मसनवी "गुलज़ारे इरम" में इस मेले का भरपूर जिक्र किया है।

उत्तर–प्रदेश के प्रसिद्ध महानगर बरेली में मदार के मेलों का आयोजन बड़े पैमाने पर होता है। बरेली में यह मेला पहले क़िले पर, दूसरा बॉस मंण्डी में और तीसरा शहामत गंज में आज़ाद इन्टर कालेज के पास फ़िर नरियावल और फ़रीदपुर में राष्ट्रीय राजमार्ग सं0 24 पर भी, फतेहगंज व मीराजपुर कटरा में भी बड़े पैमाने पर मेला लगता है।

उल्लेखनीय है कि शहजहॉपुर, अलीगढ़, बदायूँ और अजमेर में यही मेले मदार टीकरी और मदार गेट आदि पर बड़ी धूम–धाम से मनाये जाते हैं।

हैदराबाद में दरगाह मदार शाह, कोलम्बों में चिल्ला मदार शाह, अफ़गानिस्तान के शहर शहीवाल चेक नम्बर 90 में दरबारे शाह मदार पर पाकिस्तान सिंध में फकीर के पेड़ पर मदार शाह के मेले लगते हैं। बैरूत, मिश्र, मोरक्को मे चिल्ला गाहों पर मदार के मेले बड़े ही शान–शौकत से मनाये जाते हैं। मेलों में मनोकामना लेकर जाने वालों में मुस्लिमों के अलावा हिन्दुओं की भी संख्या कम नहीं होती। कुछ स्थानों पर मनो कामना पूरी करने की लालसा मेले में अलम के नीचे कहते हैं कि मेरी मनोंकामना पूरी हूई तो दीपक जलायेगें।

तमाम स्थानों पर हज़ारों की संख्या में मेलों में दीपक जलते हुए दिखाई देते हैं। फरीदपुर सहित कुछ स्थान ऐसे भी हैं जहाँ मनोकामना पूरी होने पर लोग ज़िन्दा मुर्गे उड़ाते हैं। इन्हीं मुर्गो को लोग मेला परिसर में पकाकर परसाद के रूप में खाते हैं। कुछ स्थानों की परम्पर है कि मेले के अलम से फुदने

इबादतगाह
मदार टिकरी
अजमेर

Scanned with CamScanner

इबादतगाह
काकिला पहाडी
अजमेर

चिल्लागाह सरकार मदार - कर्नाटका टुम्कुर (बंगलुर)

Scanned with CamScanner

दार बदधी (डोरा) को खोल कर बदधी को पहनते हैं। अपना सवाल पड़ते हैं और मुराद पूरी होने पर इस बदधी को पूजा अर्चना के साथ अलम पर चढ़ा देते हैं। यह सिल सिला ऐसे ही वर्षो से चला आ रहा है।

इतिहास गवाह है कि मुग़ल बादशाहों में अकबर जहाँगीर, औरंगज़ेब ने मदार साहब की दरगाह पर माथा टेका है। औरंगज़ेब के सगे छोटे भाई दारा शिकोह ने अपनी किताब "सफ़ीनतुल औलिया" में मेले का वर्णन करते हुए लिखा है कि वह जब मज़ार शरीफ़ पर हाज़री देने गया था उस समय उर्स के अवसर पर पाँच–छः लाख लोग मौजूद थे।

लोगो ने इतने बड़े जमघट को देखते हुए मकनपुर शरीफ़ के उर्स को दो भागो में बॉट दिया। याद रहे कि पहला उर्स 30 के चाँद के हिसाब से जमादिउल अव्वल में मनाया जाता है, जिसकी ख़ास तारीख़े मदार की 15, 16, 17 जमादिउल अव्वल है। और दूसरा उर्स मेला हिन्दी कलेन्डर के मुताबिक माघ माह में होता है जिसका ख़ास दिन बसन्त पंचमीं को होता है। इस मेले में हिन्दु–मुस्लिम एकता का अद्धितीय उदाहरण परिलक्षित होता है।

ज़िन्द बाबा सेवा आश्रम के महान्त श्री दिगम्बर कुमार बताते हैं कि मकनपुर शरीफ़ के प्रति लोगों की आस्था न होती तो इतनी बड़ी संख्या में इतने लोग क्यों जुटते, मदार शाह बाबा के दिल में हिन्दुओं के पवित्र पर्व बसंन्त पंचमीं पर ही प्रमुख मेला क्यों होता।

आईनें अकबरी कें हिस्सा 3 पेज सं0 284 पर अबुल फ़ज़ल यूँ तहरीर करते हैं।

"शाह मदार लक़ब बदी उद्दीन केव महे हिन्दीबुम
बदु गरदत व इल्ला या यागीवर गुजारत"

व शिगरफ़ दास्तानाहा अज़ वर गुज़ारन"

अनुवाद– यानी शाह मदार आप का लक़ब बदी उद्दीन है। हिन्दुस्तान का हर क़ौम वाला आपका अनुयायी है, अपने–अपने तरीके से सब आपको मानते हैं और आपकी तारीफ़ करते हैं। और बहुत ही अजीबो–गरीब दास्ताने आपकी सुनाते हैं। हर छोटे बड़े को एक दूसरे से जोड़ा जाता है।

उर्स शरीफ़ हज़रत शाह मदार, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)

हज़रत सैय्यदना सैय्यद बदी उद्दीन अहमद ज़िन्दा शाह मदार रज़ि अल्लाहा ताआला अन्हों के चिल्लागाहों (इबादतगाहों) हैदराबाद (आन्ध्रप्रदेश) आस्ताना हज़रत पीर ज़िन्दा शाह मदार चार कमान में सुल्तान मुहम्मद .कुली कुतुबशाह का कायम किया हुआ है जो चार सौ वर्षों से कायम है। और दूसरा आस्ताना मीर चौक पुरानी हवेली में है। ये दोनों आस्ताना के सज्जादा नशीन हज़रत सैय्यद अहमद अली शाह हैं। उन्हीं की निगरानी में प्रति वर्ष उर्स हज़रत .कुतबुलमदार बड़े धूम–धाम से मनाया जाता है। पुरानी हवेली से सन्दल का जुलूस निकलकर नारये पंजतन की गूंज में आस्ताना मदारिया बरकातिया पर निशान हज़रत पीर ज़िन्दा शाह मदार पर खड़ा किया जाता है। संदल वगैरा के सभी कार्यक्रम हज़रत सैय्यद अहमद अली शाह साहब आशिकाने मदार द्वारा सम्पन्न किया जाता है। ये उर्स पहली जमादिउल अव्वल को आस्ताना मीर चौक पुरानी हवेली में मनाया जाता है। संदल की रस्म के बाद फ़ातिहाख़्वानी, सलाम, नात, हम्द व मनक़बत हज़रत ज़िन्दा शाह मदार प्रस्तुत की जाती हैं तथा परसाद वितरण किया जाता है।

17 जमादिउल अव्वल को अस्र की नमाज़ के बाद आस्ताना मीर चौक हवेली से संदल शरीफ़ निकल कर नौबत, नक्कारा ताशा और नारये पंजतन की गूंज में संदल मुबारक जुलूस कें साथ छत्ता बाज़ार, मदीना बिल्डिंग, पत्थरगटी, गुलज़ार हौज से होता हुआ आस्ताना चार कमान पहुँचता है, जहॉ आस्ताने को रंगीन लाईट से सजाया जाता है, वहाँ से फ़ातिहा पढ़ कर चार मीनार, लाड बाज़ार, मोती गली से खिलवत मुबारक में पहुँचता है। वहॉ पर हज़रत पीर ज़िन्दा शाह मदार का निशान खड़ा किया जाता है, फ़िर नमाज़ मग़रिब के बाद निशान पाक पे रस्म संदल शरीफ़ अदा की जाती है फ़िर सलाम पढ़ा जाता है।

हुजूर निज़ाम नवाबमीर बरकत अली ख़ान बहादुर आसिफ़जा की सलामती की दुआ की जाती है, इसके बाद मोरासिम दम्माल अदा होता हैं तथा सभी मौजूद व्यक्तियों में परसाद वितरण किया जाता है। नमाज़ इशा के बाद खिलवत मुबारक में ताजुल फुक़रा हज़रत सैय्यद अहमद अली शाह दुआ करते हैं, फिर ये जुलस के साथ आस्ताना चार कमान पर संदल शरीफ़ की रस्म होती है और बाद सलाम क मोरासिन दम्माल अदा होता है। वहॉ भी सभी उपस्थित व्यक्तियों में परसाद वितरण किया जाता है। फ़िर यह जुलूस आस्ताना पुरानी हवेली में चिरागाँ करतें हैं। फ़िर सलाम हु.जूर ख़ैरूलवरा पेश करते हैं, वहॉ भी मोरासिम दम्माल अदा होतें हैं। उसके बाद ख़ानक़ाह मदारिया में सभी व्यक्तियों के लिए बेहतरीन किस्म के खाने का इन्तिज़ाम रहता है, सभी लोग खाना खाते है।

18 जमादिउल अव्वल को हलकए ज़िक्र व .कुल शरीफ़ एवं फ़ातिहा ख़्वानी वगैरा होता है। 19 जमादिउल अव्वल को

Scanned with CamScanner

ख़त्म .कुरान व ख़त्म ख़्वाजगान मदारिया एवं महफ़िले नात होता है। 20 जमादिउल अव्वल को सलाम व मनक़बत शाहमदार के साथ पॉच रोज़ा उर्स शरीफ़ हज़रत सैय्यद अहमद अली शाह साहब की रहनुमाई में सम्पन्न हो जाता है।

मदार घाट का मेला

हवाला दैनिक जागरण 16 अप्रैल 2003 (पूर्णिया) सम्वाद सूत्र प्रत्येक वर्ष बैसाख माह की प्रथम तिथि को लगने वाला हिन्दुओं का वार्षिक पर्व अथवा सिरवा मेला और मुसलमानो का उर्स मेला आज भी सम्प्रदायिक सोहार्द का पैग़ाम दे रहा है। कस्बा नगर के मदार घाट में लगने वाला यह मेला प्राचीन समय से दोनो समुदाय के व्याक्तियों को एक सूत्र में बॉधने का कार्य करता आ रहा है। इस दरगाह शरीफ़ में पीर बाबा का मज़ार शरीफ़ होने की कहानी प्राचीन व निराली हैं बताया जाता है कि प्राचीन समय में घौंड़ा ज़िला में मकनपुर क्षेत्र से पीर फ़कीर का यहॉ आना जाना होता था, इन्हीं व्यक्तियों मे से एक हज़रत बदीउद्दीन ज़िन्दा शाह मदार नामक पीर बु.ज़ुर्ग इस जगह पर रहने लगे वे इस क्षेत्र के लोगों की देख भाल करते तथा रोगी को अचूक औषधी जड़ी–बूटी देते थे तथा इबादत करते थे इनके चिल्लागाह से 200 मीटर दूरी पर कोसी नदी का घाट लगता था इस घाट का नाम मदार साहब बाबा के नाम पर मदार घाट रक्खा गया जो अभी कस्बा प्रखण्ड का ह्दय स्थल है। बूढ़े पुराने लोगों का कहना है कि वह अपने बाप–दादा के मुँह से बाबा बदी उद्दीन ज़िन्दा शाह के बारे में बहुत चमत्कारी एवं काल्पनिक सी लगने वाली बाते सुना करते थे। उन्हें .खुदा का रूप माना जाता था उस समय वे दुखी दरिद्रों का कष्ट हरते एवं लोगों द्वारा जो भी इच्क्षा

Scanned with CamScanner

प्रकट की जाती थी वे सब पल भर में पूरी कर देते थे। उनके स्थान पर प्रति वर्ष प्रथम बैसाख को हिन्दू–मुस्लिम् द्वारा चादर चढ़ाया जाने लगा उस दिन हज़ारो की संख्या में दोनो समुदाय के लोग इस मेले में समलित होते हैं।

गुरू नानक का कथन

सिखों की मशहूर किताब "जन्म साखी कला" में पेज नं0 404 पर गुरू नानक साहब का ये कता दर्ज है।

ऐ हिन्दुस्तान वद्द लागे किरन विचार
एक रहता अजमेर वद्द एक रहता मकनपुर जाये
रहे हिन्दुस्तान वद्द फ़कीर अल्ला दे हुए
जोरी हिन्द न जीता के जोरी रहे खोय
नानक चेतक़ कर मौन दे बड़े पीर खाय
राजा परजा बन्दवान सिरानो रिया आये।।

अनुवाद– सिखों के गुरू गुरू नानक साहब कहते हैं

ख़्वाजा मोईन उद्दीन चिश्ती और शाह .कुतबुल मदार हिन्दुस्तान में आये तो कुछ सोंच समझ कर अजमेर शहर गये और दूसरे मकनपुर गये।

खुद गये उन सच्चे बन्दों ने हिन्दुस्तान को तलवार के ज़ोर से नही बल्कि अपने किरदार और रूहानी ताक़त से जीता। जादूगरो ने अजय पाल वगैरा ने अपना जादू दिखाया तो ख़्वाजा ने अपनी करामत से ख़त्म कर दिया और यूँ एक दिन राजा और प्रजा सब आपके क़दमों में गिर गये। गुरू नानक ने ख़्वाजा साहब के हमराह एक बु.जुर्ग हज़रत सैय्यद बदीउद्दीन कुतबुल मदार मकनपुरी का भी ज़िक किया है। जब कि ये गोसा बहेसे तहक़ीक हैं।

Scanned with CamScanner

हज़रत सैय्यदना ख़्वाजा साहब से सैय्यदना मदारे पाक की मुलाक़ात

हज़रत मौलाना हकीम फ़रीद अहमद मुजद्दिदी नक्शबन्दी ने अपनी किताब मदारे आज़म में और हज़रत शेख़ अब्दुर्रहमान चिश्ती रदौलवी ने अपनी किताब "मिर्रतुल असरार" मे और "फ़सले मसऊदिया" में और शेख़ वजिह उद्दीन अशरफ़ ने "बहरे ज़ख़्ख़ार" में और "इसके अलावा कई किताबों में तहरीर है के हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने हज़रत मदारूल आलमीन से "कोकिला पहाड़ी" पर मुलाक़ात फ़रमाई। इसी पहाड़ी पर हज़रत कुतबुल मदार ने क़याम किया, जो आज मदार टीकरी के नाम से मौसूम है।

शहंशाहों व बादशाहों की आमदे मकनपुर शरीफ़

शहंशाहे जौनपुर इब्राहिमशर्की की आमदः-

शहनशाहे जौनपुर इब्राहिम शर्की हज़रत मदारूल आलमीन से बेहद अक़ीदत रखता था। सरकार के विसाल के बाद सन् 1420 ई0 में इब्राहिम शर्की मकनपुर आये और बारगाहे मदार पाक में हाज़री दी और इन्होने रौज़ा मुबारक और उससे मुताल्लिक इमारतें तामीर करने का बन्दोबस्त किया और अपने ख़ास दोस्त मोहम्मद निज़ाम मदारी सौदागर को मकनपुर शरीफ़ मे छोड़ कर जौनपुर वापिस चले गये। मोहम्मद निज़ाम मदारी सौदागर ने यहाँ रहकर रौज़ा शरीफ़ और हरम शरीफ़ तामीर कराया। जो सन् 1420 से 1424 तक तामीर हुआ इब्राहिम शर्की की मृत्यु सन 1424 ई0 में हुई।

लेकिन मोहम्मद निज़ाम मदारी सौदागर जो इब्राहिम

Scanned with CamScanner

शर्की के साथ आये थे उनकी मृत्यु के बाद भी कई बार हाज़री देने आये और उन्होंने सन् 868 हि0 व 899 हि0 में दो गेट बनवाये जिसपर मोहम्मद निज़ाम मदारी के कत्बे लगे हुए हैं।

शहनशाह अकबर— शहनशाह जलाल उद्दीन मोहम्मद अक़बर सन् 1565 इ0 में मकनपुर शरीफ मे आकर बारगाहे मदारूल आलमीन में हाज़री दी और यहाँ पर हजरत सैय्यद बाबा लार्डदरबारी (रह0) से मुलाक़ात की और शहनशाह मोहम्मद अक़बर ने दम्माल शरीफ़ में ताँबा एवं लोह की देंगे रखवाई और सोने का काम हुई एक वेश कीमती चादर मज़ार मुक़द्दस पर चड़ाई और 55 बीघा ज़मीन वक्फ़ की।

बादशाह शहजहाँ— बाद शाह शहजहाँ ने सन् 1600 ई0 में बार गाहे मदार पाक में

हाज़री देने का शरफ़ हासिल किया और यहाँ आकर हाज़री देने के बाद यहाँ से बहुत ज़्यादा मुतास्सिर हुआ और सरकार मदार पाक से बेपनाह अक़ीदत हो गई यहाँ पर इन्होंने एक बड़ा दालान और एक हुजरे को तामीर करवाया जिसपर इनके नाम का क़त्बा लगा हुआ है।

शहनशाह औरंगज़ेब— षहनशाह औरंगज़ेब आलमगीर की हाज़री बारगाहे मदारूल आलमीन में सन् 1664 ई0 में हुई और बारगाहे मदारपाक में औरंगज़ेब कोहनी और घुटनो के बल रेंगकर मज़ार शरीफ़ तक आये। यंह अपने घुटनो व कोहनी पर कपड़ा बाँधे हुए थे। सरकार मदारूल आलमीन से बेपनाह मोहब्बत–ओ–अक़ीदत रखते थे। इन्होंने रोज़ा शरीफ़ में चारो ओर संगेमरमर की जालियाँ लगवाई और शाही मस्जिद और दम्माल खाना, बादशही कुँआ की तामीर करवाई उस ज़माने में जो औलाद हरसए ख़्वाजगान मे से मौजूद थे उन बु.जुर्ग हज़रात में से सैय्यद शाह चाँद मिंया, सैय्यद शाह प्यारे मिंया वगैरा से मुलाक़ात की ।

शहज़ादा दारा शिकोह की हाज़री

शहज़ादा दारा शिकोह हज़रत बदी उद्दीन ज़िन्दा शाह मदार के उर्स का ऑखों देखा हाल यूँ बयान करते हैं कि आप ने 17 जमादिउल अव्वल 838 हि0 को वफ़ात पायी। आप का मज़ार मकनपुर में है जो कन्नौज के पास है हर साल जमादिउल अव्वल के महीने में उर्स शरीफ़ होता है जिसमें पॉच–छः लाख लोगों की शिरकत होती है और दूर से दर्शनार्थी आते हैं और नज़र नियाज़ पेश करते है। आज भी इतनी मुदद गुज़र जाने के बावजूद अजीबो–गरीब वाक़ियात देखने को मिलते हैं। उसने अपने तसकिरे में लिखा है कि जब मैं उर्स शरीफ़ के मौके पर मकनपुर गया हूॅ तब पॉच –छः लाख का मजमा था।

इसमें दुसरे मुलकों के पीरज़ादे और सूफिया ख़ानवादे और हिन्दुस्तान के मशाइख़ के ख़ानवादो के अलावा हिन्दु–मुसलमान, मर्द–औरत काफ़ी तादात में ज़ियारत के लिए दरबारे मदारुल आलमीन में आये थे। उसने किताब सफ़ीनतुल औलिया में हज़रत कुतबुल मदार साहब के शजरों, पिदरी व मादरी को भी लिखा है। उसको आपसे दिली अक़ीदत थी।

(हवाला किताब "सफ़ीनतुल औलिया" लेखक–दारा शिकोह क़ादरी)

पैदाईश से हिन्दुस्तान आमद तक

हवाला हुदा डायेजेस्ट (औलिया अल्लाह नम्बर)
लेखक– हाफ़िज़ मोहम्मद अब्दुलसलाम अनवरी
खतीब मदीना मस्जिद, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)
अपने लेख में लिखते हैं कि सैय्यदना ज़िन्दा शाह मदार के

Scanned with CamScanner

वालिद खारजियो (धार्मिक कट्टर पंथी) के .जुल्म और उनके आमान्वीय व्यवहार से तंग आकर शहर मदीना जो कि आपका जन्म स्थान था उसको छोड़ कर मुल्क शाम (सीरिया) के शहर हलब चले गयें। इस शहर में आकर निवास करने लगे। यहॉ का खलीफ़ा (राजा) वासिक विल्लहा बहुत अच्छी विचार धारा का शासक था वह हज़रत मोहम्मद सल्लाहो अलैह वसल्लम के घराने वालों का एहतराम करता था उसने मदार पाक के पिता को अपने राज्य का मुख्य न्यायधीश (चीफ़ काज़ी) नियुक्त किया वासिक विल्लहा की 232 हि0 में मृत्यु हो गई उनके बाद उनका भाई मुतवक्कल ख़लीफ़ा (राजा) बना जो कि एक ज़ालिम शासक था।

242 हि0 महीना रमज़ानुलमुबारक में एक सफ़ेद परिन्दा दिखाई दिया जिसने चालीस बार इस तरह से आवाज़ दी "ऐ इन्सानों अल्लाह से डरो" और उड़ गया। इस तरह वह तीन दिन तक रोज़ ज़ाहिर होकर यह आवाज़ देता रहा हज़ारो लोग इस आवाज़ को सुनते रहे आख़िर रमज़ान का महीना ख़त्म हुआ और 242 हि0 ईद के दिन सुबहा के समय हज़रत क़ाज़ी क़ितवत उद्दीन अली हलबी के घर पर अमन–ओ–मोहब्बत की रौशनी फैलाने वाला और कभी न डूबने वाला सूरज उजागर हुआ। जिसको दुनियॉ ने हज़रत सैय्यद बदी उद्दीन अहमद के नाम से पहचाना इनकी पैदाईश के बाद फ़ौरन ही उस ज़ालिम शासक मुतवक्कल को उसके बेटे ने क़त्ल कर दिया और खुद वहॉ का शासक बना और यह बहुत सहनशील और सैय्यदों की इज़्ज़त करने वाला शासक था।

आपके बचपन के अजीब–अजीब वाक़ियात मशहूर हैं आप की माँ फरमाती हैं, कि जब यह मेरे पेट में थे यदि भूल वस

कोई मसकूक निवाला अगर मुँह में चला जाता तो फौरन पेट में दर्द शुरू हो जाता और तुरन्त वह निवाला बाहर निकल जाता। फरमाती हैं कि आपके पैदा होने के पूर्व मेरे घर में एक बूढ़ी बकरी थी जो काफ़ी समय से दूध देना बन्द कर चुकी थी मगर आप के आने के बाद उसने बहुत अधिक दूध देना शुरू कर दिया। आपकी माता फरमाती है मेरा बच्चा कभी किसी बच्चो के साथ खेल कूद में नहीं रहते ऐसा प्रतीत होता था जैसे किसी विचार मे गम्भीरता के साथ मगन हैं। आप स्वंम् फ़रमाते हैं मैं अगर कभी बच्चों मे चला जाता तो एक आवाज़ सुनाई देती कि ऐ बदी उद्दीन इधर आओ मैं इधर–उधर मुड़ कर देखता तो कोई नही दिखाई देता।

जब आपकी उम्र 4 साल 4 माह की हुई तो उस समय के मशहूर विद्वान हज़रत हुज़ैफ़ा शामीं (रह0) के पास ले गये और आपको उनके पास पढ़ने के लिए सुपुर्द किया। जब आप को पहले दिन अरबी भाषा का "अलिफ़" पढ़ाया गया तो आपने इस एक शब्द अलिफ़ की व्याख्या एक हफ्ते तक बयान की शिक्षक ने जब इस बच्चे के व्यख्यान को सुना जो कि स्वम् उस समय के बहुत बड़े सूफ़ी और तमाम विषयों के ज्ञाता थे इस व्याख्यान को सुन कर उनके साथ–साथ विद्यालय की तमाम दिवारों से ये आवाज़ गूँजने लगी कि ये अल्लाह का वली है।

हज़रत सैय्यद बदी उद्दीन मदार (रह0) ने मात्र 14 वर्ष की आयु में तमाम विषयों पर विशेष योग्यता प्राप्त करली थी। तथा अपने माता पिता के सामने हज करने और इस्लाम के अमन–ओ–मोहब्बत के पैग़ाम को प्रचारित करने की आज्ञा माँगी। माता–पिता ने इंसानियत के हित के लिए मात्र 14 वर्ष की आयु में नम आँखो के साथ इजाज़त दी, आज्ञा मिलते ही आपने मक्का–मदीना की ओर कूँच कर दिया। मक्के में हज

की तमाम प्रतिक्रियाओं को पूरा करने के उपरान्त अपने पूर्वज मोहसिने इन्सानियत, शाँतिदूत हज़रत मोहम्मद (स0 अलै0) के रौज़े अनवर पर हाज़री दी।

हज़रत मोहम्मद (स0 अलै0) ने मानवता के कल्याण और इस्लाम की सच्चाईयों की शिक्षा देकर फ़रमाया कि ऐ बदी उद्दीन तुम मानवता के कल्याण के लिए हिन्दुस्तान की ओर प्रस्थान करो जैसा कि हदीसों में आया है कि हज़रत मोहम्मद (स0 अलै0) ने इशारा करके फ़रमाया था "हिन्दुस्तान की ओर से मोहब्बत की खुशबू आती है" अपने पूर्वज के आदेश पर आपने सफ़र की तैयारी कर मदीने से रवाना होकर आप योरोशलम पहुँचे वहाँ पर आपने उस समय के ख्याति प्राप्त मुस्लिम सूफ़ी–सन्त बायज़ीद बुस्तामी उर्फ तै.फूर शामीं (रह0) से बैत ली आप के पीरो–मुर्शिद ने आप को देखते ही फ़रमाया कि ऐं बदी उद्दीन करीब आओ आप के नाना जनाब मोहम्मद (स0 अलै0) की कुछ अमानतें मेरे पास सुरक्षित हैं। आप को सीने से लगाकर वह तमाम इल्मीं अमानतें आप को दे दीं, फिर आप योरोशलम से निकल कर पूरे मिडिल ईस्ट में घूम–घूम कर अमन–ओ–मोहब्बत का प्रचार–प्रसार करते हुए कश्ती के द्वारा हिन्दुस्तान की तरफ़ रवाना हुए और 283 हिजरी बमुताबिक सन 863 ई0 में हिन्दुस्तान के राज्य गुजरात के समुद्री साहिल मालावार (खम्बात) पहुँचे।

★★★

Scanned with CamScanner

''मदार'' किसको कहते है ?

मदार का अर्थ ध्रुव है, मदार उस शैली को भी कहते हैं जिस के चारो ओर चक्की के पाटे घुमते हैं।

मदार उस तारे को भी कहते हैं जों सभी ग्रहों, उपग्रहों, नक्षत्रों को सभाले रहता है तथा जिसके चारो ओर यह सब घुमते हैं। कहने का तात्पर यह है कि अल्लाह ताआला ने तमाम आलम का नाज़िम (संचालक) "मदार" को नियुक्त किया है। मदार अल्लाह के सबसे खास बन्दों दोस्तो में होता है तथा .खुदा का हर आदेश रसूल पाक से इनको पहुॅचता है। कुतबुल मदार विलायत का सर्वोच्चय स्थान है।

जब ऑन्धे को रौशनी मिल गई

एक बार सैय्यद बदी उद्दीन ज़िन्दा शाह मदार रज़ि अल्लाह ताला अन्हों खम्बात से सूरत शहर पहुँचे तो सूरत में उस समय काफ़ी सुकून था, आबादी कम थी चारो ओर हरे–हरे बाग़ और खेती लहलहा रही थी, शीतल वायु फूलों की सुगन्ध को चारो ओर फैला रही थी।

लोगो ने आपकी चर्चा तो बहुत सुनी थी, अब देखने का भी मौका मिल गया, बस फ़िरतो खम्बात से भी अधिक भीड़ आप के पास दर्शन के लिए पहॅुचने लगी और अपनी–अपनी मन्नतें पूरी करने लगे।

आपको एक दिन रास्ते में एक अन्धा भिकारी मिला जो लोगों की दया पर निर्भर था, आपको इसकी हालत देख कर रहम आ गया और आपने वु.जू बनाया और बचे हुए पानी को अन्धे की ऑखों पर मल दिया, और दुआ के लिए हाथ उठाये आप की दुआ बारगाहे ख़ुदा बन्दी में फौरन .कुबूल हुई और ऑन्धे आदमी की ऑखो में रौशनी पैदा हो गई, अब वह संसार की रंगगीनिया देख सकता था। लोगो में हर्ष की लहर दौड़ गई। इस करामत से सूरत और आस पास के इलाकों में रहने वाले आपकी बहुत इ़ज़्ज़त करने लगे और आप के बताये हुए मार्ग पर चल पड़े।

★★★

ईसन नदी

जब हज़रत सैय्यदना बदी उद्दीन ज़िन्दा शाह मदार रज़ि अल्लाह ताला अन्हो 818 हि0 बमुताबिक सन् 1398 ई0 को अपनी आख़री क़याम गाह मकनपुर तशरीफ़ लाये तब यहाँ पर एक बड़ा तालाब था जो .ख़ुश्क हो चुका था। उस समय आप के साथ अनेको .खुलफ़ा भी आये थे जिन्हें वु.जु वगैरा के लिए पानी की ज़रूरत महसूस हुई।

हज़रत यासीन शाह (रह0)सरकार मदार पाक के ख़ास ख़लीफ़ा मे से थे, आपने अपने ख़लीफ़ा हज़रत यासीन शाह (रह0) को पानी लाने को कहा आप पानी लेने गये परन्तु पानी कहीं नहीं मिला, तब वापिस आकर विनती की हु.जूर यहाँ पानी कहीं नहीं मिला, तब सैय्यदना मदारूल आलमीन (रजि0) ने अपना असा (हाथ में पकड़ने वाली छड़ी)देकर फरमाया कि जाओ पश्चिम से पूरब को एक लकीर खेंच देना तुमको पानी मिल जायेगा। आप ने ऐसा ही किया एक लकीर पश्चिम से पूरब को खींच दी जिससे एक चश्मा जारी हो गया और एक नदी का रूप धारण कर लिया। यही नदी ईसन नदी के नाम से जानी जाती है।

इस नदी में खुदा पाक ने कई गुण दिये हैं, लोगों में इस नदी के प्रति अपार श्रद्धा हैं। बीमार लोग इसमें नहातें हैं और इसका जल गृहण करते हैं तो स्वस्थ हो जाते हैं। लोग इस नदी के पानी को श्रद्धा पूर्वक प्रसाद के रूप में अपने–अपने घर पर ले जाते हैं।

Scanned with CamScanner

मदार गेट मकनपुर शरीफ़
जिसको मेला कमेटी मकनपुर ने बनवाया

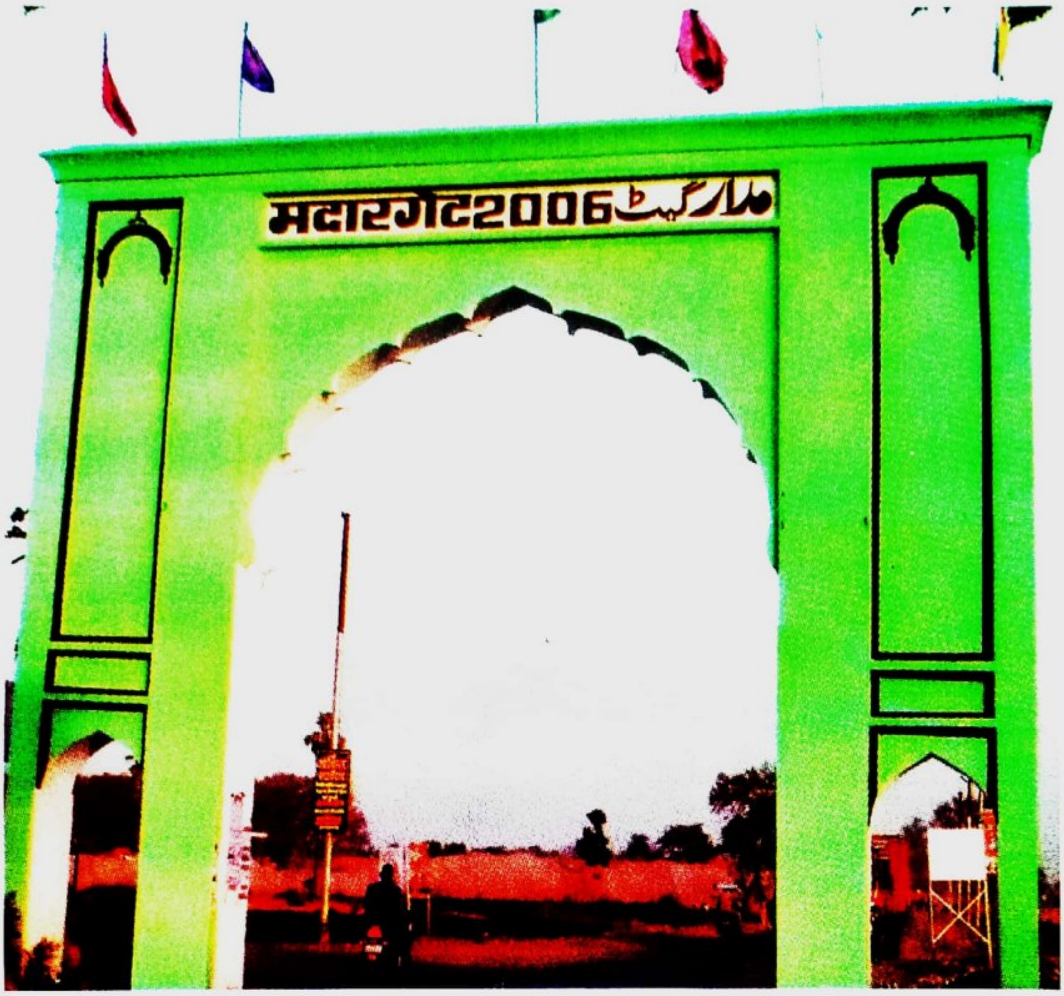

ईसन नदी मकनपुर शरीफ

Scanned with CamScanner

सिलसिले मदारिया की प्रमुख हस्तियाँ

वैसे तो हज़रत सैय्यद बदी उद्दीन ज़िन्दा शाह मदार (रज़ि0) के लगभग 1442 खुलफ़ा देश–विदेश में हैं जिनमें से कुछ प्रमुख .खुलफ़ा का संक्षेप में परिचय आप के समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ। अधिक जानकारी के लिए सिल सिले मदारिया की किताबों को पढ़कर सभी .खुलफ़ा का विस्तार से जीवन परिचय प्राप्त कर सकते हैं।

हज़रत सैय्यद ख़्वाजा अबु मोहम्मद अरगून (रह0)

आप का नाम हज़रत सैय्यद अबु मोहम्मद उपनाम ख़्वाजा अरगून आप शहज़ादगान मदारूल आलमीन व जानशीन हज़रत कुतबुलमदार एवं ख़लीफ़ा हैं। आप की मज़ार मुक़द्दस एवं मक़बरा मकनपुर शरीफ़ में है। आप का उर्स शरीफ़ प्रति वर्ष 6 जमादिउल आख़िर को मनाया जाता है।

हज़रत सैय्यद ख़्वाजा अबु तुराब फ़न्सूर (रह0)

आप हज़रत सैय्यद ख़्वाजा अबु मोहम्मद अरगून (रह0) के छोटे भाई है तथा आप हज़रत सैय्यद ख़्वाजा अबु मोहम्मद अरगून के बाद सज्जादा नशीन हुए आप की मज़ार पाक भी मकनपुर शरीफ़ में है। आप की वफ़ात 3 रमज़ानुल मुबारक 897 हि0 में हुई है।

★★★

Scanned with CamScanner

हज़रत सैय्यद ख़्वाजा अबुल हसन तैफ़ूर (रह0)

हज़रत सैय्यद ख़्वाजा अबुल हसन तैफ़ूर (रह0) भी हज़रत सैय्यद ख़्वाजा अबु मोहम्मद अर.गून (रह0) के तीसरे भाई हैं। आप की वफ़ात भी माह रमज़ानुल मुबारक 800 हिजरी में मकनपुर शरीफ़ में ही हुई तथा आप की मज़ार मुक़द्दस भी हज़रत सैय्यद ख़्वाजा अबुतुराब फ़न्सूर (रह0) के पास ही बनी हुई है।

इन तीनो हज़रात को हरसए ख़्वाजगान भी कहा जाता है तथा इन्ही से मदारिया सिल सिले का गिरोह ख़ादमान जारी हुआ। जिन्हे सज्जादगान भी कहा जाता है।

हज़रत सैय्यद जमाल उद्दीन जाने मन जन्नती (रह0)

आप का नाम सैय्यद जमाल उद्दीन उपनाम जाने मन जन्नती है आप ग़ौसुल आज़म हज़रत सैय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी (रज़ि0) के भान्जे तथा आपकी बहन सैय्यदा बीबी नसीबा के बेटे हैं जो हज़रत शाह मदार (रज़ि0) की दुआ से पैदा हुए और आप बचपन से ही सरकार मदार पाक की ख़िदमत में रहे आप सरकार शाह मदार साहब के मुरीद व ख़लीफ़ा हैं आप से मदारिया सिल सिले का गिरोह "दीवान गान" जारी हुआ।

आप ने 400 वर्ष की उम्र पायी है, आप अविवाहित थे तथा अपने बालों को जीवन भर नही कटवाया। गिरोह दीवान गान से मलंग होते हैं। आप की मज़ार मुक़द्दस तथा मक़बरा "हिलसा" जतीनगर (बिहार) में है।

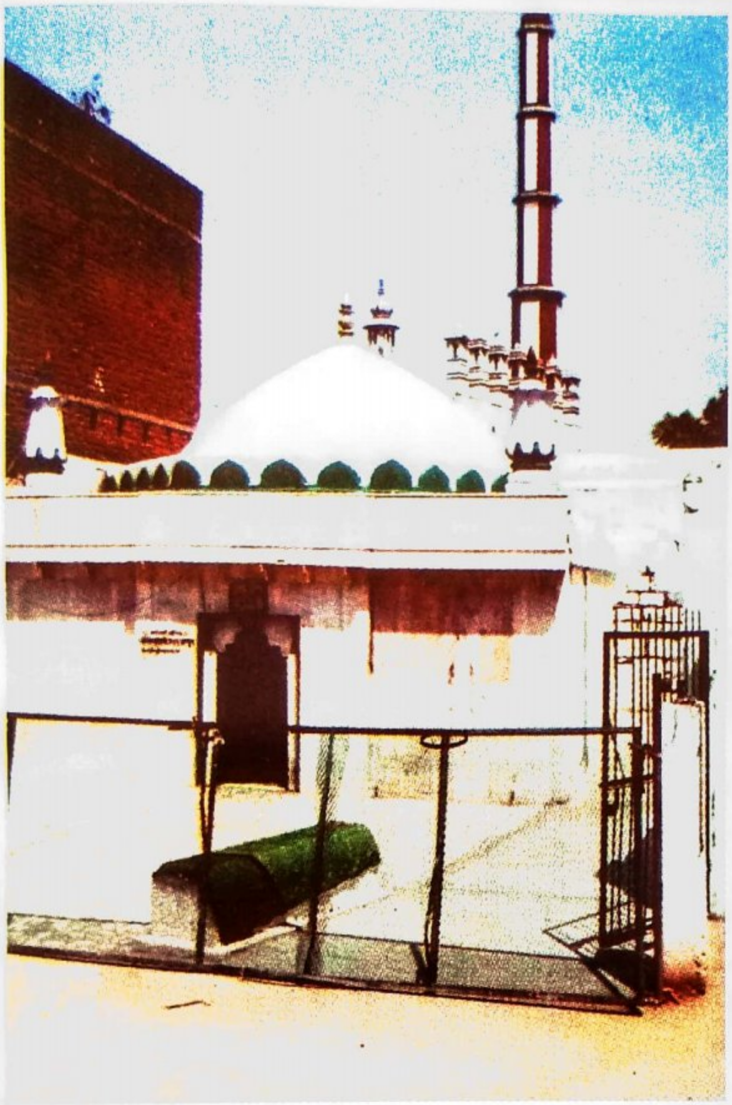

आस्ताने आलिया
हजरत ख्वाजा
सैयद अबु
मोहम्मद अरगून
रजि०
मकनपुर शरीफ़

आस्ताना आलिया हजरत ख्वाजा सै० अबु तुराब मो० फनसूर रह०
हजरत ख्वाजा सै० अबुल हसन तैफूर रह० मकनपुर शरीफ

हज़रत काज़ी मुतहर कल्ला शेर (रह0)

हज़रत काज़ी मुतहर कल्ला शेर (रह0) अपने ज़माने के बहुत बड़े प्रकण्ड विद्धान थे, आप कानपुर नगर ज़िले के ही एक स्थान भावर शरीफ़ के निवासी हैं। आप शाह मदार (रज़ि0) से अत्यधिक प्रेम करते थे, इसी लिए हजरत शाहमदार सहाब ने आप को ''आशिक'' की उपाधि से अलंकृत किया तथा आप शाहमदार के प्रसिद्ध ख़लीफ़ा में से एक हैं। आप ही से मदारीया सिल सिले का गिरोह आशिकान प्रारम्भ हुआ। गिरोह आशिकान के लोग हज़रत शाहमदार के रौज़े की ओर पीठ नही करते हैं। गिरोह आशिकान मे बहुत से प्रकण्ड विद्धान मलंग हुए हैं। आप की मज़ार मुकद्दस भावर शरीफ़ में है।

हज़रत काज़ी महमूद कन्तूरी (रह0)

आप का नाम काज़ी महमूद है, कन्तूर शरीफ़ के निवासी हैं, आप बहुत बड़े विद्धान थे। हज़रत शाह मदार (रज़ि0) से आपकी जौनपुर मे मुलाक़ात हुई मदार पाक के व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित हुए, आप वहीं पर मुरीद हुए तथा शाहमदार सहाब ने आपको अपना ख़लीफ़ा मुकर्रर किया आप से मदारिया सिल सिले का गिरोह तालिबान जारी हुआ। आप की मज़ार मुकद्दस कन्तूर शरीफ़ ज़िला बाराबंकी में हैं।

Scanned with CamScanner

हज़रत मीठे मदार (रह0)

हज़रत मीठे मदार जो सरकार मदार पाक की दुआ से पैदा हुए आप का नाम मीठे मदार, शाह मदार साहब ने ही रक्खा आप हज़रत क़ाज़ी महमूद कन्तूरी (रह0) के पुत्र हैं। आप का उर्स शरीफ़ हज़रत शाह मदार साहब के उर्स शरीफ़ की तारीख़ों में ही कन्तूर शरीफ़ में प्रति वर्ष मनाया जाता है।

हज़रत दाउद पीर मदारी (रह0)

हज़रत दाउद पीर मदारी (रह0) की पैदाईश 757 हि0 में बुख़ारा में हुई, आप के पिता हज़रत सैय्यद अब्दुल्लाह मदीना शरीफ़ से हिजरत करके बुख़ारा में आबाद हो गये थे आप 20 वर्ष की आयु में बहुत बड़े विद्धान हो गये थे। हज़रत शाहमदार साहब जब बुख़ारा पहुँचे तो आप हज़रत शाह मदार साहब को बुखारा पहुॅचने से पूर्व ही सपने में देखचुके थे आपने जैसा देखा था वैसा ही सामने देख कर पाया इस बात से प्रभावित होकर सरकार मदार पाक के मुरीद होने के बाद अपना वतन छोड़कर शाहमदार साहब के साथ हो लिए बुखारा, अमर कन्द से गुजरात होते हुए राजिस्थान के ज़िला बून्दी के कस्बा केशव राव पाटन पहुँचे हज़रत शाहमदार साहब ने इनको वही पर लोगों को मोहब्बत, इंसानियत व एकता का पैग़ाम देने के लिए रहने का आदेश दिया, आप ने वहीं पर अपना अंन्तिम स्थान बना लिया। वाफ़ात 883हिजरी में हुई आप की मज़ार मुकद्दस वही पर है।

Scanned with CamScanner

हज़रत यासीन शाह (रह0)

हज़रत यासीन शाह (रह0) हज़रत शाहमदार (रजि0) के बहुत प्रसिद्ध ख़लीफ़ा एवं बहुत ही चमत्कारी विद्धान थे। आप शाहमदार साहब ही के साथ रहते थे। ईसन नदी का नाम आप ही के नाम से मन्सूब है। आप की मज़ार मुकद्दस दरगाह हज़रत शाहमदार (रजि0) के दक्षिणी फाटक के पास मकनपुर शरीफ़ में है।

हज़रत सैय्यद मीर शमसुद्दीन हसन अरब (रह0) व सैय्यद मीर रूकनउद्दीन हसन अरब (रह0)

इन दोनो भाईयों की मज़ार मुकद्दस मकनपुर शरीफ़ के पास में गूजेपुर गॉव में बनी हुई है आप का उर्स शरीफ़ प्रति वर्ष 12 रबिउल अव्वल को मनाया जाता है। आप दोनो हज़रात सरकार मदार पाक के मुरीद व ख़लीफ़ा है। आप ने हज़रत शाह मदार के साथ अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत किया।

Scanned with CamScanner

हज़रत बाबा मान दरियाई दूल्हा (रह0)

हज़रत बाबा मान दरियाई हज़रत शाहमदार के बहुत ही प्रसिद्ध ख़लीफ़ा है। आप बहुत ही चमत्कारी बु.जुर्ग एवं बहुत बड़े विद्धान थे। आप की मज़ार मुकद्दस शहर बड़ौदा (गुजरात) में है। आप की वफ़ात 1012 हिजरी में हुई थी।

हज़रत ख़ैर उद्दीन उर्फ़ मक्कन सरवाज़ (रह0)

आप का नाम ख़ैर उद्दीन है, उपनाम मक्कन सरवाज है और अधिकतर लोग इसी उपनाम से आप को याद करते हैं आप हज़रत शाह मदार (रज़ि0) से अत्यधिक प्रेम व विश्वास करते थे, आपने हज़रत शाह मदार के रौज़े शरीफ़ पर सोने का कलश चढ़ाया था जो आज भी मौजूद है।

आप ही के नाम पर मकनपुर का नाम पड़ा आप की मज़ार शरीफ़ रसूलाबाद रोड पर मकनपुर शरीफ़ में है।

हज़रत सैय्यद अहमद बादपा उर्फ मीरा शाह बाबा (रह0)

आप का नाम सैय्यद अहमद बादपा तथा उपनाम मीरा शाह बाबा है। आप बड़े ही चमत्कारी बु.जुर्ग थे। सोलाह वर्ष की तलाश व जुस्तुजु के बाद सिल सिलये मदारिया के एक बुलन्द पाया बु.जुर्ग व ख़लीफ़ा हुए आप की मुलाकात शाहमदार साहब से कुल्हुवावन में हुई। आप की करामत ख़ास यह है कि आपने बादशाहों और फ़कीरों के सिर पर ताज रक्खा। आप की मज़ार मुकद्दस कुल्हुवावन में है। आप जाने मन जन्नती (रह0) के भाई हैं।

हज़रत सैय्यद पीर मोहम्मद हनीफ़ शाह मदारी बुख़री (रह0)

आप की पैदाईश पहली ज़ीक़ाद 725 हिजरी दिन जुमा को शहर बुख़रा में हुई। आप का वतन बुख़ारा है तथा आप सादाते बुख़ारा के बु.जुर्ग हैं। जब सरकार मदारूल आलमीन बुख़रा शहर में पधारे तो आप की करामातों को देख कर बहुत प्रभावित हुए और हज़रत शाहमदार की मुरीदी में आकर अपना वतन छोड़ कर हमेशा के लिए आप की ख़िदमत में आ गये और आप के साथ अन्तिम समय तक रहे। हज़रत शाह मदार साहब के विसाल के बाद आप गोरखपुर होते हुए गोण्डा पहुँच कर बलरामपुर के उत्तर—पश्चिम राब्ती नदी के पार जंगल में एक ग़ैर आबाद जगह पर आपने अपना अन्तिम स्थान बनाया आप के पहुॅचने के बाद उस जगह पर दो

Scanned with CamScanner

गॉव मथुरा व मिलानगर आबाद हुए। आप की वफ़ात 10 ज़िल हिज्जा 850 हिजरी मे हुई। वही पर आप की मज़ार शरीफ़ बनी है।

हज़रत सैय्यद जलाल उद्दीन उर्फ शाहदाना बाबा (रह0)

आप का नाम हज़रत सैय्यद जलाल उद्दीन तथा उपनाम शाहदाना है। आप बुख़ारा के रहने वाले हैं तथा सादाते बुख़ारा में से हैं। आप भी हज़रत शाहमदार (रज़ि0) के बुख़ारा में पहुँचने पर हज़रत सैय्यद पीर मोहम्मद हनीफ़ शाहमदारी बुख़ारी के साथ हज़रत शाहमदार साहब के साथ में हमेशा के लिए आप की ख़िदमत में आ गये थे। आप हज़रत शाह मदार साहब के मुरीद व ख़ास ख़लीफ़ा मे से एक है। आप बड़े ही चमत्कारी बु.जुर्ग थे तथा बहुत बड़े प्रतिष्ठित विद्धान थे जब आप हज़रत शाहमदार साहब के साथ ग्वालियर (मध्य प्रदेश) में थे तो आप की इल्मी सलाहियत एवं इल्म से लवरेज़ जवाबात को सुन कर हज़रत शाहमदार बहुत .खुश हुए और आपको शाहमदार साहब ने "शाहदाना" की उपाधि से अलंकृति किया। तब से अधिकॉश लोग आप को इसी नाम से याद करते हैं। हज़रत शाह मदार ने आपको ग्वालियर से ही बरेली के लिए रवाना किया। जहॉ पर आप ने रह कर इंसानियत व मोहब्बत का पैग़ाम फैलाया, उस समय बरेली छोटा सा कस्बा था आपके पहुँचने से बरेली, बरेली शरीफ़ के नाम से जाना जाने लगा। आप की वफ़ात बरेली शरीफ़ में 785 हिजरी में हुई और वही पर आप की मज़ार मुकद्दस व दरगाह शरीफ़ बनी हुई है।

हज़रत शेख़ मोहम्मद जहिन्दा बदायूनी (रह0)

आप का नाम शेख़ मोहम्मद एवं आपका उपनाम जहिन्दा है। आप अपने ज़माने के बहुत प्रसिद्ध विद्धान एवं चमत्कारी व्यक्ति थे। आप हज़रत शाहमदार (रज़ि0) के मुरीद व ख़लीफ़ा थे आप को शाहमदार साहब ने बदायूँ शरीफ़ में भेजा था जहॉ पर आपने इंसानियत व मोहब्बत का पैग़ाम अवाम को दिया तथा वहीं पर आपने जीवन की अन्तिम सॉस ली वहीं पर आप की मज़ार व मक़बरा बना हुआ है। जहॉ से आज भी फ़ैज़ाने मदारूल आलमीन वितरण किया जा रहा है।

हज़रत शेख़ सद्रुद्दीन जौनपुरी (रह0)

हज़रत सैय्यद बदी उद्दीन ज़िन्दा शाहमदार रज़ि अल्लाह ताआला अन्हों जब जौनपुर गये तब वहॉ पर सबसे पहले आपके मुरीद व ख़लीफ़ा हज़रत शेख़ सद्रुद्दीन (रह0) हुए। आप बहुत ही प्रसिद्ध विद्धान एवं चमत्कारी बु.जुर्ग थे। हज़रत शाहमदार साहब से अत्याधिक प्रेम व विश्वास करते थे।

★★★

Scanned with CamScanner

हज़रत शेख़ मोहम्मद जहिन्दा बदायूनी (रह0)

आप का नाम शेख़ मोहम्मद एवं आपका उपनाम जहिन्दा है। आप अपने ज़माने के बहुत प्रसिद्ध विद्धान एवं चमत्कारी व्यक्ति थे। आप हज़रत शाहमदार (रज़ि0) के मुरीद व ख़लीफ़ा थे आप को शाहमदार साहब ने बदायूँ शरीफ़ में भेजा था जहॉ पर आपने इंसानियत व मोहब्बत का पैग़ाम अवाम को दिया तथा वहीं पर आपने जीवन की अन्तिम सॉस ली वहीं पर आप की मज़ार व मक़बरा बना हुआ है। जहॉ से आज भी फ़ैज़ाने मदारूल आलमीन वितरण किया जा रहा है।

हज़रत शेख़ सद्रूद्दीन जौनपुरी (रह0)

हज़रत सैय्यद बदी उद्दीन ज़िन्दा शाहमदार रज़ि अल्लाह ताआला अन्हों जब जौनपुर गये तब वहॉ पर सबसे पहले आपके मुरीद व ख़लीफ़ा हज़रत शेख़ सद्रूद्दीन (रह0) हुए। आप बहुत ही प्रसिद्ध विद्धान एवं चमत्कारी बु.जुर्ग थे। हज़रत शाहमदार साहब से अत्याधिक प्रेम व विश्वास करते थे।

★★★

Scanned with CamScanner

हज़रत सैय्यदना शाह मदार (रज़ि०) के सन्दर्भ में प्रचलित मुहावरे और लोक्तियाँ

मरे को मारे शाहमदार – यह मुहावरा तसव्वुफ़ की तरफ इशारा करता है। हज़रत सैय्यदना शाहमदार (रज़ि0) जो पैदाईशी वली थे, उन्होने अपनी नफ़स .कुसी करके दुनिया की तमाम ऐशो आराम को छोड़कर अल्लाह और उसके रसूल के मोहतर्म पैग़ाम को दुनिया में पहुचाने के लिए अपना वतन और परिवार छोड़ कर निकल पड़े थे परन्तु आप को इस से भी सुकून नही मिला और 40 वर्ष की उम्र से आपने पूरी ज़िन्दगी को एक दिन मान कर जीवन भर का रोज़ा रख़ लिया और अपने नफ्स को दुनियावी तमाम ख़्वाहिशात से मार लियां। इसी बात को लेकर ही कहा जाता है कि "मरे को मारे शाहमदार"।

गंगा और मदार का क्या साथ – जब .खुद को किसी से अलग करना हो तब ये कहा जाता है। परन्तु इस का तात्पर यह है कि गंगा का मार्ग एक ही है जो सीधी बहती है, परन्तु मदार वह होता है जो सम्पूर्ण संसार का चक्कर लगाता है।

मदार गये मदाये सुध – यह मुहावरा जब कोई इंसान . फुजूल .खर्ची करता है, तब कहा जाता है "मदार गये मदाये सुध"

आओ मेरे भोले मदार – इस मुहावरे का तात्पर यह है कि जब कोई सीधा–सच्चा वयक्ति आता है तब उसकी

Scanned with CamScanner

आवभगत में ये कहते हैं कि "आओ मेरे भोले मदार"

पैसा न कौढ़ी मदारन को दौड़ी – इस मुहावरे को तब कहा जाता है जब मनुष्य अपनी हैसियत से बढ़कर कार्य करने की कोशिश करता है परन्तु उसका कार्य नहीं हो पाता है, तब कहा जाता है कि "पैसा न कौढ़ी मदारन को दौड़ी"

बाद जुमाजो कीजौ कार्य उसके ज़ामिन शाह मदार इस का तात्पर यह है कि नमाज़ जुमा के बाद ही कोई कार्य करना चाहिए ऐसा करने से वह कार्य अवश्य होगा।

मेला मदार – इस मुहावरे को भीड़ या मेले की ओर इशारा करके कहा जाता है।

सारा दारो मदार तुम पर है – किसी आवश्यक कार्य को किसी दूसरे व्यक्ति के हवाले कर उसे ज़िम्मेदार बनाया जाता है, तब कहते है बस भैय्या "अब सारा दारो मदार तुम पर ही है"।

जय हो मदार बाबा की – हिन्दु जनमानस में जब कोई किसी कार्य में सफलता प्राप्त कर लेता है या किसी गम्भीर समस्या से बच जाता है तब यह नारा जय हो मदार बाबा की कहा जाता है। जो हिन्दु समाज में बहुत अधिक प्रसिद्ध व प्रचलित है।

दम मदार बेड़ा पार – ये नारा मदारिया सिल सिले का अत्यधिक प्रचलित व प्रसिद्ध नारा है। किसी कार्य को शुरू करने में बिस्मिल्लाह शरीफ़ के बाद यह नारा बोला जाता है तथा दरगाह शरीफ़ में दर्शन हेतु आने पर एवं किसी भी सफ़लता पर इस नारे को श्रद्धा के साथ बोला जाता है।

मदार के खेत में खड़े हैं – इस मुहावरे का तात्पर कसम

खाने का होता है।

जैसे— मेला बसन्त के मौके पर कितनी जातियो के लोग मकनपुर आकर अपने—अपने समाज की पूरे वर्ष की पंचायत करते हैं, तब कोई व्यक्ति अपनी बात की सच्चाई प्रमाणित करने के लिए ऐसा कहता है कि मदार के खेत में खड़ा हूँ और अपनी बात कह रहा हूँ।

Scanned with CamScanner

मलंगान हज़रात में पढ़े जाने वाले नारे व क़तात

(1) लुत्फ़े अम्बिया, करमे औलिया बाबा फ़ज़ले पंजतन
या अली–अल मदद्

(2) हक़ अल्लाह, मोहम्मद, मदार
आँखों की रौशनी दिल का क़रार
दम पीर शाहमदार

(3) दुनिया हैफ़ है कि मर्दो कि दम्माल हो चुकी
आगाह इससे ख़ल्क बह रहाल हो चुकी
रौशन चिराग हज़रते .कुतबुल मदार हैं
अब सीधे चौक पर चलो दम्माल हो चुकी।।

(4) शाकी ख़मे ख़ाना रहमत हैं ज़िन्दा शाहमदार
सच ये है परवानाये वहदत हैं जिन्दा शाहमदार
फ़ैज़ पाया एक ज़माने ने इसी दरबार से
.ज़ुल्मतो में नूर की सूरत है ज़िन्दा शाहमदार

(5) अल्लाह हक़ अल्लाह
मोहम्मद हक़ अल्लाह
बोलो मदार हक़ अल्लाह
आशिक़ाने रसूल अल्लाह

★★★

Scanned with CamScanner

देश-विदेश में सरकार मदार पाक के चिल्लागाह व दरगाहों की संक्षेप में सूची

1. चिल्ला गाह सरकार मदार, चेचटकूना, राजिस्थान
2. दरगाह चिल्ला हज़रत कुतबुल मदार, अहिलवारा शरीफ़, दरभंगा, बिहार
3. चिल्लाह गाह सरकार मदार
टुम्कुर, बंगलौर, कर्नाटक
4. चिल्लाह गाह सरकार मदार
अहमदाबाद, गुजरात
5. चिल्लाह गाह मदार पाक
खम्बात, गुजरात
6. चिल्लाह गाह सरकार मदार
भीड़वाड़ा, राजकोट
7. मदार पाक के कदमों के निशान
गिर्रनार पहाड़ी
8. डेरा बाबा शाह मदार
पायल, लुधियाना, पंजाब

Scanned with CamScanner

9. डेरा बाबा शाह मदार मरौली .खुर्द बाड़ पास रोड पठान कोट पंजाब

10. डेरा बाबा शाह मदार
भट्रिडा शरीफ़, पंजाब

11. डेरा बाबा शाह मदार
दीदा, दीना नगर, गुरदास पुर, पंजाब

12. डेरा बाबा शाह मदार
भट्टम जेल रोड, गुरदासपुर, पंजाब

13. मदार चिल्लाह शरीफ़
अदनादा, दातर

14. सरकार मदार चिल्लाह मस्जिद
गोदी चौक मन्सूर, मध्यप्रदेश

15. मदार शाह मस्जिद
अजमेर शरीफ़

16. चिल्लाह गाह सरकार मदार
कोकिला पहाड़ी अजमेर शरीफ़

17. चिल्लाह गाह मदार पाक
कन्नौज, उ0 प्र0

18. चिल्लाह गाह मदार पाक
चम्बा, मध्य प्रदेश

19. ईबादत गाह मदारूल आलमीन
जबलपुर, मध्य प्रदेश

20. चिल्लाह गाह सरकार मदार
उज्जैन, मध्य प्रदेश

21. चिल्लाह शरीफ़ कुतबुल मदार
नागपुर, महाराष्ट्र

Scanned with CamScanner

22. चिल्लाह गाह शेख़ बदी उद्दीन
मन्दसौर
23. चिल्लाह गाह मदार पाक
दमोह
24. चिल्लाह गाह सरकार मदार
मुम्बई, महाराष्ट्र
25. चिल्लाह शरीफ़ मदारे आज़म
चम्पा पहाड़ी, पंजाब
26. चिल्लाह गाह शरीफ़ मदार पाक
झॉसी के उत्तर में, कंण्डेर पर
27. चिल्लाह गाह सरकार मदार
मंसूरी के उत्तर में पहाड़ पर
28. चिल्लाह गाह मदार शरीफ़
हिमालय, नैनीताल
29. मदार चिल्लाह शरीफ़
भरतपुर, राजस्थान
30. दरगाह मदार शाह
हैदराबाद, आन्ध्र प्रदेश
31. दरगाह चिल्लाह शाह मदार
कोलम्बों, श्रीलंका
32. चिल्लाह गाह शाह मदार
करॉची, पाकिस्तान
33. दरबार शाह मदार
चेक न0 90 शहीवाल, अफगानिस्तान
34. फकीर का पेड़ शाह मदार
सिंध, पाकिस्तान

Scanned with CamScanner

35. चिल्ला मदार पहाड़ी
नैपाल

इनके अलावा दक्षिण अ.फ्रीका, चीन, बैरूत, मोरक्को, बंगलादेश एवं सउदी अरब आदि देशो में तथा भारत में अनेक स्थानों पर भी सरकार मदारुल आलमीन (रजि0) के चिल्ला गाह व दरगाह वगैरा हैं।

Scanned with CamScanner

जिन किताबों/तहरीरों/सर्वे रिपोर्ट से मदद ली गयी

अगर आप पूर्ण जानकारी या हवाले देखना चाहें तो इन किताबो / तहरीरों / सर्वे रिपोर्ट में देख सकतें हैं।

क्र. स.	नाम किताब रिपोर्ट	स्थान	लेखक का नाम
1.	सफ़ीनतुल औलिया	देवबन्द, उ0प्र0	शहज़ादा दारा शिकोह कादरी
2.	मदारे आज़म	1403 हिजरी	हज़रत मौ. फरीद अहमद चिश्ती
3.	मक्का– मदीना–मकनपुर	सन् 206 ई0	जी. जी. गौतम
4.	तारीखे मदारे आलम	सन् 2002 ई0	सैयद महज़र अली
5.	गद्दारों की मुख्तसर तारीख़	सन् 2012, ई0 मुम्बई	शाह फ़ायक अहमद आज़मी मदारी
6.	स्मारिका मेला मकनपुर	सन् 1971, 1983, 1985, 1998	मेला मकनपुर
7.	नई दुनिया साप्ताहिक	1994	नई दिल्ली
8.	हुदा डायेजेस्ट	नई दिल्ली	औलिया अल्लाह नम्बर
9.	भारत की पुरातित्व सर्वे रिपोर्ट	1881–1882 ई0	एसे कॉन्डर एलोतिया
10.	ग्राम का इतिहास सर्वे रिपोर्ट	1967	ज़िला बान्दोबस्त अधिकारी कानपुर
11.	हवाला दैनिक जागरण	बरेली 28 सितम्बर 1998	आर0 के0 सिंह (वरिष्ठ पत्रकार)

Scanned with CamScanner

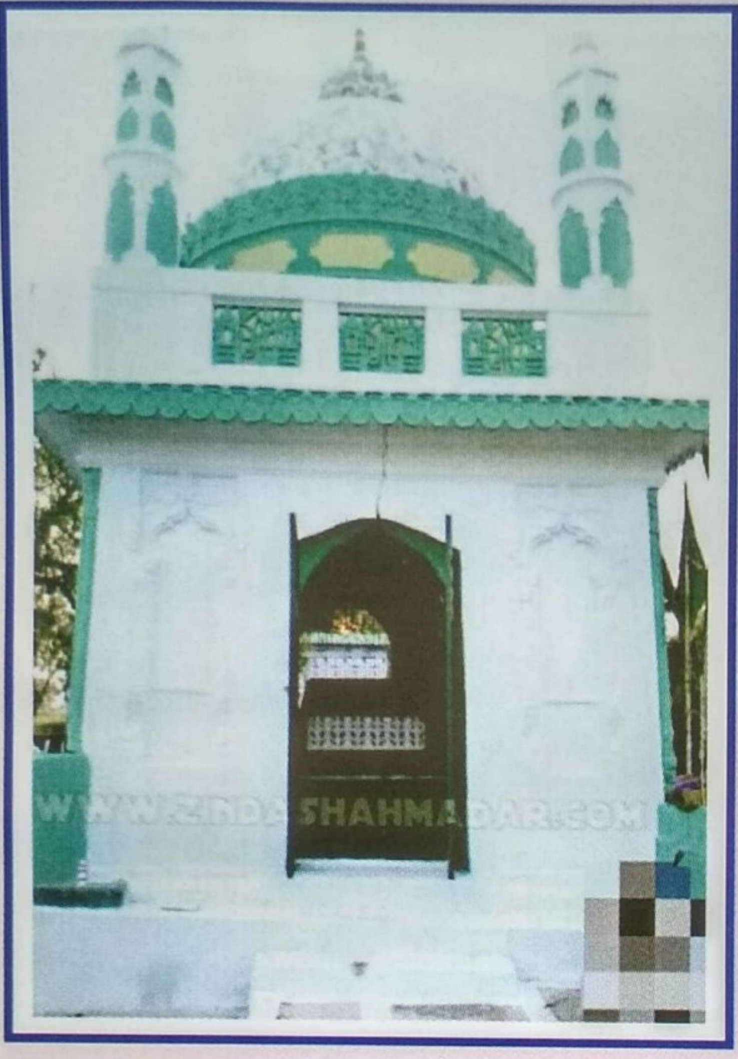

चिल्लागाह
सरकार मदार
जबलपुर

चिल्लागाह सरकार मदार, उज्जैन (मध्य प्रदेश)

Scanned with CamScanner

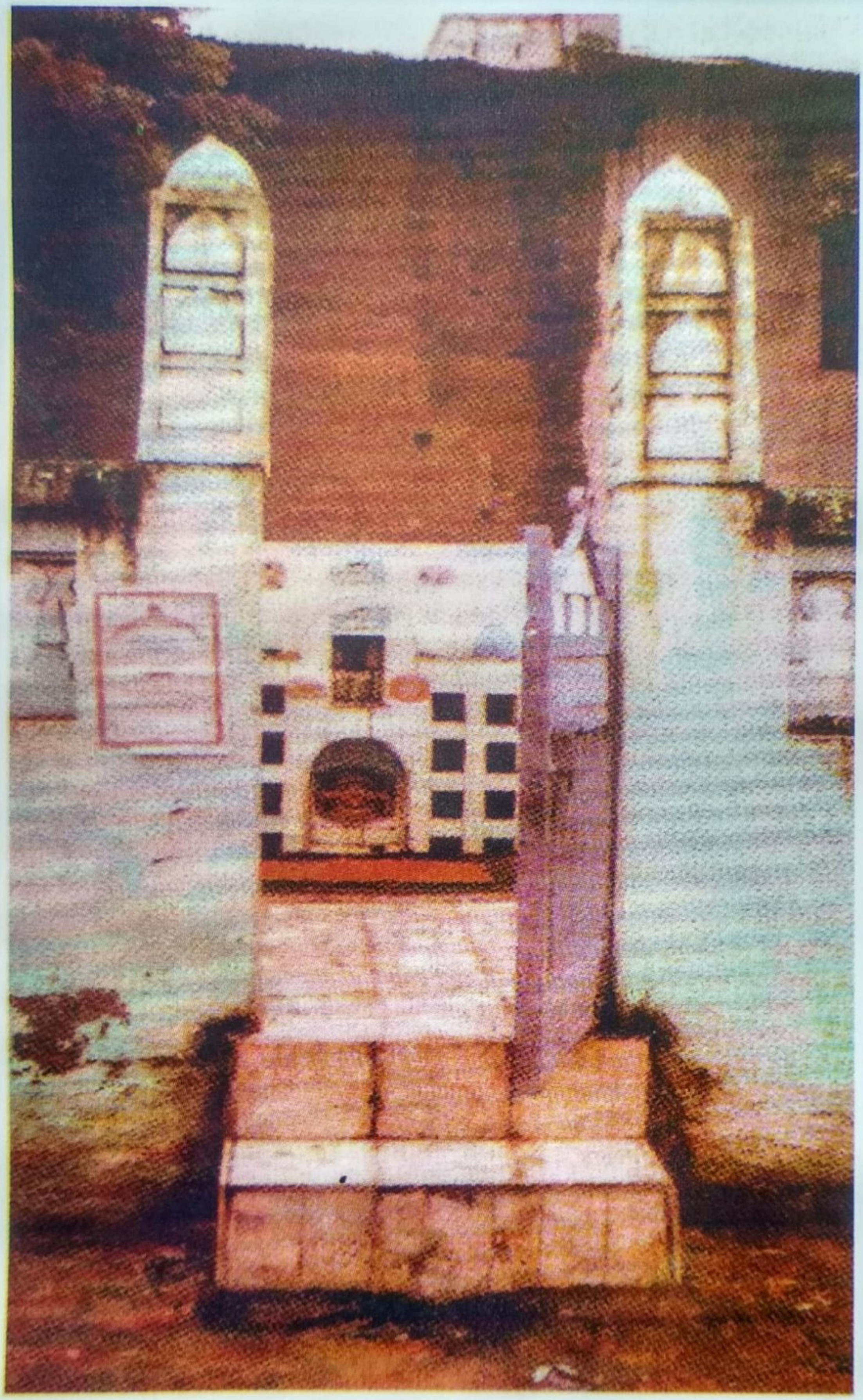

मदार चिल्ला शरीफ - अदनादा, दातार।

Scanned with CamScanner

सरकार मदार चिल्ला मस्जिद -
गोदीचौक, मन्दसौर (एम.पी.)

Scanned with CamScanner

खम्बात का वह मकाम जहां लुक़्मे-शीरब्रजं हुजूर मोहम्मद मुस्तफा सल. अल. ने सरकार मदार पाक को खिलाये आज भी यहां तीन चिल्लों के निशान मौजूद हैं। "चिल्ला हयातुन्नबी" "चिल्ला हज़रत ख़िर्ज अलैह." "चिल्ला सरकार मदार"।

Scanned with CamScanner

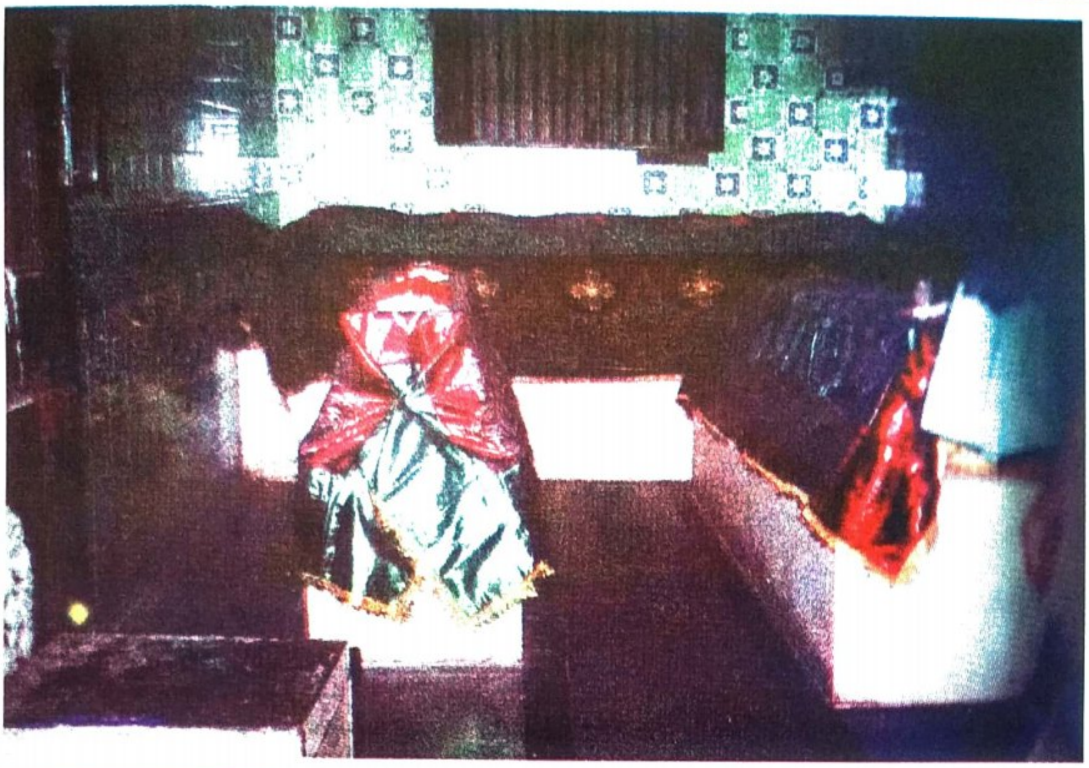

चिल्ला गाह सरकार मदार, मुम्बई

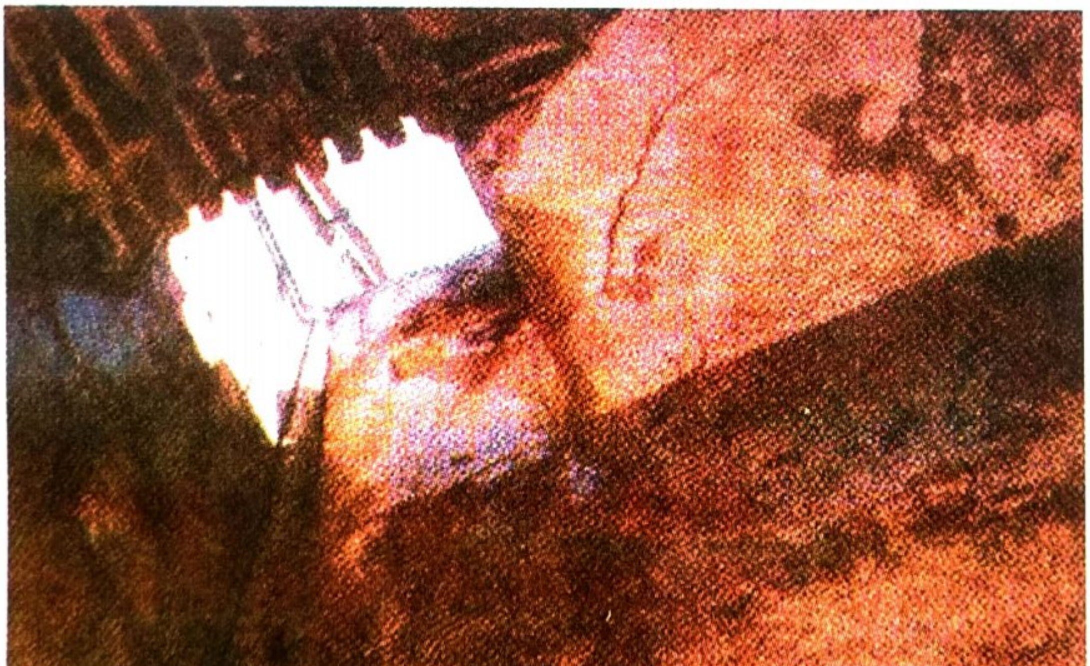

खम्बात में पहाडी के ऊपर चिल्ला है इस रास्ते पहाडी
के अन्दर दालान आज भी देखा जा सकता है
जिसका तारीखे मदारे आलम में जिक्र है।

Scanned with CamScanner

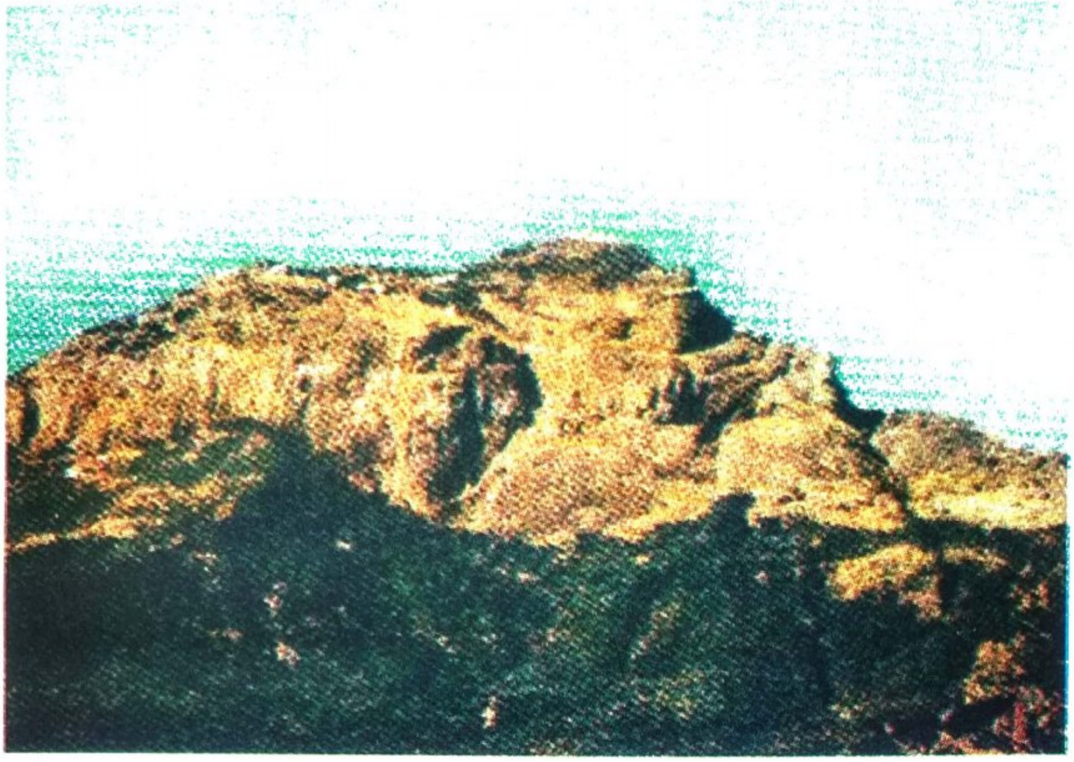

गिर्नार पहाड़ी पर सरकार मदार पाक
के क़दमों के निशान।

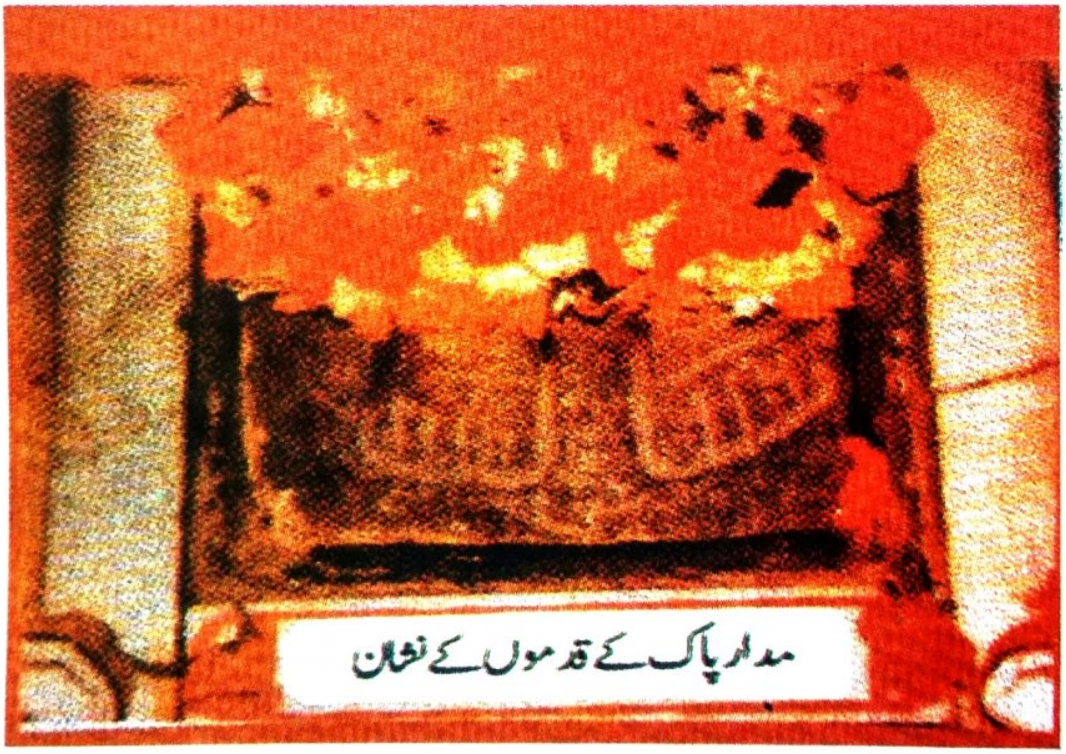

गिर्नार पहाड़ी पर सरकार मदार पाक
के क़दमों के निशान।

Scanned with CamScanner

चिल्ला गाह सरकार मदार - अहमदाबाद गुजरात

चिल्लागाह सरकार मदार
उज्जैन (मध्य प्रदेश)

Scanned with CamScanner

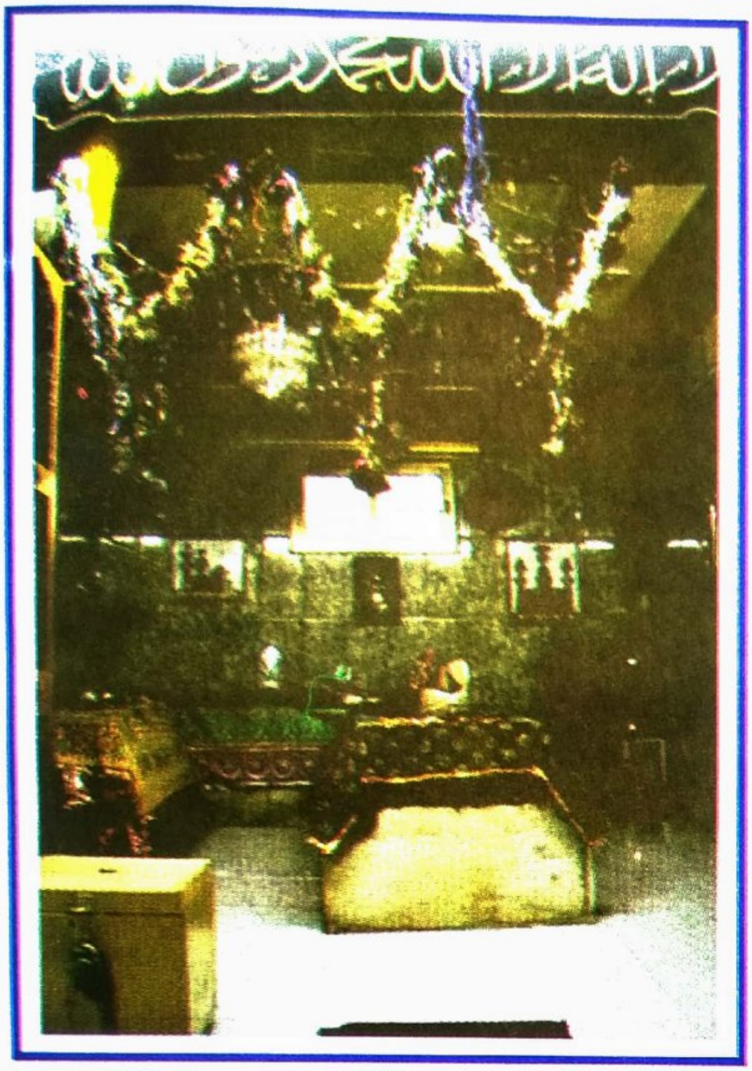

चिल्लागाह
सरकार मदार
पान गुल्लीनुल
बाज़ार हैदराबाद

चिल्लागाह सरकार मदार, सालानीपुर रतलाम

Scanned with CamScanner

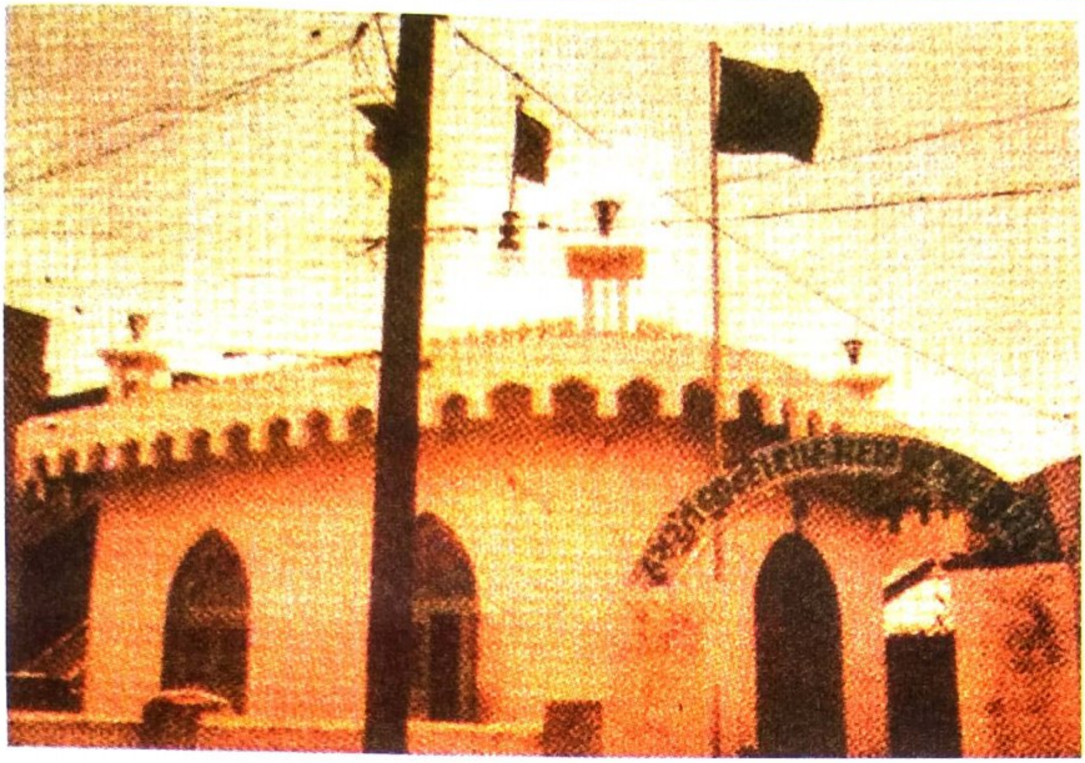

चिल्ला गाह सरकार मदार - भीड़वाड़ा, राजकोट।

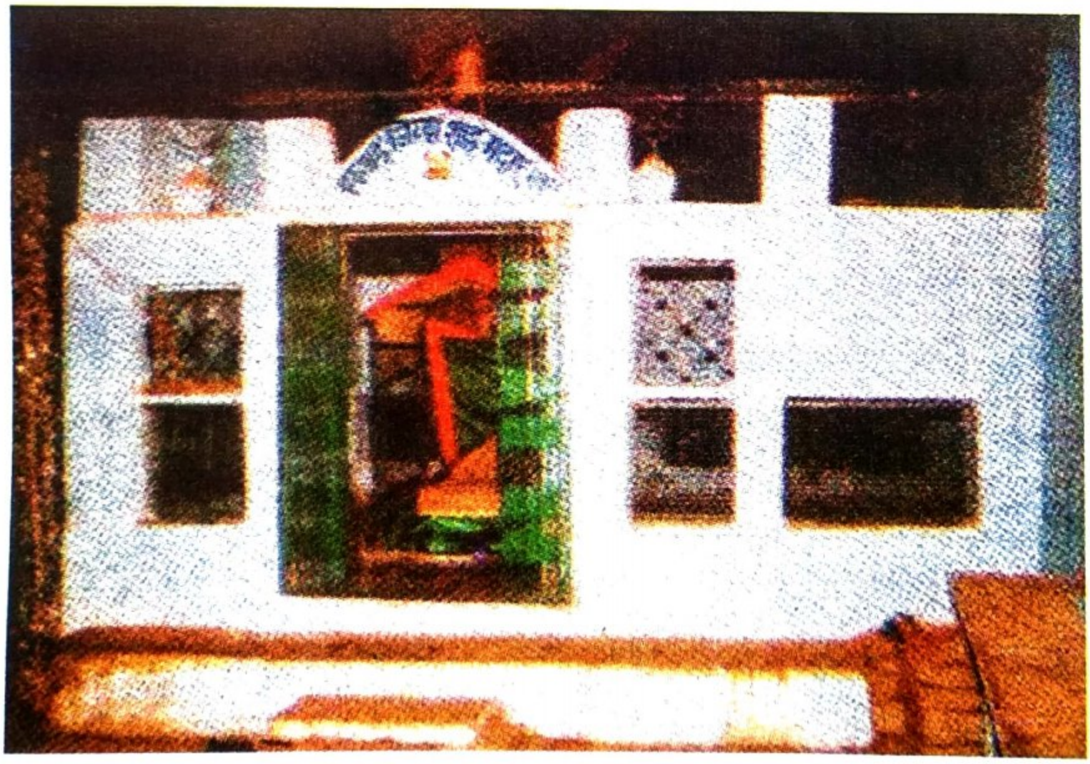

चिल्ला गाह सरकार मदार - चेचट (राजस्थान)

Scanned with CamScanner

मकनपुर शरीफ़ का तारीख़ी मोहर्रम

मकनपुर शरीफ़ का इतिहास लिखा जाए और मोहरर्म शरीफ़ के सम्बन्ध में न लिखा जाए तो इस कस्बे की तारीख़ लिखने में कमी महसूस होगी।

क्यों की जिस बस्ती में ख़ानदाने रिसालत मुआब (स0अ0) का चश्मो चराग़ हज़रत सैय्यद बदीउद्दीन ज़िन्दा शाह मदार (रजि0) की शक्ल में रौशन हो, जिसकी मज़ार मुक़द्दस पर माहे मोहरर्मुल हराम में काली चादर चड़ी रहती हो, जिस बस्ती में प्राचीन समय से आज तक इस माह का चाँद नज़र आते ही कर्बला वालों की याद में फ़र्से अज़ा बिछ जाती हो और हर दरो दिवार से हुसैन–हुसैन की सदायें बुलंन्द होती हों, हर रोज़ अलम के जुलूस निकल कर हुसैनी लश्कर की याद ताज़ा करातें हों जिस बस्ती में इस माह का एहतराम सिर्फ़ मुस्लिम ही नहीं बल्कि हिन्दुं समाज के लोग भी बराबर से करते हों, जहां की ताज़िया दारी का अदब–ओ–एहतराम की मिसाल ख़ुद बेमिसाल हो, जिसकी बुनियाद ख़ुद मदार पाक ने डाली हो, उसको जबानी तौर पर बयान करना या लिख कर

Scanned with CamScanner

कलम बन्द करना आसान ना होगा। ख़ुद हज़रत शाह मदार (रजि0) फ़रमाते हैं।

सतरे क़ुरआन अस्त अबरूए अली
मुसहफ़े बाशद मरा रूए अली
गर ब जन्नत बग़ज़रम राज़ी नेएम
जन्नते बाश मरा कुए अली।।

अनुवाद—कुरआन की सतर मेरे लिए अली की भवें हैं,
अली का चहरा मेरे लिए .कुरआन है,
अगर मुझसे कहा जाये के तुम जन्नत चले जाओ तो मैं राज़ी नहीं हूँगा।
अली की गलियाँ ही मेरे लिए जन्नत हैं।

मैं उसी अली के लाल की शहादत की याद में मनाई जाने वाली इस कस्बे की ताज़ियेदारी के बारें में कुछ इस तरह लिखना चाहूँगा।

उसकी हिम्मत पर अली शेरे .खुदा को नाज़ है
उस नवासे पर मोहम्मद मुस्तफ़ा को नाज़ है
सज्दे तो सबने किये पर उसका नया अन्दाज़ है
उसने वह सज्दा किया जिसपर ख़ुदा को नाज़ है।।

इस बस्ती में ताज़ियादारी मनाने का बहुत ही प्यारा अक़ीदतों से लवरेज़ मन्ज़र दिखायी देता है।

यहॉ के लोग इस मुबारक मॉह की पूरे साल तैयारियाँ करते हैं, यहॉ पर दो तरीक़े के ताज़िये उटाये जाते हैं। दो ताज़िये अधियाई व चौथियाई के नाम से मन्सूब हैं जिसे बड़े ताज़िये भी कहा जाता है जो हज़रत इमाम हुसैन (अ0 स0) के रौज़े पाक़ की शक्ल में इमारती बनायें जाते हैं, ज़िसको बनाने व सजाने के लिए बेहतरीन नक्स–ओ–निगार के काग़ज़ पे जाल वगैरा काटने का पूरे साल काम हुआ करता है।

Scanned with CamScanner

तथा दूसरे ताज़िये जो अहमद शेर वाले, तोपची वाले, बुढ़िया वाले, अन्सारी वाले, राजों वाले वगैरा के नाम से मन्सूब हैं। वह तुरबतदार बनाये जाते हैं।इस बस्ती में लगभग एक दर्जन इमाम चौक हैं, जिन पर मोहर्रम व चेहल्लम में ताज़िये रक्खे जाते हैं।

मोहर्रम शरीफ़ की चॉदरात से पॉच मोहर्रम तक अलम के जुलूस चौकों से व सादाते मकनपुर शरीफ़ के मकानों से उठाये जातें हैं, छः मोहर्रम को दरगाह शरीफ़ के दम्माल ख़ाने से ऊॅट–घोड़ो की मेंहदी, सात मोहर्रम को अधियाकों के चौक से हज़रत इमाम कासिम (अ० स०) की तख्त की मेंहदी और दुल–दुल की सवारी का जुलूस, आठ मोहर्रम को मोहल्ला ख़ॉसाहेबान से मेंहदी का जुलूस निकाला जाता है।

इन सभी जुलूसों का गस्त तय शुदा रास्तों से होकर निकलता है तथा अपनी मुकर्रर जगाहों पे ठण्डे होते हैं। नौ मोहर्रम को शाम में बड़े व तुरबतदार ताज़िये अपने–अपने चौक पर रख दिये जाते हैं, तथा बड़े ताज़िये अपने चौकों से उठा कर दरगाह शरीफ़ व क़िला मोहल्ला होते हुए, और जुलूस में लोग नोहा, सोज़ व सलाम पढ़ते हुए लगभग ग्यारह बजे रात्रि में पंडित सोनी महाराज के नाम से मन्सूब चौक पर आकर खड़े हो जाते हैं तथा तुरबतदार ताज़िये अहमदशेर, तोपची व बुढ़िया वालें भी उसी समय उसी चौक पर कुरैशी मस्जिद के पास आकर खड़े हो जाते हैं। जहॉ पर ढोल व ताशों से मातमी धुन बजाई जाती है, तथा कुछ लोग अखाड़े में तलवार बाज़ी, तथा लाठियों वगैरा के बेहतरीन करतब दिखातें हैं, तथा रात्रि बारह बजे बड़े ताज़िये तुरबतदार ताज़ियों को क्रास देते हैं यानी रास्ता देते हैं। यह कि बड़े ताज़िये मोहल्ला मंण्डई की ओर व तुरबतदार ताज़िये दरगाह शरीफ़ की ओर चले जाते हैं।

इस जगह का मन्ज़र बड़ा दिलकश व देखने के लायक़ होता है, इस जगह पर दस से पन्द्रह हज़ार महिला, पुरूष, बच्चे जिसमें कस्बे के अलावा क्षेत्रीय व दूसरे जनपदों के मुस्लिमों के अलावा हिन्दु समाज के लोग भी शामिल रहते हैं।

तथा इसी रात्रि मे दो बजे मोहल्ला नट का कुआँ पर पुनाः दोनो ताज़ियों का क्रास होता है, यहॉ पर तुरबतदार ताज़िये बड़े ताज़ियों को रास्ता देते हैं, तुरबतदार ताज़िये मोहल्ला तख्ता टोला व बड़े ताज़िये दरगाह शरीफ़ की ओर चले जाते हैं, और सभी ताज़िये अपने चौक पर पहुॅच कर रख दिये जाते हैं।

इसी तरह दस मोहर्रम को सुबहा दस बजे से सभी ताज़िये अपने चौक से उठकर दोपहर बारह बजे दम्माल शरीफ़ में पहुॅचते हैं, जहॉ पर बड़े ताज़िये दक्षिणी फाटक पर व तुरबतदार ताज़िये उत्तरी फाटक पर खडे हो जाते हैं, तथा यहॉ पर एक दूसरे ताज़िये को क्रास दिया जाता है, उसके बाद सांयकालं तीन बजे मोहल्ला मंण्डई में मोतीलाल गुप्ता के घर के पास क्रास होता है तथा यहॉ से बड़े ताज़िये अधियाइकों के चौक पर जाकर ठहर जाते हैं।

तथा तुरबतदार ताज़िये अपने–अपने चौक पर सलामीं देने के बाद ईशन नदी के किनारे बनी कर्बला पर जाकर ठंण्डे किये जाते हैं, यहॉ का नूरानी मन्ज़र देखते ही बनता है, शाम का समय वह नदी का रेतीला किनारा, चारो ओर हरियाली ही हरियाली, हज़ारों लोगों का जन सैलाब हुसैन–हुसैन की वह गूॅजती सदायें व उस ग़मज़दा माहौल में अलविदा का पढ़ा जाना अपने आप में दिल की गहराईयों से अहले बैत–ए–अतहर की मोब्बतों में डूबा हुआ पुरकशिश मन्ज़र होता है, जिसको कलमबन्द किया जाना न मुमकिन है।

इसी तरह बड़े ताज़िये मग़रिब व इशॉ के दरमियान में दम्माल शरीफ़ में ग़म से डूबे हुए माहौल में ठंण्डे किये जाते है, यहाँ पर बडी संख्या में लोग कर्बला वालों की मोहब्बत में ज़र्दा व बिरियानीं का तबर्रुक वितरित करते हैं जिसे हज़ारो लोग बड़ी श्रद्धा के साथ ग्रहण करते हैं।

इन दोनों रोज़ सभी ताज़ियों के जुलूसों के साथ अन्जुमन जाफ़रिया, अन्जुमन हुसैनी, अन्जुमन शेहदाये कर्बला वगैरा छोटी बड़ी एक दर्जन से अधिक अन्जुमन नोहा, सोज़ व सलाम वगैरा पढ़तीं हुई चलतीं हैं।

यहॉ ख़ास बात यह भी है कि नौ मोहर्रम शाम से दस मोहर्रम दोपहर तक दम्माल शरीफ़ व दरगाह शरीफ़ के आस पास लगभग आधा दर्जन लंगर–ए–हुसैनी (भंण्डारे) चलतें है जिसमें चने क़ी दाल व तन्दूरी रोटी सभी आम–ओ–ख़ास मक़ामी व बहारी लोगों को बैठा कर पेट भर खाना खिलाया जाता है। इन्ही भण्डारों में एक भंण्डारा हिन्दु समाज के लोग बहुत ही श्रद्धा के साथ चलाते हैं जिसमें आलू की सब्ज़ी व पूड़ी खिलाई जाती है।

जिस कारण यहॉ की ताज़िया दारी को देखने के लिए क्षेत्रीय व दूसरे जनपदो से आने वालों की संख्या प्रति वर्ष बढ़ती जा रही है। तथा दोनो दिन जिधर जिधर से ताज़ियों का जुलूस गुज़रता है, हर जगह लोग ज़र्दा, बिरयानीं, काफ़ी, चाय, व पानी की सबीले लगा कर तक़सीम करते हैं।

कई तुरबत दार ताज़िये अपने चौको पर ही रहते हैं और गश्त के लिए नहीं उठते हैं उन चौको पर बराबर कुर्आन ख़्वानी हुआ करती है। परन्तुं ताज़ियों के ठण्डा हो जाने के बाद पूरी बस्ती का वह ग़म ज़दा माहौल, वह शामें ग़रीबा की मजलिस का

Scanned with CamScanner

आलम देख कर बस यही कहा जा सकता है–

ऐ बारे इलाहा नोहा सुनाता फिरता
ता रोज़े हश्र अश्क बहाता फिरता
इमदाद न करते कर्बला में हुसैन
इस्लाम तेरा ठोकरा खाता फिरता

और पूरी दुनिया की ख़ानकाहों के सज्जादगानो को दरे मदार पाक से ये पैग़ाम देना अपनी ज़िम्मेदारी समझता हूँ–

ये रस्में ख़ानकाही है ग़मों अन्दोह दिलगीरी।
निकल कर ख़ानकाहों से अदा कर रस्में शब्बीरी।।

आलम देख कर बस यही कहा जा सकता है–

ऐ बारे इलाहा नोहा सुनाता फिरता
ता रोज़े हश्र अश्क बहाता फिरता
इमदाद न करते कर्बला में हुसैन
इस्लाम तेरा ठोकरा खाता फिरता

और पूरी दुनिया की ख़ानकाहों के सज्जादगानो को दरे मदार पाक से ये पैग़ाम देना अपनी ज़िम्मेदारी समझता हूँ–

ये रस्में ख़ानकाही है ग़मों अन्दोह दिलगीरी।
निकल कर ख़ानकाहों से अदा कर रस्में शब्बीरी।।

अन्तिम बात

मोहतर्म, प्यारे–प्यारे पाठकों मैने सम्पूर्ण प्रयास बिलकुल सही–सही किताब के हवाले/सर्वे रिपोर्ट वगैरा को अपनी इस तारीख़ी किताब "मकनपुर शरीफ़ इतिहास के आइने में" दर्ज कर दी हैं/ और मुझे उम्मीद ही नहीं पूरा यकीन है कि इस किताब को पढ़ने के उपरान्त मकनपुर शरीफ़ की वह तारीख़ी हैसियत जिसकों मैं इस किताब कें माध्यम से आप तक पहुचाना चाहता हूँ, वह ब.खूबी आप के दिमाग़ो फिक्र तक पहुॅच गई होगी, मेरी छोटी सी जानकारी को मैने आप तक पहुँचाने का प्रयास किया, क्योकि जो भी तहरीर या बयान किया जाता है वह अपनी जानकारी की बिना पर होता है मैने यह भी प्रयास किया कि "हज़रत सैय्यद बदी उद्दीन अहमद ज़िन्दा शाह मदार (रजि0) की " संक्षेप में सवाने हयात को भी दर्ज कर दिया जाये क्योंकि इसके बिना मकनपुर शरीफ़ की तारीख़ी हैसियत मुकम्मल हो ही नही सकती हैं।

आज समय की ज़रूरत है कि जब पूरे विश्व में कट्टर पंथिता, फ़िरका वराना फ़साद फ़ैले हुए हैं, आतंकवाद का

विषयला फन अमन–ओ–इंसानियत को डसने के लिए फैला हुआ है। ऐसे में हम भारत वासियों की ज़िम्मेदारी और बढ़ जाती है, क्यों की ये सरज़मिने हिन्दुस्तान सूफ़ी–सन्तों की तपो भूमि है। यहाँ से दुनिया को अमन–ओ–इंसानियत का पैग़ाम दिया जाता है। और इस की हिफ़ाज़त के लिए धर्म, जाति, मत, रंग, भेंश, भांषा, सम्प्रदाय आदि के नाम पर हम जुदा न हों बल्कि एक प्लेट फ़ार्म पर आकर भारत की बुलन्दीं को और बुलन्द करें और दुनिया में हमारा सिर सबसे बलन्द रहे।

और आख़िर में आप से इल्तिमास है कि आप दुआओं में मुझ ना चीज़ बन्दे और मेरे वालीदैन को भी याद रक्खे और वेश कीमती मशवरों से नवाज़े।

.ख़ुदा पाक की हम्दो सना के साथ क़लम बन्द करता हूँ।

आप की दुआओं का तालिब

सैय्यद साहिर हुसैन

जाफ़री अल मदारी

मकनपुर शरीफ़, कानपुर नगर

उत्तर–प्रदेश (भारत)

मो0 न0 – 9198666807

Scanned with CamScanner

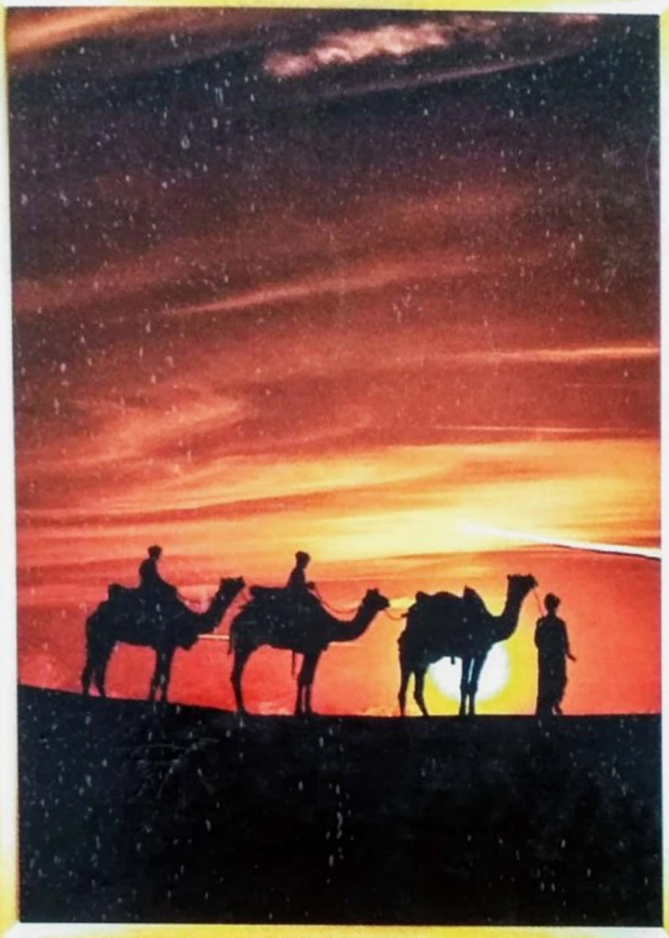

AL-MADAR OFFSET KANPUR
(M) 9616584408

PDF Maked By :AL MADAAR LIBRARY(Telegram)

Scanned with CamScanner